मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम

समाजकार्य स्नातक पाठ्यक्रम (प्रथम वर्ष)

(सामुदायिक नेतृत्व में विशेषज्ञता सहित)

Bachelor of Social Work (First Year)

(With Specialization in Community Leadership)

मॉड्यूल–3

नेतृत्व विकास

(Leadership Development)

प्रायोजक
महिला एवं बाल विकास विभाग, मध्यप्रदेश
आदिम जाति कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश
मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद

संचालन
दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत शिक्षा केन्द्र
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय
चित्रकूट, सतना (म.प्र.) – 485334

स्व–निर्देशित अध्ययन सामग्री
Self -Instructional Learning Material

मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम

मॉड्यूल–3

नेतृत्व विकास
Leadership Development

समाजकार्य स्नातक पाठ्यक्रम (सामुदायिक नेतृत्व)
Bachelor of Social Work (Community Leadership)

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट
जिला–सतना (मध्यप्रदेश) – 485334

मॉड्यूल–3 : नेतृत्व विकास (Leadership Development)

अवधारणा एवं रूपरेखा : संस्करण 2017

बी.आर. नायडू , आई.ए.एस. प्रमुख सचिव
जे.एन. कंसोटिया, आई.ए.एस. प्रमुख सचिव
अशोक शाह, आई.ए.एस. प्रमुख सचिव

प्रेरणा एवं मार्गदर्शन :

प्रो. नरेश चन्द्र गौतम, कुलपति, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट

परामर्श :

डॉ. टी. करुणाकरन, पूर्व कुलपति
जयश्री कियावत, आयुक्त, महिला सशक्तिकरण
उमेश शर्मा, कार्यपालक निदेशक, मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद

लेखक मण्डल :

डॉ टी. करुणाकरन, पूर्व कुलपति
डॉ. अमरजीत सिंह
डॉ. ऋचा मिश्रा
डॉ. मोनिका सिंह
डॉ. वीरेन्द्र कुमार व्यास

वेटिंग मण्डल :

प्रो. एच.एम. मिश्र, प्रशासन अकादमी, भोपाल
प्रो. कपिल देव मिश्र
डॉ. नीलम चौरे
डॉ. ललित कुमार सिंह

रेखांकन :

कु. प्रतिभा देवी, श्री सोवन बनर्जी एवं श्री लिंगेश

मुद्रक एवं प्रकाशक :

ग्रामोदय प्रकाशन के लिए कुलसचिव
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट
जिला–सतना (मध्यप्रदेश) – 485334, दूरभाष– 07670–265411

सम्पर्क :

डॉ. अमरजीत सिंह, निदेशक एवं लिंक अधिकारी
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (मध्यप्रदेश)
ई–मेल– cmcldpcourse@gmail.com, मोबाइल– 9424356841
श्री आर. के. मिश्रा, राज्य सलाहकार (यूनिसेफ) सी.एम.सी.एल.डी.पी.
ई–मेल– rkmishraguna@gmail.com, मोबाइल– 9425171972

आभारः– इस पाठ्यक्रम की अध्ययन सामग्री अनेक स्रोतों, व्यक्तियों के अनुभव और संस्थाओं के प्रकाशनों एवं वेब साइट्स पर उपलब्ध सामग्री के सहयोग से तैयार की गई हैं। पाठ्यक्रम के परामर्शदाताओं का अनुभव और सुझाव भी इसमें शामिल है। सभी के प्रति आभार।

माड्यूल 3 : नेतृत्व विकास

प्रस्तावना

मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत **समाजकार्य स्नातक पाठ्यक्रम (सामुदायिक नेतृत्व)** मध्यप्रदेश शासन की महत्वाकांक्षी पहल है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य हमारे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में ऐसे क्षमतावान युवक एवं युवतियों को तैयार करना है, जिन्हें क्षेत्र के विकास की अच्छी समझ हो और जो क्षेत्र की समस्याओं की पहचान भी कर सकें। समस्याओं के निदान के लिए निर्णायक पहल कर सकें। आत्मविश्वास और ऊर्जा से ओतप्रोत नौजवानों की ऐसी पीढ़ी तैयार हो जो समाज की समस्याओं के समाधान के लिए केवल सरकारी प्रयासों पर निर्भर न हो, बल्कि समुदाय के परिश्रम और पुरुषार्थ से ग्राम की या अपने आस–पास की परिस्थितियों को बदलने के लिए सकारात्मक पहल कर सकें। यह कार्य चुनौती भरा है, किन्तु असम्भव नहीं है। यथार्थ में अपने क्षेत्र के विकास में आपके योगदान से ही **स्वर्णिम मध्यप्रदेश** का स्वप्न साकार हो सकेगा। इसी की पहली कड़ी के रूप में यह पाठ्यक्रम आपके सम्मुख प्रस्तुत है, जिसमें परिवर्तन और विकास के दूत बनाने के लिए आपको सैद्धान्तिक और व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान किया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से प्रयास किया गया है कि आप ग्राम के विकास के प्रयासों को वैज्ञानिक स्वरूप दे सकें। आप जो भी सामुदायिक कार्य करें वह स्थायी हो, सबके सहयोग से हो और सबके विकास में सहयोगी हो। इस दृष्टि से समुदाय विकास के कुछ महत्वपूर्ण आयामों को इस पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में आपके ज्ञानवर्धन एवं प्रशिक्षण हेतु समायोजित किया गया है।

सैद्धांतिक विषयों की कड़ी में यह तीसरा प्रश्नपत्र है। शीर्षक है – **नेतृत्व विकास।** इस खण्ड में हम **नेतृत्व विकास** से संबंधित विविध पहलुओं की जानकारी देंगे।

नेतृत्व केवल प्रकृति प्रदत्त या नैसर्गिक गुण नहीं है। परामर्श, प्रशिक्षण और प्रयास से इस दिशा में विशेष योग्यता प्राप्त की जा सकती है। हमने इस पाठ्यक्रम में नेतृत्व विकास के विविध आयामों को श्रृंखलाबद्ध रूप में आपके सम्मुख प्रस्तुत किया है। उद्देश्य है कि इससे आपकी जानकारी बढ़े। तकनीकी पहलुओं से आप परिचित हों। अपने पर्यावरण और परिवेश में लोगों के सहयोग से इस जानकारी का उपयोग कर समस्याओं के समाधान की सकारात्मक पहल कर सकें। विश्वास है कि जानकारी और प्रशिक्षण आपके लिए उपयोगी और प्रभावी सिद्ध होगा। आइये! शुभकामनाओं के साथ पठन–पाठन की इस रचनात्मक प्रक्रिया के साझीदार बनते हैं।

3.0 विषय प्रवेश (Introduction)

माड्यूल 2 में आप जान चुके हैं कि विकास क्या है। माड्यूल 3 में हम नेतृत्व के विविध आयामों के विषय में जानेंगे। मध्यप्रदेश के विकास में अनेक नेतृत्वकर्त्ताओं, स्वयंसेवी संगठनों शासकीय अधिकारियों और विकास कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस इकाई में हम नेतृत्व की दृष्टि से मध्यप्रदेश के सन्दर्भ में कुछ प्रेरक उदाहरणों को प्रस्तुत कर रहे हैं।

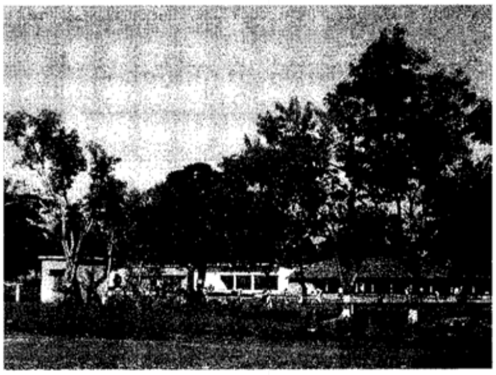
NOTES

3.0.1 विकास के लिए नेतृत्व : मध्यप्रदेश के प्रेरक उदाहरण

आइये मध्यप्रदेश के विकास में विविध आयामों पर नेतृत्व प्रदान करने वाले सफल नेतृत्वकर्ताओं की सच्ची कहानियों से प्रेरणा पायें।

सुख समृद्धि की छाँव में, जो घर में वो गाँव में

मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले का एक गाँव है मोहद। यह गाँव भी भारत के अन्य गाँवों के समान गंदगी, जड़ता एवं अभाव से ग्रस्त था। आज 450 परिवारों वाला यह गाँव हरा–भरा, साफ–सुथरा एवं विकास के लिए अनुकरणीय उदाहरण बन गया है। इसे विकसित करने के सपने को धरातल पर उतारने का कार्य किया श्री सुरेन्द्र सिंह चौहान ने। वे 1969 से 1994 तक इस गाँव के निर्विरोध सरपंच रहे।



चित्र **3.1** स्वच्छ एवं हरा भरा मोहद गाँव

उनका कहना है कि मुझे पहले गाँव के विकास के लिये क्या करना चाहिए, कोई कल्पना नहीं थी। किन्तु हमें करना था। हमने विचार किया कि गाँव भी एक बड़ा परिवार है। अतः हम जो कुछ अपने घर, परिवार के विकास के लिए चाहते हैं, वही गाँव में भी करें। हम अपने घर में परिवार के सदस्यों के लिए संस्कार, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता, सौहार्द, समृद्धि एवं सम्पन्नता चाहते हैं, उसी प्रकार गाँव के विकास के लिए भी यह सबके लिए प्रयास आवश्यक है।

सबसे पहले उन्होंने गाँव के सभी लोगों की बैठक करके सबके सहयोग की अपील की। गाँव की गन्दगी को दूर करने के लिए प्रत्येक घर में गोबर गैस

NOTES

संयंत्र के निर्माण पर बल दिया। गोबर गैस के निर्माण से लकड़ी काटने की जरूरत नहीं रही। यह गाँव ऊर्जा गाँव बन गया।

गाँव में संस्कार आधारित विकास के लिए उन्होंने विद्यालय को केन्द्रित किया। विद्यालय में सबके घर से बच्चे जाते थे। सामान्य शिक्षा के लिए संस्कार निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास से संबंधित प्रतिदिन कुछ अलग से अभ्यास जैसे– प्रार्थना, श्रमदान, वाद–विवाद एवं बौद्धिक गतिविधियाँ प्रारंभ की गईं। इस प्रकार विद्यालय पूरे गाँव को संस्कारित करने का प्रभावी केन्द्र बन गया।



चित्र **3.2** सुरेन्द्र सिंह चौहान

उनके प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि लकड़ी न कटने के कारण चारों तरफ से गाँव हरा–भरा हो गया। गोबर गैस से प्राप्त खाद से उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि हुई, साथ ही संस्कार आधारित शिक्षा के कारण समृद्धि के साथ आने वाले दुर्गुणों पर नियंत्रण स्थापित हुआ।

महिला सशक्तिकरण और चेतना विकास की वाहक–सखी मंच

देवास जिले के खातेगाँव तहसील की साक्‍या ग्राम पंचायत के गाँव नयापुर (बजगाँव) में महिलाओं के सशक्तिकरण और चेतना विकास के लिए गाँव की महिलाओं ने सखी मंच बनाया। इसके माध्यम से वे गाँव की समस्याओं जैसे बिजली, पानी, स्वास्थ्य, शौचालय, राशन की दुकान, स्कूल, आँगनबाड़ी का संचालन तथा अन्य सार्वजनिक सुविधाओं की प्रभावी उपलब्धियों के लिए कार्यरत हैं। उनके प्रयासों से वर्तमान में 100 घरों में शौचालय का निर्माण हो चुका है। वर्ष 2008 के पंचायत चुनाव में इस गाँव से पंच और सरपंच के उम्मीदवार तय करने में सखी मंच की नेता पचास वर्षीय कलाबाई की महत्वपूर्ण भूमिका रही। चुनाव के बाद नये सरपंच के कार्यकाल में गाँव में चार सी. सी. रोड बनाये गये। झिरनिया गाँव का प्राथमिक विद्यालय तथा माध्यमिक विद्यालय बजगाँव में खुलवाया गया तथा दोनों गाँवों में विद्यालय भवन का निर्माण भी करवाया गया।



चित्र **3.3** सखी मंच की महिलाएं बैठक करते हुए

अपने गाँव में राशन की दुकान की शुरूआत भी उन्होंने करवाई। गाँव की समस्याओं के लिए सक्रिय काम करने वाले सखी मंच के उम्मीदवारों ने पंचायत चुनाव में सफलता प्राप्त की। कलाबाई के प्रयासों से महिलाओं ने दबाव बनाकर ग्राम सभा की बैठकें भी नियमित कराईं। इनके प्रयासों से ग्राम पंचायत के द्वारा स्कूल भवनों का निर्माण, सामाजिक वृद्धावस्था पेंशन सहित पंचायत के सभी कार्यक्रम सुचारू रूप से सम्पन्न होने लगे। महिलाओं ने संगठित होकर अपने गाँव में पूर्ण शराब बन्दी लागू कराने में सफलता पाई। कलाबाई के कार्यों के परिणाम स्वरूप महिला बाल विकास विभाग, उज्जैन की ओर से 12 फरवरी 2014 को उनके संकल्प, साहस और संघर्ष के लिए प्रशंसापत्र एवं ट्राफी प्रदान कर सम्मानित किया गया। कलाबाई के कार्य को सराहते हुए इंदौर के यूनिवर्सल सोलिडेरिटी मूवमेंट ने 7 मार्च 2014 को दस हजार रूपये का पुरस्कार प्रदान किया। श्रीमती कलाबाई ने अपने पुरस्कार की राशि सखी मंच के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए दान में दे दी। सखी मंच के कार्यों से महिलाओं के बीच पर्याप्त जागरूकता आई है। सखी मंच के इन्हीं कार्यों से प्रभावित होकर गाँव की नर्बदी बाई ने अपनी जमीन का एक हिस्सा इस सार्वजनिक कार्य के लिए दान में दे दिया।

NOTES

सबका साथ, सबका विश्वास–आजीविका संग सतत विकास

सिवनी जिले के छपारा विकास खण्ड के सोठावाड़ी गाँव में 35 गोंड परिवार निवास करते हैं। सिंचाई की सुविधाओं के अभाव में यहाँ खेती लाभदायक नहीं है। इस कारण आजीविका के लिए लघु वनोपज पर निर्भरता बहुत अधिक है। अचार के पेड़ (जिससे चिरौंजी निकलती है) पर्याप्त मात्रा में होने के कारण ये ग्रामवासियों की आजीविका का एक प्रमुख स्रोत हैं।

गरीबी के कारण व्यापारियों के कर्ज में दबे ग्रामवासी गर्मी के मौसम में एकत्रित की गई अपनी चिरौंजी व्यापारियों को औने–पौने दाम में बेचने के लिए मजबूर थे। जिसके कारण उनकी आमदनी बहुत कम थी। व्यापारियों का कर्ज उतारने के चक्कर में ग्रामवासी अचार को पकने के पहले ही तोड़कर बेचने के दुष्चक्र में फँसे थे। अधिक से अधिक अचार की गुठली इकट्ठा करने के लिए कई बार वे वृक्षों की शाखाएँ भी काट दिया करते थे। इससे अचार के वृक्षों में कमी आने लगी। सन् 2002–03 में सोठावाड़ी गाँव के साहब सिंह भलावी के नेतृत्व में वन विभाग के सहयोग से गाँववालों ने तय किया कि कच्चे अचार तोड़ने से जो नुकसान होता है, उससे बचने के लिए अब अचार पकने पर ही तोड़ेंगे। इस बात को लेकर उन्होंने अपने आस–पास के गाँवों में भी सहमति बनाई। आस–पास के गाँव की सहमति बनने के बाद उन्होंने अचार पकने पर ही इकट्ठा करने का फैसला किया। इससे उनके अचार की गुणवत्ता बनी और

NOTES

आमदनी बढ़ने लगी। पहले वे केवल अचार की गुठली व्यापरियों को बेचते थे, परन्तु आमदनी बढ़ने के बाद उन्होंने अचार की गुठली से चिरौंजी निकालने की मशीन भी गाँव में लगा ली। इसके फलस्वरूप उनकी आमदनी चार–पाँच गुना बढ़ गई। साथ ही अचार पकने पर ही इकट्ठा करने के कारण कुछ बीज जमीन में पड़े रहने से अचार के नये पौधे उगने लगे। पाँच–सात वर्ष के बाद उस इलाके में अचार के नये वृक्ष तैयार हो गये।

अक्सर माना जाता है कि आजीविका और विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का विनाश जरूरी है। परन्तु साहब सिंह भलावी के नेतृत्व में संगठित होकर गाँववालों ने यह साबित कर दिया कि संवर्द्धन और विकास साथ–साथ हो सकता है। इस प्रकार आजीविका के साथ–साथ सतत विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ।

महिलाओं ने हिम्मत जुटाई, मैला ढोने से मुक्ति पाई

यह कैसी विडम्बना है कि आधुनिकता और विकास की कई मंजिलें पार करने के बाद भी सदियों से चली आ रही सिर पर मैला ढोने की अमानवीय प्रथा आज भी पूरी तरह से समाप्त नहीं हो पाई है! कानूनी प्रावधान होने के बावजूद भी समाज के दलित वर्ग को सदियों से इस बात के लिए मजबूर किया जाता रहा है कि वे मानव मल को अपने सिर पर ढोयें। जब कभी इन दलितों ने सिर पर मैला ढोने से मना किया तब–तब उन्हें तरह–तरह से प्रताड़ित किया गया। वैसे तो पहले ही सार्वजनिक कुओं और हैण्डपम्पों से पानी लेने की मनाही, होटलों में उनके प्रवेश को वर्जित करना, गाँव की दुकानों से सामान न मिलने देना सहित अनेक तरह के सामाजिक बहिष्कार एवं अपमानजनक प्रताड़ना आज भी जारी है। मैला ढोने से मना करने वालों को अमन शांति से रहने नहीं दिया जाता। मैला ढोने का यह काम मुख्यतः महिलाओं के द्वारा किया जाता है, जिन्हें शादी के बाद विरासत में उनकी सास के द्वारा बांस की टोकरी इस काम के लिए सौंपी जाती है। इस घिनौने काम



चित्र **3.4** **मैला मुक्ति यात्रा**

के बदले में उन्हें केवल बासी रोटियाँ और न्यूनतम् राशि ही दी जाती है। पीढ़ी–दर–पीढ़ी यह काम करना उनकी मजबूरी बन गयी है। ऐसे माहौल में मन्दसौर जिले के धारियाखेड़ी गाँव की लाली बाई ने हिम्मत जुटाकर इस काम का बहिष्कार किया। उन्होंने हिम्मत करके यह कार्य छोड़ कर स्लेट–पेंसिल का कारखाना तथा खेतों में मजदूरी करके जीवन–यापन की शुरूआत की। लाली बाई ने स्वयं तो इस कार्य को छोड़ा ही साथ–ही–साथ अपने समाज के अन्य सदस्यों को संगठित कर इस कार्य से मुक्ति दिलाई। वर्ष 2002 में लाली बाई राष्ट्रीय गरिमा अभियान के सामाजिक कार्यकर्ताओं से मिलीं। उनके द्वारा बताये गये कानूनी प्रावधानों और सामाजिक समानता की बात सुनकर उन्होंने अपने–आप को इस कार्य से मुक्त करने की घोषणा की। जब लाली बाई ने इस घिनौने कार्य को छोड़ा तो उन्हें तरह–तरह से धमकाया गया। उन्हें सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा बुलाई गई बैठकों में जाने से रोका गया। परन्तु लाली बाई ने हिम्मत नहीं हारी और अपनी मुहिम जारी रखी। गाँव के इस मिशन में दलितों को मुर्दा जलाने की अनुमति नहीं थी। लाली बाई ने अपने समुदाय के लगभग 100 लोगों को इकट्ठा कर श्मशान घाट में दलित परिवारों को भी मुर्दा जलाने का हक प्राप्त किया। लाली बाई के सतत प्रयासों से 163 महिलाओं ने सिर पर मैला ढोने के काम से मुक्ति पाई। वर्ष 2012 के नवम्बर माह में लाली बाई ने 10 हजार महिलाओं को एकत्रित कर भोपाल से नई दिल्ली तक राष्ट्रीय गरिमा अभियान द्वारा आयोजित मैला मुक्ति यात्रा में भाग लिया, जिसमें 50 हजार से भी अधिक लोग शामिल हुये। दिल्ली में उन्होंने कानून बनाने वालों के यहाँ दस्तक देकर 2013 में मैला ढोने का काम छोड़ने वालों के लिए आर्थिक सहायता के प्रावधान हेतु कानून बनवाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।



चित्र **3.5** लाली बाई

NOTES

NOTES

तिरंगा मेरी शान, फहराना पहचान

पुरावस की सरपंच बादामी बाई चार साल के संघर्ष के बाद अपने कार्यकाल के अंतिम दिनों में अपनी पंचायत के स्कूल में स्वतंत्रता दिवस पर झंडा फहरा पाई। दलित महिला सरपंच पूरी गरिमा के साथ ध्वजारोहण कर सके, इसके लिए प्रशासन व पुलिस के अफसर तो मौजूद थे ही, साथ ही स्थानीय और राष्ट्रीय मीडिया के प्रतिनिधि भी मौजूद थे। 2009–10 में हुए चुनाव में बादामी देवी पुरावस पंचायत की सरपंच बनी। इसके बाद से ही उन्हें गाँव में ध्वजारोहण नहीं करने दिया जा रहा था। इसके लिए बदामी देवी ने मानवाधिकार आयोग से लेकर मुख्यमंत्री कार्यालय तक ध्वजारोहण करने की अपील की। इसके बाद आयोग ने प्रशासन को नोटिस जारी किया और मुख्यमंत्री ने भी बादामी देवी से ही ध्वजारोहण कराने के लिए प्रशासन को निर्देश दिए । इसके बाद वे अपने कार्यकाल के अंतिम दिनों में पंचायत में बने स्कूल में ध्वजारोहण कर पाईं।



चित्र **3.6 बादामी बाई मुरैना**

इससे पता चलता है कि कुछ सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति पाने के लिए बादामी बाई जैसे सैकड़ों लोगों को जोखिम उठाना पड़ता है, संघर्ष करना पड़ता है, तभी बदलाव आ सकता है।

☆☆☆

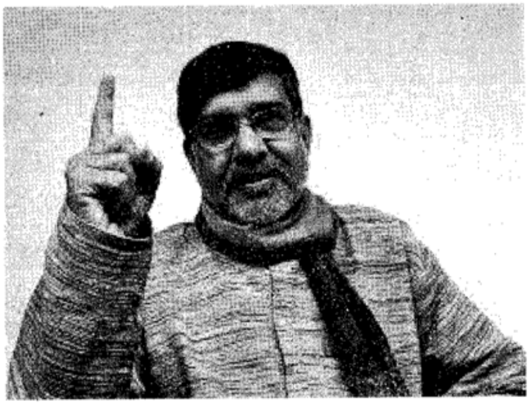
सामुदायिक नेतृत्व के द्वारा सामाजिक समस्याओं के निराकरण के लिए किये गये इन प्रयासों से आप समझ गये होंगे कि समुदाय शक्तिशाली होता है, किन्तु इस शक्ति की पहचान प्रायः समुदाय को नहीं होती है। इसका अहसास कराने के लिए उचित सामुदायिक नेतृत्व महत्वपूर्ण होता है। एक नेता पहल करके समुदाय के सभी सदस्यों को साथ लेकर कठिन से कठिन समस्या पर विजय प्राप्त कर लेता है।

उक्त प्रसंगों का चयन करते समय जान–बूझकर गाँव को लिया गया है, जिससे इन समस्याओं और उनके निराकरण के प्रयासों को आप अपने आस–पास की परिस्थितियों से भी जोड़कर देख सकें।

NOTES

3.0.2 स्थानीय संघर्षों से बनता है विश्वस्तरीय अभियान : कैलाश सत्यार्थी

मध्यप्रदेश के विकास के मार्ग में अनेक चुनौतियाँ हैं जिसमें से एक बाल श्रम भी है। जिसके शिकार मासूम बच्चे स्तरीय जीवन से तो वंचित होते ही हैं, पढ़ने लिखने का अधिकार खोकर भविष्य के अवसर भी गवाँ देते हैं। बाल श्रम के खिलाफ आवाज उठाने वाले कई स्वयंसेवी संस्थानों के संयुक्त नेतृत्व के कारण वैश्विक स्तर पर जागृति आई है और इस अभियान का प्रतीक मध्यप्रदेश बन गया है। मध्यप्रदेश में जन्में कैलाश सत्यार्थी को बाल श्रम के विरुद्ध सम्पूर्ण विश्व में चेतना जागृत करने और निर्णायक अभियानों का नेतृत्व कर अतुलनीय योगदान देने के लिए 2014 के नोबेल पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। बाल श्रम के खिलाफ ढाई दशक से काम कर रहे कैलाश सत्यार्थी नोबेल पाने वाले नौवें भारतीय हैं।



चित्र **3.7** मध्यप्रदेश में जन्मे बाल श्रम के विरूद्ध लडनेवाले कैलाश सत्यार्थी 2014 के नोबल पुरूस्कार के विजेता बने।

कैलाश सत्यार्थी का जन्म मध्यप्रदेश के विदिशा जिले में 11 जनवरी 1954 को हुआ। कैलाश ने कैरियर की शुरुआत इलेक्ट्रानिक इंजीनियर के रूप में की थी। बाद में नौकरी छोड़कर उन्होंने बच्चों के अधिकारों के लिए संघर्ष करना शुरु किया।

सत्यार्थी ने बाल श्रम को मानवाधिकार का उलंघन मानते हुए उसके विरूद्ध 1980 में 'बचपन बचाओ आंदोलन' चलाया। इस संघर्ष को उन्होंने 'शिक्षा के अधिकार' से भी जोड़ा और बाल श्रम से मुक्त किये गये बच्चों के लिए सही शिक्षा की व्यवस्था सुनिश्चित की।

सत्यार्थी के प्रयत्नों से करीब 80,000 बच्चों को बंधुआ मजदूर की स्थिति से मुक्ति प्राप्त हुई और उनके विकास के लिए वैकल्पिक व्यवस्थायें बनी।

NOTES



चित्र **3.8 बाल श्रमिकः बदहाल जिन्दगी**

वैश्विक स्तर पर जागृति लाने के लिए कैलाश सत्यार्थी ने कई कदम उठाएः

- उन्होंने 'बाल श्रम के विरूद्ध वैश्विक पदयात्रा (Global March Against Child Labour) का आयोजन किया।
- सत्यार्थी इंटरनेशनल सेंटर ऑन चाइल्ड, लेबर एंड एजुकेशन से भी जुड़े हैं। यह संगठन कई समाजिक संगठनों, अध्यापकों और ट्रेड यूनियनों का एक समूह है, जो शिक्षा के प्रसार के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चलता है।
- कैलाश ने 'रगमार्क' की स्थापना भी की है, जिसे 'गुडवीव' (Good Weave) के नाम से भी जाना जाता है। रगमार्क ने यूरोप और अमेरिका में 1980 और 1990 के दशक में एक जागरुकता अभियान चलाया था, जिसका लक्ष्य उन उत्पादों के उपभोग को हतोत्साहित करना था, जिसे निर्मित करने में बाल श्रम का इस्तेमाल किया जाता है।
- सत्यार्थी यूनेस्को की उस समिति का भी हिस्सा रहे हैं, जिसे सभी को शिक्षा के अधिकार की देखरेख के लिए बनाया गया। वह ग्लोबल पार्टनर फॉर एजुकेशन (Global Partner For Education) के सदस्य भी हैं।
- कैलाश सत्यार्थी का कई अंतर्राष्ट्रीय कानूनों और संधियों के निर्माण में भी योगदान है।

3.0.3 प्रतिबद्ध नेतृत्व से सकारात्मक परिवर्तन के अंतर्राष्ट्रीय उदाहरण :

NOTES

जान की बाजी लगाकर स्त्री शिक्षा के लिए संघर्ष–मलाला युसुफजई

मलाला युसुफजई (जन्म 12 जुलाई 1997) स्त्री शिक्षा के लिए आतंकवाद के खिलाफ न झुकने के लिए अपनी जान की बाजी लगाकर पूरे विश्व में संघर्ष और सकारात्मकता का एक प्रतीक बन गयी हैं। मलाला का जन्म पाकिस्तान के खैबर–पख्तूनख्वा प्रान्त के स्वात जिले में स्थित मिंगोरा शहर में हुआ।

मिंगोरा पर तालिबान ने मार्च 2009 से मई 2009 तक कब्जा कर रखा था। 11 साल की उम्र में स्थानीय परिस्थितियों से प्रभावित होकर मलाला ने डायरी लिखनी शुरू की। वर्ष 2009 में छद्म नाम गुल मकई के तहत बीबीसी ऊर्दू के लिए डायरी लिख मलाला पहली बार दुनिया की नजर में आईं। जिसमें उसने स्वात में तालिबान के कुकृत्यों का वर्णन किया था और अपने दर्द को डायरी में बयां किया।

स्वात घाटी में तालिंबान ने लड़कियों के स्कूल जाने पर पाबंदी लगा दी थी। लड़कियों को टीवी कार्यक्रम देखने की भी मनाही थी। मलाला भी इसकी शिकार हुई। लेकिन अपनी डायरी के माध्यम से मलाला ने क्षेत्र के लोगों को न सिर्फ जागरुक किया बल्कि तालिबान के खिलाफ खड़ा भी किया। जिससे बौखलाये तालिबानियों ने मलाला को अपना निशाना बनाया। वर्ष 2009 में तालिबान ने फतवा जारी किया कि 15 जनवरी के बाद एक भी लड़की स्कूल नहीं जाएगी। यदि कोई इस फतवे को मानने से इंकार करता है तो अपनी मौत के लिए वह खुद जिम्मेदार होगा।

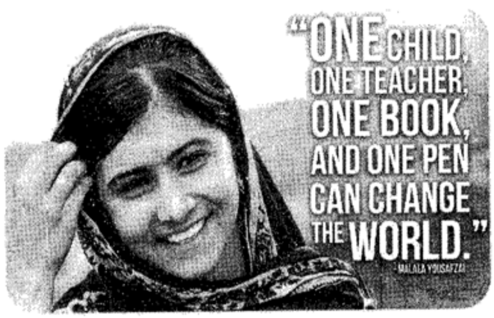
मलाला पर तालीबानी धमकी का कोई असर नहीं हुआ और वह अपने कार्यों से स्त्री–शिक्षा को प्रोत्साहित करने और अपनी कलम से तालीबानियों की अमानवीय नीतियों को विश्व के सामने रखने का काम निर्भीकता से करती रही। इस रचनात्मक संघर्ष के दमन के लिए अक्टूबर 2012 में, स्कूल से लौटते वक्त मलाला पर आतंकियों ने हमला किया जिसमें वह बुरी तरह घायल हो गई। बाद में इलाज के लिए उन्हें ब्रिटेन ले जाया गया जहाँ डॉक्टरों के अथक प्रयासों के बाद उन्हें बचा लिया गया।

मलाला को मिले पुरस्कार और सम्मान :

स्त्री शिक्षा के प्रति असाधारण प्रतिबद्धता के लिए मलाला को राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक मंचों से प्रशंसा पुरस्कार और सम्मान मिले जिनमें से कुछ प्रमुख हैं–पाकिस्तान का राष्ट्रीय युवा शांति पुरस्कार (2011), अंतर्राष्ट्रीय बाल शांति पुरस्कार (2013), साखारफ (सखारोव) पुरस्कार (2013), मैक्सिको का

समानता पुरस्कार (2013) और संयुक्त राष्ट्र का 2013 मानवाधिकार सम्मान इत्यादि।

NOTES

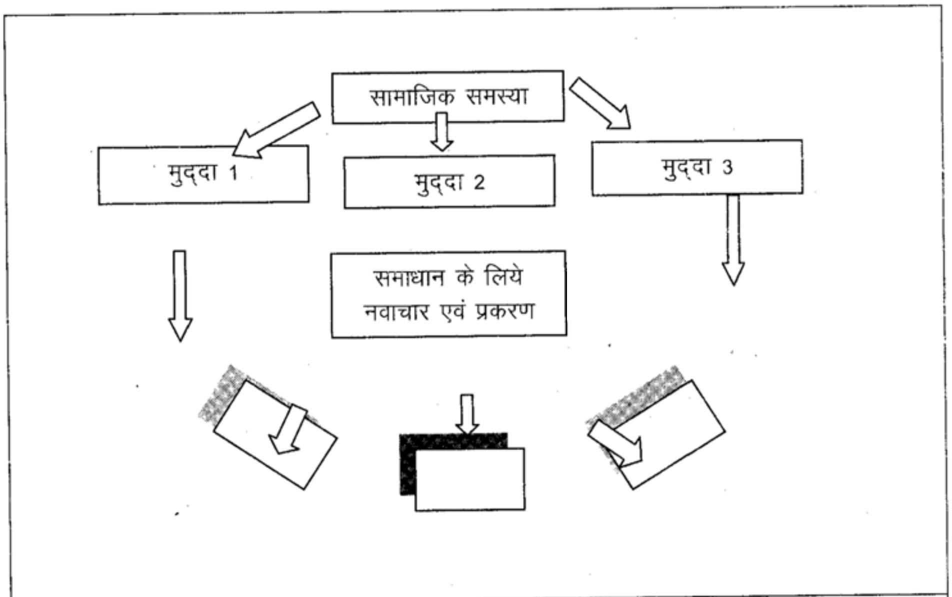


चित्र **3.9** 2014 के नोबल पुरूस्कार विजेता मलाला।



जान की बाजी लगाकर शिक्षा के लिए संघर्ष

लेकिन इन सब पुरस्कारों और सम्मानों की श्रृंखला में सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण था 2014 में भारत के कैलास सत्यार्थी के साथ नोबेल शांती पुरस्कार से सम्मानित होना। नोबल पुरस्कार प्रदान किये जाने का समाचार पाकर मलाला ने इच्छा व्यक्त की कि उनके और कैलाश सत्यार्थी जी को जब नोबल पुरस्कार प्रदान किया जाये तो पुरस्कार वितरण समारोह में भारत और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री साथ–साथ हिस्सेदारी करें। यह भावना मलाला के विश्वशांति के दर्शन को अभिव्यक्त करती है।



चित्र **3.10 सामाजिक समस्याओं का समाधान**

इन उदाहरणों से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते है कि समाज की समस्याओं के एक से ज्यादा पक्ष या आयाम हो सकते हैं (जैसे आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, नैतिक आदि)। कुछ नेता ऐसे उभरते हैं, जो इन सबको एक साथ लेकर चलते हैं, जैसे गांधीजी और कुछ ऐसे भी हैं जो किसी एक आयाम पर अपनी सारी ऊर्जा का विनियोग करते हैं जैसे–कैलास सत्यार्थी।

NOTES

एकांगी हो या सर्वांगीण अभियान तभी सफल होता है, जब हजारों क्षेत्रीय नेताओं के प्रयत्न से जमीनी स्तर पर परिवर्तन का लक्ष्य हासिल हो।

इस इकाई में हमने मध्य प्रदेश के स्थानीय प्रेरक नेतृत्व से लेकर कैलास सत्यार्थी के अन्तर्राष्ट्रीय अभियानों की सफल झांकी को आपके सामने इस उद्देश्य से प्रस्तुत किया कि आप समझ सकें कि दृढ़ इच्छाशक्ति से संघर्ष के लिए उठाया गया कदम सकारात्मक परिवर्तन लाता है। जरूरत होती है समुदाय में एक नेतृत्व के उभरने की और उसके द्वारा लोगों को साथ लेकर मंजिल तक पहुंचने की। विश्वास है कि इन सच्चे और प्रभावी प्रसंगों से प्रेरित होकर आप अपने क्षेत्र की दशा और दिशा बदलने का संकल्प लेंगे।

हमने जाना :

- मध्यप्रदेश को विकास के रास्ते पर आगे बढ़ाने वाले नेतृत्वकर्ताओं में से कुछ के बारे में।
- विकास के लिए सभी नेतृत्वकर्ताओं ने अलग–अलग आयामों का चयन किया। उदाहरण के लिए सुरेन्द्र सिंह चौहान ने शिक्षा, स्वच्छता एवं हरियाली पर ज़ोर दिया। तो अन्य ने किन्हीं दूसरे आयामों पर।
- सभी नेताओं ने स्थिति में बदलाव के लिए नए रास्ते की खोज की, जो उस समय तो प्रचलित नहीं था पर संभव था। इसे नवाचार कहते हैं।
- इन सामुदायिक नेताओं ने आसपास की जनता से जुड़कर, उनको साथ लेकर कार्य किये।
- हमने यह भी जाना कि सामाजिक नेताओं को कभी–कभी छोटे–छोटे भौगोलिक क्षेत्रों में छोटे–छोटे समूहों के बीच काम शुरू करना पड़ता है। इस कारण समस्याओं को समझना, नवाचारों को ढूँढ़ना तथा स्थानीय लोक–नेतृत्व को चिन्हित करना आसान हो जाता है। ऐसे प्रयोगों को दूसरे जगहों पर दोहराना भी आसान हो जाता है।
- जब कई जगहों पर यह परिवर्तन का कार्य शुरू होता है, तो वह एक अभियान का रूप लेता है। अभियान का जो नेता है, उसकी तैयारी निचले स्तर पर होती है और अंतिम सफलता सैकड़ों स्थानीय नेताओं

एवं केन्द्रीय नेता के सामन्जस्य के द्वारा ही प्राप्त होती है। इस सिद्धांत को कैलाश सत्यार्थी और मलाला के प्रेरक प्रसंगों से आसानी से समझा जा सकता है।

NOTES

कठिन शब्दों के अर्थ

नेता : एक समूह या संस्था को मार्ग दिखाकर लक्ष्य की ओर ले जानेवाला व्यक्ति।

सामजिक नेता : जब हितग्राही एक समूह होता है।

अभियान : अपने समाजिक राजनीतिक लक्ष्यों को पाने के लिए संबंधित सभी सदस्यो को एकत्रित होकर प्रयास करने की प्रक्रिया।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. सही जोड़ी मिलाइये–

कम	नेतृत्वकर्ताओं के नाम	महत्वपूर्ण योगदान का क्षेत्र
1.	सुरेन्द्र सिंह चौहान	मैला ढोने से मुक्ति
2.	लाली बाई	तिरंगा फहराने का हक
3.	बादामी बाई	गॉव की स्वच्छता
4.	सखी मंच की सदस्य	विकास एवं वनों का संवर्धन
5.	साहिब सिंह भलावी	ग्राम स्वराज

2. अपने आसपास के क्षेत्र में भिन्न–भिन्न सामुदायिक मुद्दों पर नेतृत्व देने वाले पांच व्यक्तियों की सूची बनाइये।

3. उचित नेतृत्व न होने के कारण आपके अपने क्षेत्र में ऐसी कौन–कौनसी समस्याएँ हैं जिनका हल नहीं हो पा रहा है।

4. अपने क्षेत्र की समस्याओं की सूची बनाइये। ये समस्याएँ कितने समय से क्षेत्र में विद्यमान हैं।

5. अपने आस–पास के वातावरण को साफ–सुथरा रखने के लिए पाँच सुझाव दीजिये।

6. सत्यार्थी एवं मलाला के प्रयत्न किस प्रकार बच्चों के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है इस पर अपने विचार लिखिए।

NOTES

अधिक जानकारी के लिए संदर्भ सूत्र :

1. सर्वे सन्तु सुखिनः (भाग–1 एवं 2) वीडियो में विकास की कहानियाँ इन्टरनेट पर देखें– प्रस्तुति के.एन. गोविन्दाचार्य।
2. इन्टरनेट पर खोज करके देश–विदेश के सामुदायिक नेतृत्वकर्ताओं की सफल गाथाओं को पढ़िये और उनका संकलन कीजिये।
3. सोशल नेटवर्किंग साइट जैसे– फेसबुक, ट्विटर, ऑर्कुट पर महत्वपूर्ण सामुदायिक नेतृत्वकर्ताओं के कोटेशन संग्रह कीजिये।
4. 'वर्धा की गाँधी गंगा' (2013) – यह कनकमल गाँधी द्वारा लिखी गई अद्भुत किताब है– जिसमें गांधी जी के साथ काम करनेवाले 100 से भी ज्यादा व्यक्तियों की जीवनी बहुत सुन्दर तरीके से वर्णित है।
5. बापू कूटि (2000), यह प्रसिद्ध लेखिका रजनी बख्शी द्वारा लिखी गई पुस्तक है, जिसे Penguin प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। इसमें विभिन्न व्यावसायिक विशेषता वाले 6 व्यक्तियों (अरूणा राय, टी करूणाकरन, बाबा आम्टे, मेधा पाटकर, आदि) के सामाजिक कार्यों की कहानी है।
6. PROPHETS OF NEW INDIA- Twenty Stories of Extraordinatry People. Penguin 2004.

■■■

NOTES

3.1 नेतृत्व : विशेषताएँ एवं कौशल (Leadership : Skills and Characteristics)

उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़कर आप जान सकेंगे कि–

- नेतृत्व शब्द की परिभाषा, गुण एवं कौशल क्या हैं?
- नेतृत्व शब्द का अर्थ क्या है?
- नेतृत्व की अवधारणा और विशेषताएँ क्या हैं।
- स्वयं मे नेतृत्व की क्षमता विकसित कैसे कर सकेंगे।
- नेतृत्व की प्रमुख शैलियों को जानकर सबसे उपयुक्त शैली को अपना सकेंगे।
- नेतृत्व के उपलब्ध अवसरों का उपयोग अच्छे नेता बनने के लिए कर सकेंगे।

3.1.1 विकास के लिए नेतृत्व : एक संवाद (Leadership for Development : A Dialogue)

भारती : विकास क्या है? कितना जरूरी है? विकास कार्य कैसे किया जा सकता है? इसके बारे में तो प्रेरणा दीदी मैंने आपसे पहले ही जान लिया है। पर विकास के लिए, बदलाव के लिए पहल कौन करता है?

प्रेरणा : नेता, सामुदायिक नेता या सामाजिक नेता।

भारती : और वे कौन होते हैं?

प्रेरणा : नेता वे होते हैं जो नेतृत्व करें। अगुवाई करें। पहल करें। सामने आयें।

भारती : बस–बस दीदी। कहाँ याद रख पाऊँगी इतनी सारी बातें। इसके पहले तो तुमने मजेदार कहानियाँ



चित्र **3.11** प्रेरणा और भारती

सुनाई हैं, कठिन से कठिन बातें बड़ी सरलता से समझा दी। नेता के बारे में भी वैसे ही नहीं समझा सकतीं क्या?

NOTES

प्रेरणा : हाँ क्यों नहीं।

भारती : तो बताओ न दीदी।

प्रेरणा : ''पानी वाले बाबा''की कहानी तो याद है न?



भारती : हाँ दीदी। राजस्थान के गंभीर जल–संकट से निपटने का सपना साकार करने वाले राजेन्द्र सिंह को कैसे भूल सकते हैं। (मॉड्यूल–2, इकाई–1) परन्तु, इस परिवर्तन प्रक्रिया के लिये उन्होंने क्या युक्ति अपनाई यह मुझे समझ में नहीं आया।

प्रेरणा : जरा गौर से सुनो। राजस्थान में वर्षों से पानी का भीषण संकट था। कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। राजेन्द्र सिंह ने इस समस्या को समझा। उनका विचार था कि पुराने जमाने में पानी बचाने के लिए जो तरीके अपनाये जाते थे जैसे तालाब, बांध इत्यादि, उनको आज भी अपनाया जा सकता है।

भारती : यानी उन्होंने समस्या को समझा और फिर उसे सुलझाने का विचार दिया।

प्रेरणा : केवल विचार ही नहीं दिया। इससे भी एक कदम आगे बढ़कर मृत पड़ी जल–संरचनाओं को फिर से जीवित करने का **नया विचार** दिया, जो यह नया सपना बन गया और लक्ष्य बन गया।

भारती : क्या नये विचार, नये आइडिया या नवाचार से उलझनें सुलझ जाती हैं?

प्रेरणा : ये तो बस शुरूआत होती है, काम की असली परीक्षा तो इसके बाद आती है।

भारती : वो क्या?

प्रेरणा : अपने नये विचार पर काम करने की पहल करना, उसे लोगों के सामने कर के दिखाना। यानि केवल कहना ही नहीं, सच कर दिखाना। इससे लोगों को विश्वास होता है कि समस्या का हल केवल बातों में नहीं सच में भी हो सकता है।

भारती : तो बस काम खत्म।

NOTES

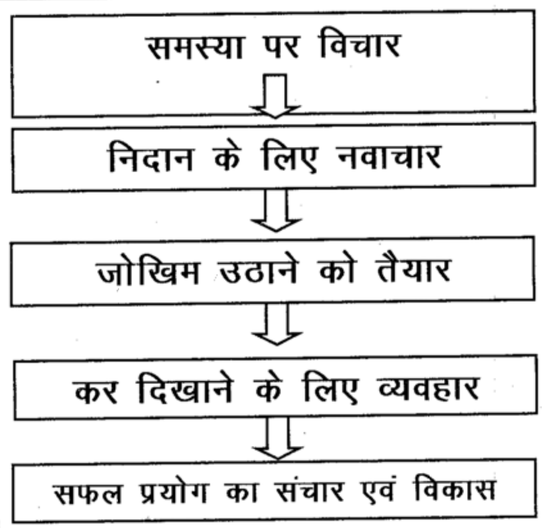
प्रेरणा : अरे, अभी कहाँ? इसे लोगों के साथ जोड़कर एक अभियान का रूप देना पड़ता है। सबको साथ लेने से समस्या का समाधान बड़ी आसानी से हो जाता है।

भारती : यानी अच्छे काम का पूरे समाज में संचार।

प्रेरणा : बिलकुल ठीक।

भारती : अब मैं समझ गई–

- पहले समाज की समस्या का विचार।
- फिर हल करने के लिए नवाचार।
- फिर उसे साबित करने के लिए व्यवहार।
- समुदाय के सभी लोगों को साथ लाने के लिए संचार।
- और अंत में अधिक से अधिक लोगों में उसका विस्तार।



चित्र **3.12** समाज परिवर्तन के कार्यो के विभिन्न चरण

प्रेरणा : बिलकुल सही। नेता वो है जो नेतृत्व दे और नेतृत्व का स्वरूप कैसा हो जैसा हमने पानीवाले बाबा की कहानी से सीखा।



चित्र **3.13** अलवर के तरूण भारत संघ द्वारा पानी का संरक्षण और हरियाली

भारती : मैं तो समझती थी कि केवल चुनाव लड़ने वाले ही नेता होते हैं या चुनाव लड़ने से ही नेता बनते हैं। क्या कोई भी नेता बन सकता है?

प्रेरणा : चुनाव लड़ने वाले तो नेता होते ही हैं। यह भी सच है कि **हर व्यक्ति जन्म से ही ढेर सारी क्षमताओं के साथ पैदा होता हैं**। लेकिन समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अगुवाई करने वाले लोगों की जरूरत होती है। खास–तौर पर समाज की समस्याओं से लड़ने के लिए। वे लोग जो समाज की समस्याओं पर विचार करते हैं, पहल कर लोगों की समस्याओं को हल करने के लिए नवाचार करते हैं, नवाचार के आधार पर समाधान के सपने को साकार करते हैं, इसे समाज से जोड़कर बदलाव कर दिखाते हैं– वे ही सच्चे अर्थों में सामाजिक नेता कहलाते हैं।

NOTES

भारती : दीदी! इस तरह से तो बहुत लोग सोच सकते हैं। काम भी कर सकते हैं। फिर राजस्थान में इतने सालों तक एक राजेन्द्र सिंह के लिए क्यों इंतज़ार करना पड़ा?

प्रेरणा : तुमने एक दोहा सुना होगा–

जिन ढूंढा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।'

मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठ।।

कई लोगों में जोखिम उठाने की शक्ति नहीं होती। वो डरते हैं और सोचने लगते हैं– क्या मैं सफल हो पाऊँगा? यदि सफल नहीं हुआ तो मेरा क्या होगा? मेरी बदनामी और बहुत सारा नुकसान तो नहीं हो जाएगा? ऐसे डर के मारे वे कभी पहल करने के लिए आगे ही नहीं आ पाते। जबकि नेतृत्व शक्ति वाले ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचनः'' की तर्ज पर आगे निकल पड़ते हैं उन्हें सफलता या असफलता का कोई डर नहीं होता। समाज के लिए कुछ करने का ''स्वधर्म'' मूल्य ही उन्हें आगे बढ़ाता है।

भारती : दीदी अब नेता शब्द के बारे में मेरे सारे भ्रम दूर हो गए। नेता क्या होता है? मैं भली प्रकार से समझ गई। साथ ही हमारे मध्यप्रदेश में भी ऐसे कई नेता हैं, इसके भी मुझे बहुत से उदाहरण मिल गये हैं। बस, अब ''स्वयं प्रेरित समाजिक नेता'' के गुण, शैली और उनके द्वारा होने वाले समाजिक नेतृत्व की प्रक्रिया को विस्तृत ढंग से जानना चाहूँगी।

NOTES

3.1.2 स्व–प्रेरित सामाजिक नेतृत्व (Self-Motivated Social Leadership)

3.1.2.1 नेता : विविध सामाजिक सन्दर्भों में

नेता शब्द का प्रयोग अनेक संदर्भो में आता है।पहले तो यह माना गया कि जिसके आदेश को लोग मानते हैं वह नेता है– इस कारण सत्ता और शासन का नेतृत्व करने वाले हिटलर को भी नेता माना जाता है, लेकिन इसके अलावा भी नेता होता है। नेतृत्व के अनेक आयामों में से चार आयामों का चयन करके उदाहरण के रूप में दो–दो व्यक्तियों को नीचे प्रदर्शित किया जा रहा है:

व्यवसाय क्षेत्र के नेता	**आध्यात्मिक क्षेत्र के नेता**	**सत्ता आधारित प्रशासनिक नेता**	**अध्यात्मिक राजनीति के नेता**


जे आर डी टाटा


स्वामी विवेकानन्द


सिकन्दर


महात्मा गांधी


नारायणमूर्ति


दलाई लामा


एडोल्फ हिटलर


नेल्सन मंडेला

चित्र **3.14 समाज विकास में की प्रक्रिया भिन्न–भिन्न तरह के नेता**

- सिकन्दर और एडोल्फ हिटलर सत्ता आधारित शासकीय नेता माने जाते हैं।

- स्वामी विवेकानन्द एवं दलाई लामा धार्मिक व आध्यात्मिक नेता माने जाते हैं।
- जे.आर.डी टाटा व नारायणमूर्ति औद्योगिक क्षेत्र के नेता माने जाते हैं।
- महात्मा गाँधी व नेल्सन मंडेला अध्यात्मिक एवं राजनीतिक नेता माने जाते हैं।

NOTES

वर्तमान में नेता का व्याख्यान जरा व्यापक और भ्रामक है। निम्नांकित तालिका से जाने कि नेता कौन है और कौन नहीं है–

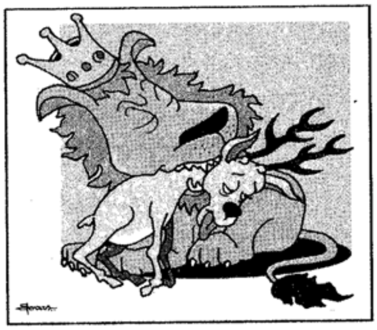
सामान्य संदर्भो में नेता शब्द का अर्थ	नेतृत्व नहीं है
• नेता अपने चरित्र तथा कार्यशैली की शक्ति से दूसरों को प्रभावित करता है। • नेता का दूसरा महत्वपूर्ण गुण प्रेरित करना है वह अपने सहयोगियों के गुणों को समझकर उन्हे कार्य करने हेतु प्रेरित करता है। • नेता अपने सहयोगियों को सिर्फ प्रेरित ही नहीं करता बल्कि वह उनका विश्वास भी हासिल करता है। • नेता ऐसा वातावरण निर्मित करता है जिसमें उसके सहयोगी भी उद्देश्य की प्राप्ति की ओर क्रियाशील हो सकें। • नेता का एक प्रमुख गुण कार्य या उद्देश्यों की पूर्ति हेतु स्वयं पहल करना है। • नेता में जोखिम उठाने तथा निर्णय लेने की क्षमता होती है। • नेता के अन्य गुणों में लोगों की समस्याओं को पहचानना तथा उन समस्याओं का समाधान करना है। • नेता में दूरदर्शिता के साथ–साथ अपने उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्धता होती है। • नेता के व्यवहार में पारदर्शिता होना आवश्यक है। • अपने सहयोगियों की क्षमताओं को पहचानकर उसका उपयुक्त उपयोग करना नेतृत्व है। • नेता को अपने लक्ष्य, उस लक्ष्य को प्राप्त करने के कारणों और उस तक पहुँचने के रास्ते के बारे में स्पष्ट ज्ञान होना आवश्यक है।	• उच्च पद के आधार पर अनुयायी बनाना नेतृत्व नहीं है। • किसी प्रशासनिक पद पर कार्य करने वाले व्यक्ति से बहुत सारे लोगों का जुड़ना नेतृत्व नहीं है। • लोकप्रियता या वाहवाही के आधार पर अनुयायी बनाना नेतृत्व नहीं है। • किसी अभिनेता या खिलाड़ी के बहुत सारे प्रशंसकों का होना नेतृत्व नहीं है। • भय के आधार पर अनुयायी बनाना नेतृत्व नहीं है। • अपने बाहुबल या रूतबे के आधार पर भय पैदा करके बहुत सारे लोगों को प्रभावित करना नेतृत्व नहीं है। उदाहरण के लिए डकैत एवं बदमाश नेता नहीं है। • आदेश पालन के आधार पर अनुयायी बनाना नेतृत्व नहीं है। • प्रलोभनों के आधार पर अनुयायी बनाना नेतृत्व नहीं है। • करिश्मे के आधार पर अनुयायी बनाना नेतृत्व नहीं है।

NOTES

हम इस प्रकार की सूचियों और विभिन्न परिभाषाओं को याद करने की परेशानी से बचाने के लिए और नैसर्गिक सिद्धांत के आधार पर नेतृत्व को समझने के लिए डॉ. जे.सी. कुमारप्पा की एक अवधारणा से परिचित करायेंगे। उससे आपको समझ में आयेगा कि अन्ना हजारे, कैलाश सत्यार्थी, मो. युनूस, मलाला युसुफ़ज़ई, इला भट्ट, कुरियन, राजेन्द्र सिंह आदि को हम सामाजिक नेता के रूप में क्यों मानते हैं। आपको स्पष्ट हो जायेगा कि :

स्वयं प्रेरित सामाजिक नेताओं का विशेष गुण क्या हैं और उनकी कार्यशैली एवं पद्धतियां क्या हैं ? संभव है कि ये सभी चीजें आपके मानसिक पटल पर एक छाया के रूप में अंकित हो जायेंगे।

3.1.2.2 नेताओ का वर्गीकरण : अर्थशास्त्री जेसी कुमारप्पा की दृष्टि से

सतत् विकास के प्रतिकूल	 (अ) 'सिंह' शैली का नेतृत्व	 (ब)'बंदर' शैली का नेतृत्व
सतत् विकास दर्शन के अनुकूल	 (स) 'मधुमक्खी' शैली का नेतृत्व	 (द) 'माता' शैली का नेतृत्व

चित्र **3.15** जेसी कुमारप्पा से प्रेरित चार प्रकार के नेतृत्व शैली।

चित्र क्रमांक 3.15 से समाज के नेताओ के जो रूप प्रचलित है वे सामने आ जाते हैं:–

(क) "सिंह" शैली का नेतृत्व : वे इसलिए नेता हैं क्योंकि वे शक्तिशाली हैं। दूसरों को मारने की शक्ति उनमें है। यदि आप उनको मान भी ले और नमन भी करें, तब भी वे अपनी भूख बुझाने के लिए आपको खायेंगे ही। ये बिना किसी परिश्रम के और बिना किसी अच्छे गुण के ऊपर से थोपे जाते है। जनता को लाचार होकर उनको मानना पड़ता है। और मन बहलाने के लिए समाज कुछ सिद्धांत भी बना लेता है– जैसे–" जिसकी लाठी उसकी भैंस", "वीर भोग्या वसुन्धरा" फिर क्या उनकी सत्ता तो चलेगी ही।

इतिहास ने कितने सिकन्दरों को महान माना यद्यपि उनके द्वारा करोड़ो लोग मारे गये। इतिहास ने कितने हिटलरों को देखा जिनको जनता ने एक मसीहा के रूप में माना और उनके आदेशो का पालन किया। इन नेताओ को कभी "उस तरफ" (The other side) का ज्ञान या ध्यान नहीं होता।

(ख) "बंदर" शैली का नेतृत्व (कम जागृत लोगों का शोषण करना) : बंदर तो किसी को मारकर नहीं खाता। परन्तु जब कोई व्यक्ति कम जागृत है उस अवसर का फायदा उठाता है और उस व्यक्ति के हाथ में से चीजों को छीन लेना अपना नैसर्गिक हक मानता है। व्यवसाय की दुनिया इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है।

(ग) "मधुमक्खी" शैली का नेतृत्व : मधुमक्खी फूल से मधु और पराग को उठा लेती है और फूल के जीवाणुओं को अन्य फूलों तक पहुँचाकर उनकी वंश वृद्धि में मदद करती है। मधुमक्खी की प्रक्रिया दोनों के लिए लाभदायक है। इसको उद्यमी प्रवृत्ति के नाम पर कुमारप्पा जी वर्णन करते हैं।

उद्यमी का कार्य भी इसी प्रकार का है–अपने उत्पादन व सेवा कार्य द्वारा समाज के लिए उपयोगी रहता है, और उसके बदले अपनी जीविका के लिए उचित मुनाफा कमा लेता है। परन्तु उद्यमी दो तरह के होते है:

• एक जिसका ध्यान मुनाफा पर ज्यादा है, समाज पर न्यूनतम्।	**• दूसरा जिसका ध्यान समाज पर ज्यादा है, मुनाफा पर न्यूनतम्।**

(दूसरे किस्म के बारे में अधिक जानेंगे– सामाजिक उद्यमी से संबंधित अनुभाग 3.4 में)

मुनाफा लेना भी कोई गुनाह नहीं है क्योकि उद्यमी को भी अपने परिवार एवं अपने साथ कार्य करने वालों के जीवन यापन की चिंता करनी पड़ती है।

NOTES

क्यों हमारे साधु संतो ने भी काफी व्यवहारिक बात बताई है :

"साईं इतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाय,

मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।"

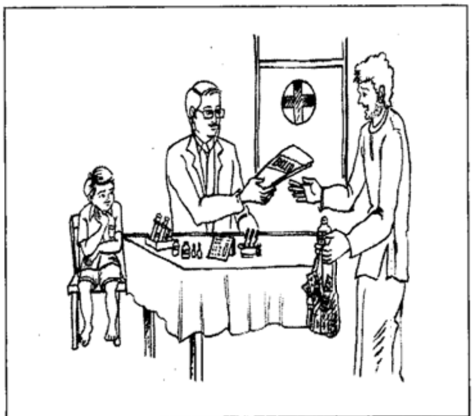
NOTES

(घ) माँ की मानसिकता रखने वाले नेता : उपरोक्त चारो शैली के नेतृत्व की अपेक्षा सबसे महत्वपूर्ण माँ की शैली का नेतृत्व है, जिस प्रकार एक माँ बिना किसी स्वार्थ के अनेक प्रकार के कष्टों को सहते हुए भी अपने बच्चे के लालन–पालन में कमी नहीं आने देती है, उसी प्रकार इस शैली के नेता समाज एवं राष्ट्र हित के लिए निजी स्वार्थों का बलिदान कर देते हैं। इस प्रकार के नेतृत्व को समझने के लिए यहाँ कीमत और मूल्य में अंतर बताने वाली एक रोचक कहानी बतायी जा रही है।

कीमत और मूल्य

रामू अपने पिताजी डॉ. गोपाल के साथ एक दिन उनके अस्पताल गया। वहाँ पर बैठे–बैठे पिताजी और रोगी के संवाद को गौर से सुन रहा था। उसे करीब–करीब सब बातें समझ में आ रही थी। केवल एक बात को छोड़कर–बिल? रामू सोच में पड़ गया कि आखिर बिल क्या होता है?

जब रोगी चला गया तो रामू ने पिताजी से पूछा – पिताजी बिल क्या होता है ?



चित्र **3.16** छोटू राम अपने पिताजी और रोगी के बीच के संवाद को गौर से सुनता है।

पिता ने तुरन्त मेज पर पडे एक बिल को लेकर उसके हाथ में दे दिया। वंह पढ़ने लगा कि उसमें लिखा क्या है।

विवरण	**राशि**
जांच की फीस एव प्रयोगशाला फीस	रू 40
चार बार कमरे पर विजिट	रू 60
दवा एवं इन्जेक्शन	रू 50
कुल	रू 150

लड़का घर आया और अपने मेज पर बैठ कर उसने भी एक बिल तैयार किया :–

विवरण	राशि
सुबह दूध,अखबार व तरकारी लाने के लिए	रू 2.50
रसोई मे साथ मदद करने के लिए	रू 1.50
शाम को मां मंदिर गई तो घर की देखभाल	रू 2.00
कुल	रू 6.00

NOTES

यह बिल उसने अपनी माँ की कुर्सी पर रख दिया। अगले दिन रामू के मेज पर छः रू रखे गये थे, किन्तु उसके नीचे एक कागज था। रामू ने ध्यान से देखा तो पाया कि वह माँ के द्वारा बनाया गया एक बिल था, जिसमें सेवाओं के बदले राशि के रूप में कुछ नहीं और कुल योग में भी कुछ नहीं लिखा था

विवरण	राशि
बचपन से अबतक के पालन पोषण करके बड़ा करने के लिये फीस	**कुछ नहीं**
बीमार होते समय पूरी रात जागकर देखभाल करने के लिए	**कुछ नहीं**
पढ़ते समय आने वाली समस्यायो में लगातार मदद करने के लिए	**कुछ नहीं**
कुल	**कुछ नहीं**

जब रामू ने यह ''कुछ नहीं वाला'' बिल पढ़ा तो उसके अंदर कोई चीज चुभने लगी। वह रो पड़ा, दौड़ा और मॉ के पैरों पर सिर रखकर फूट–फूट कर रोने लगा। पास में मॉ से पाये हुए छः रूपये भी पड़े रहे। मॉ ने उसको उठाया और गले से लगा लिया।



चित्र **3.17** छोटू राम माँ के पैर पर पड़कर रोता है।



चित्र **3.18** माँ गले से लगा लेती है।

NOTES

यह छोटी सी काल्पनिक कहानी किसी भी स्वयंसेवक की जिन्दगी के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत बन सकती है। यदि उसे माँ शैली का नेता बनना है तो अपने समस्त कष्टों को भूलकर समाज की भलाई एवं विकास की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेना पड़ेगा।

लातों के भूत बातों से नहीं मानते

अब बात आई रालेगण सिद्धि की, जहां मद्यपान निषेध का नियम ग्राम पंचायत द्वारा लागू था। युवा मंच की मद्द से शराब बनाने के अड्डे तो तोड़े ही गये, लेकिन युवाओं के इस कृत्य के विरूद्ध पुलिस में शिकायत करने की हिम्मत किसी की न हुई। इन सब प्रयासों के बावजूद कुछ ऐसे लोग थे जिन्हें पीने से रोकना मुश्किल हो गया। यह गाँव के सामने एक समस्या बन गई। शत् प्रतिशत मद्यनिषेध का लक्ष्य कैसे प्राप्त करें– इस पर एक सभा हुई।



चित्र **3.19** जब नेता अपने हितग्राहियों को मां की तरह सेवा करता है तो सुधरने के प्रयत्न में दंड देने का भी अधिकार है–अण्णा
(चित्र अण्णा जी की जीवनी'मेरा गाँव एक पुण्य तीर्थ' से लिया गया है।)

उस ग्राम सभा से यह निर्णय निकला कि पहले दो बार पकड़े जाने पर संबंधित व्यक्ति को परामर्श के बाद छोड़ दिया जाय। यदि तीसरी बार पकड़ा गया तो उसे मंदिर में ले जायेंगे और आगे से कभी न पीने की शपथ करवायेंगे। इसके बाद भी अगर वह शराब पीता है तो उसको एक खम्भे पर बाँधा जायेगा। इस प्रकार करीब 12 लोग शपथ का उल्लंघन करने के कारण खम्भे से बांधे गये और इसका परिणाम हुआ कि शराब की समस्या से निजात मिली।

अन्ना जी के जीवन और उनके कथनों से हमें बहुत कुछ प्राप्त होता है। किन्तु प्रश्न उठता है कि क्या किसी व्यक्ति को एक खम्भे में बाँधकर रखना सही है ? ऐसा करना उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आघात नहीं होगा ?

अन्ना जी उत्तर देते हैं कि समाज की भलाई के लिए चंद लोगो की स्वतंत्रता छीनना पड़े, तो गलती नहीं है। जैसे एक माँ अपने बच्चे को पेट में

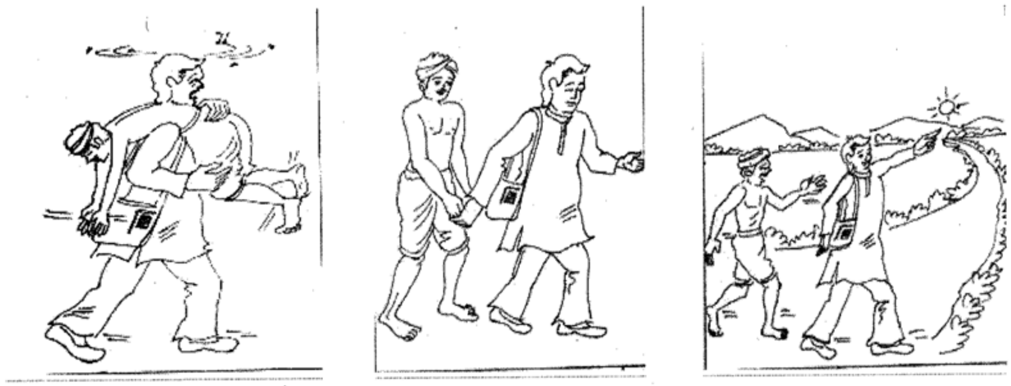
NOTES

रखती है। उसका पालन पोषण कर बड़ा करती है। उसको शिष्टाचार सिखाना भी उसका धर्म होता है। जरूरत होने पर उसे थप्पड़ मारना भी जरूरी होता है। परन्तु वह माँ अपने पड़ोस के बच्चे को पीट नहीं सकती चाहे वह बच्चा उसके बच्चे से भी ज्यादा नटखट क्यों न हो। क्योकि मां ने उस पड़ोस के बच्चे के लिए कुछ किया ही नहीं।

उक्त कथनों से हमें एहसास होता है कि जब स्वयंसेवक समाज के साथ एक समर्पित भाव रखकर सेवा शुरू करता है, तब फिर एक नये रिश्ते की शुरूआत होती है।

क्या समाजिक नेता को हमेशा समाज का निर्देशन करना उचित है?

बिल्कुल नहीं ! कोई भी मां यह नहीं चाहेगी कि बच्चा हमेशा जमीन पर ही घिसटता रहे। वह तो चाहेगी कि अपना बच्चा जल्द से जल्द अपने पैरों पर खड़ा हो जाये। हकीकत यह है कि यदि समाज, जिसके लिये स्वयंसेवक कार्य कर रहा है, खुद अपने पैर पर खड़ा नहीं होता, तो उसको लेकर आगे बढ़ना समाज सेवक के लिए एक मुश्किल काम हो जाता है। इसको अभिव्यक्त करने के लिये निम्नांकित चित्र उपयोगी होगा–



1. ढोना **2. घसीटना** **3. निर्देशन/पथ–प्रदर्शक**

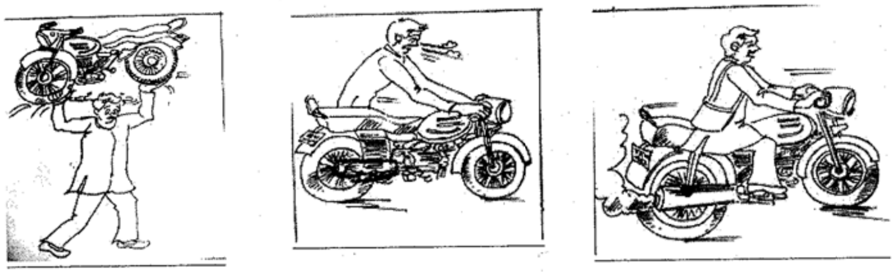
चित्र **3.20 शक्तिहीन और दिशाहीन समुदाय को आगे ले जाना एक मृत शरीर को ढोने के बराबर है।**

- पहले की स्थिति (1) तो बहुत ही अवांछित है, समाज यदि हर चीज के लिए पूरी तरह सेवक के ऊपर निर्भर हो–यह तो सफल विकास कार्य का दृश्य नहीं है।
- (2) की स्थिति बेहतर तो है परन्तु काफी उर्जा, उसको प्रेरित करके खींच कर ले जाने में, लगती है।

NOTES

- (3) में दर्शाई स्थिति उत्तम है, क्योकि रास्ता जानने पर समाज खुद ही चल सकता है।

उक्त सिद्धांत को और भी स्पष्ट रूप से बताने के लिए एक स्कूटर को लेकर सूखी नहर पार करने का दृश्य दिखाया गया है। इससे संबंधित 1, 2, 3 से क्रमशः 1,2,3 की तुलना से बात समझ में आ जाएगी।



1. ढोना **2. घसीटना** **3. नियंत्रित निर्देशन**

चित्र **3.21** समाज के चक्र नहीं चलते और उसमें उर्जा और दिशा नहीं तो......?

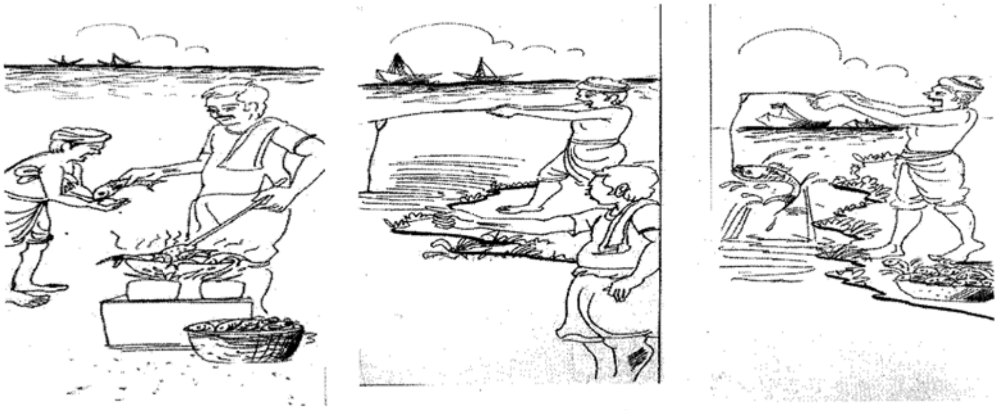
जैसे कल्पना कीजिए यदि आप के स्कूटर का पहिया भी नहीं घूमता, इंजन भी नहीं चलता और पेट्रोल भी नहीं है तो उसको सिर पर ही ढोना पड़ता है। यदि इंजन चलता है और पेट्रोल भी थोड़ा है, तो रेतीले रास्ते में भी इंजन की शक्ति ओर अपनी शक्ति को मिलाकर आगे ले जा सकते हैं। रास्ता सुगम होते ही गाड़ी खुद चलती है, बस आपको उसके हेन्डल को घुमाकर मार्गदर्शन देना पड़ता है।

ठीक इसी प्रकार जब समाज के रिश्ते में गड़बड़ी है और उनको रास्ता मालूम नहीं है, तो उनको आगे ले जाने में काफी दिक्कतें होती हैं। जब उनमें स्वयं की पहचान हो जाती है रास्ते सुगम हो जाते हैं तो उनको आगे बढ़ाना थोड़ा सा आसान हो जाता है–जैसे पहिये के ठीक होने पर स्कूटर को धक्का देकर ले जाना आसान हो जाता है। अब आया सिर्फ पेट्रोल याने उर्जा की बात। जब इसका भी धीरे–धीरे समाधान हो जाता है तो नेता का काम बहुत ही आसान हो जाता है : बस दिशा दिखाना। कुछ दिन बाद लोग खुद ही आपस में मिलकर दिशा ढूँढ़ लेते हैं। नेता का (एक स्वावलम्बी समाज को खड़े करने का) लक्ष्य पूरा हुआ और उसके लिए छुट्टी !

समाज को स्वायत्त बनाने के लिए जानकारी एवं क्षमता विकासः

NOTES

एक बहुत पुरानी कहावत है : किसी को एक मछली देने से, उसको उस दिन की भूख से बचा पाओगे। यदि मछली कैसे पकड़ना है, यह सिखा दिया जाये तो उसे हमेशा के लिये भूख की समस्या से छुटकारा दिया जा सकता है।



एक मछली का दान　　मछली पकड़ने के लिये प्रशिक्षण　　स्वायत्त स्थिति

चित्र **3.22 मछली को दान न करो, उसे पकड़ना सिखाओ**

समाज की स्वायत्ता की पहचान कैसे हो?

इस प्रश्न का उत्तर इकाई 2.3 में विस्तार से प्राप्त होगा। यहाँ संक्षेप में कहा जा सकता है कि ''जब लोग स्वायत्त स्थिति पर पहुंच जाते हैं तब स्वयंसेवक नेता की आवश्यकता ही नहीं होती।''

इसका मतलब क्या है ? क्या स्वयंसेवक अपने झोला, बिस्तर समेट कर वहां से चला जाये ?

हाँ! सही स्थिति तो यही है। क्योंकि ऐसा न करने से ही गड़बड़ियाँ ज्यादा होती हैं। जैसे माँ अपने सयाने बेटे को भी रोज अपने हाथ से ही खाना खिलाना चाहती है, तो आप कल्पना कर सकते हैं कि उस सयाने बेटे के खुद के परिवार में क्या–क्या समस्यायें आ सकती हैं।

इस संबंध में दो विश्वप्रसिद्ध सामाजिक नेताओं के जीवन के अंतिम पड़ाव की कहानियाँ प्रेरणादायक हो सकती हैं।

NOTES

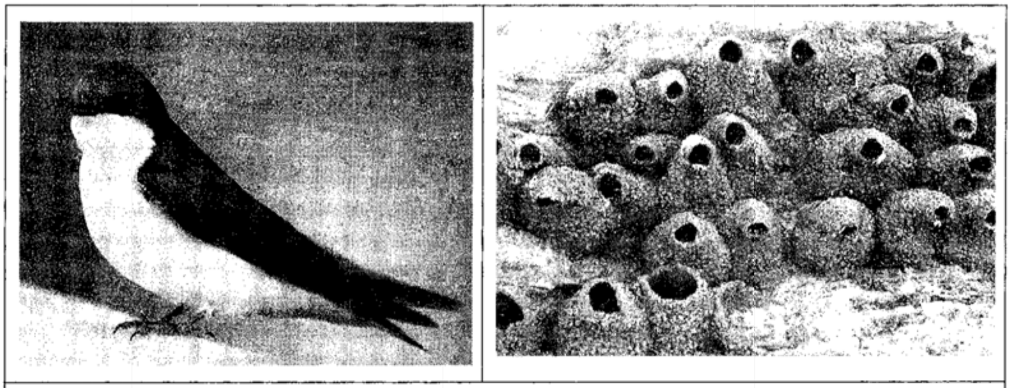
- वर्गीस कुरियन अमूल मॉडल के निर्माता हैं। उन्होंनें व्यावहारिक सामाजिक नेतृत्व का एक ढांचा इस देश व विश्व के लिए प्रदान किया है। परन्तु वे अपने संस्थान के शीर्षस्थ पदों पर काफी लम्बे अरसे तक रहे। इसका नतीजा उतना अच्छा नहीं निकला। संस्था और उनके बीच का रिस्ता हाल ही में बिगड़ने लगा है। ऐसी दुर्घटनायें अपरिहार्य नहीं हैं। बस नेताओं को सही समय पर जिम्मेदारी हस्तांतरित करके समाज को या अगली पीढ़ी के नेताओं को अवसर देना चाहिए। यही नैसर्गिक नीति है–जिसको हमारी परम्पराओं में वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम के नाम पर एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।
- डॉ. मोहमम्द यूनूस विश्व प्रसिद्ध नोबल पुरस्कार से अलंकृत सामाजिक नेता हैं। विश्व प्रसिद्ध होने के बाद उनका रिश्ता अपने पूर्व संस्थान के साथ लम्बे समय तक सही नहीं रह पाया। यहाँ भी यदि उचित समय पर अगली पीढ़ी या समाज को उत्तरदायित्व दे दिया जाता तो इस प्रकार की विरोधाभासी स्थिति उत्पन्न नहीं होती।

गांधीजी इस प्रकार के सिद्धांतो को अच्छी तरह जानते थे। इसलिए उन्होंने अपने जीवन के अंतिम डेढ़ दशक में कांग्रेस की सदस्यता से भी अपने आप को मुक्त कर लिया था और कांग्रेस को भंग करने का भी सुझाव दिया था। श्रद्धेय नानाजी देशमुख द्वारा 60 वर्ष की उम्र में राजनीतिक पदों का त्याग कर समाजसेवा की ओर कदम बढ़ाना इसका एक अच्छा और अनुकरणीय उदाहरण है।

इसे और अच्छे से समझने के लिए यहाँ पर बया पक्षी द्वारा अपने बनाये घोसले को आवश्यकता समाप्त होने पर छोड़ने का उदाहरण प्रस्तुत है।

बया मॉडल (Swallows-Model) क्या है ?

बया एक ऐसी पक्षी है, जो अपना घोंसला बना कर किसी जगह रहती है, परन्तु लम्बे समय तक वहीं रहने की आदत नहीं रखती। बस अपना काम खत्म होने पर चली जाती है।



चित्र **3.23** बया पक्षी और उनके छोड़े गये घोसले

NOTES

उपरोक्त प्रसंगों से स्पष्ट है कि एक समाजिक कार्यकर्ता का दायित्व यह भी है कि लोगों को खड़ा करने के बाद अपने को समुदाय से पृथक कर वहाँ के लिए प्रस्थान करे जहाँ उसकी आवश्यकता हो।

3.1.3 नेतृत्व की विशेषताएँ (Characteristics of Leadership)

नेता और उनके नेतृत्व की पूर्व में चर्चा की जा चुकी है। उससे सहज ही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अच्छे नेतृत्व एवं सफलता के लिए कुछ ऐसे सामान्य गुण, सामान्य विशेषतायें होती ही हैं, जिनको स्वयं में विकसित कर हम न केवल समुदाय का नेतृत्व सफलता से करते हैं, बल्कि अपने कार्य करने की शैली से सब पर अपनी छाप छोड़ते हैं। एक अच्छे नेता में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है–

- **दृढ़ इच्छा शक्ति**– समस्याओं के समाधान के लिए जब समुदाय का नेतृत्व किया जाता है तो समस्याएँ विकराल रूप में सामने होती हैं। कभी–कभी वांछित सफलता न मिलने से अभियान के मध्य में ही नेतृत्व और समुदाय का मनोबल टूटने का खतरा रहता है। नेता अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आशा और प्रेरणा का संचार करता है। सबको साथ लेता है। साहस–सम्बल देता है। प्रतिकूलता पर विजय प्राप्त करता है।
- **कार्य के प्रति निष्ठा**– नेतृत्व के लिए आवश्यक है कि उसके द्वारा जिस अभियान का नेतृत्व किया जा रहा है, उसके प्रति सच्ची निष्ठा हो और पूर्ण

समर्पण का भाव हो। कार्य के प्रति सच्ची निष्ठा के बगैर लक्ष्य तक पहुँचना सम्भव नहीं होता है। साथ ही उसका प्रभाव समुदाय पर नहीं पड़ता है।

NOTES

- **साहस एवं जोखिम उठाने की क्षमता**– समस्याओं के समाधान बाजार में बने–बनाये नहीं मिलते। अपनी परिस्थिति में जोखिम उठाकर साहस और दृढ़ता से उसे लागू करना जरूरी होता है। जिस प्रकार एक पूँजीपति अपनी पूँजी से जोखिम उठाकर नया उद्यम प्रारम्भ करता है, जिसमें लाभ और हानि की बराबर सम्भावनायें रहती हैं। विफलता का भी भय रहता है किन्तु इस सबकी परवाह किये बगैर वह साहस से अपने मार्ग पर चलता है। लक्ष्य को जोखिम उठाकर भी प्राप्त करता है। ठीक इसी प्रकार एक सामाजिक उद्यमी के रूप में एक अच्छा नेता भी जोखिम उठाकर नवाचार से साहसपूर्वक समस्याओं से लड़ता है। लोगों की भागीदारी को हथियार बनाता है। सफलता प्राप्त करता है। इस अवधारणा को **इकाई–4** में सामाजिक उद्यमिता के अंतर्गत और गहराई से स्पष्ट किया गया है।
- **रचनात्मक क्षमता**– एक अच्छे नेता में रचनात्मकता होती है। वह सकारात्मक परिवर्तन के लिए इस रचनात्मकता का उपयोग करता है। सफल नेता अपने कार्य को सामान्य की अपेक्षा कुछ अलग ढंग से करते हैं। इसी से उनकी रचनात्मकता का पता चलता है।
- **व्यवहार कुशलता**– नेता को समुदाय को साथ लेकर चलना पड़ता है। इसके लिये सबसे संबंध और संपर्क स्थापित करना पड़ता है। इसे ही व्यवहार कुशलता कहा जाता है। व्यवहार कुशलता के गुण से नेता सभी से नजदीकियाँ बनाये रखता है। सभी को लक्ष्य से, अभियान से जोड़े रखता है, जिसके परिणाम स्वरूप वह सफलता प्राप्त करता है।
- **निःस्वार्थ**– स्वार्थ रहित होना नेता का एक महत्वपूर्ण गुण हैं। किन्तु इस गुण को प्राप्त करना इतना सहज नहीं है। प्रायः हम किसी कार्य को करने या न करने का निर्णय स्वयं को होने वाले लाभ–हानि एवं हित–अहित के आधार पर लेते हैं। लेकिन नेता को इससे ऊपर उठकर सबके हित की भावना से कार्य करना पड़ता है। तभी वह पूरे समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित कर सकता है। कहा गया है :

"तरूवर कबहु न फल भखै, नदी न संचय नीर,

परमारथ के कारने साधुन धरा शरीर।।

यह एक अच्छे नेता के लिए भी मार्गदर्शक सिद्धांत है।

NOTES

- **निर्णय लेने की कुशलता**– एक अच्छे नेता को समुदाय का साथ लेकर नेतृत्व करते समय अनेक बार महत्वपूर्ण निर्णय लेने पड़ते हैं। लिए गए निर्णय के सही या गलत होने का जोखिम तो रहता ही है किन्तु एक अच्छे नेता में निर्णय लेने की कुशलता होती है। वह वर्तमान के आधार पर भविष्य का अनुमान लगाता है और सफल होने वाली रणनीति चयन कर कार्य करता है। एक अच्छा **नेता** दूरदृष्टि से सही निर्णय लेता है।

- **प्रभावी सम्प्रेषण**– अच्छे नेता अच्छे एवं प्रभावी सम्प्रेषक होते हैं। देश के स्वाधीनता आन्दोलन में हमारे नेताओं ने अपने नारों से पूरे राष्ट्र में देशभक्ति की भावना का संचार किया (अधिक जानकारी मॉड्यूल–3ः 'संचार और विकास के लिए जीवन कौशल शिक्षा' में दी गई है)। अच्छा नेता अपनी बात सार रूप में प्रभावी ढंग से लोगों के सामने रखता है। उनकी सहमति जुटाता है और अभियान में सबको सहभागी बनाता है। कुशल सम्प्रेषक होना नेता का अनिवार्य गुण है।

- **समन्वय, सहकार एवं समाहित करने की सोच**– नेता जिस समुदाय का नेतृत्व करता है, आवश्यक नहीं कि उसके सभी सदस्य या घटक एक जैसी मानसिकता, दृष्टिकोण और विचार रखते हों फिर भी अभियान की सफलता के लिए सबको जोड़े रखना आवश्यक है। एक अच्छा नेता सबको साथ लेकर सामूहिक प्रयासों के द्वारा लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयास करता है।

- **परानुभूति**– किसी नेता की सफलता के लिए उसमें परानुभूति का गुण होना आवश्यक है। परानुभूति वह प्रक्रिया है, जिसमें स्वयं को दूसरे की परिस्थिति में रखकर देखा जाता है, इसके बाद निर्णय लिया जाता है। उदाहरण के लिए सड़क पर दुर्घटना से ग्रस्त होकर कोई व्यक्ति पड़ा है तथा अनेक लोग उसको बगैर देखे चले जा रहे हैं। एक व्यक्ति यह सोचता है कि यदि मैं उसकी जगह इसी प्रकार सड़क पर घायल पड़ा होता तो क्या होता? इससे प्रेरित होकर वह घायल की मदद करता है। हमारे साथ भी ऐसा ही हो तो हमें कैसा लगेगा। यह महसूस करना ही परानुभूति है, जो व्यक्ति को सहृदय बनाती है।

3.1.4 विकास के संदर्भ में नेता के प्रमुख दायित्व

(Main Responsibilities of a Leader in Context of Development)

NOTES

विकास में नेतृत्व की भूमिका को समझने के लिए हम पुनः **विकास मॉड्यूल** में चर्चित एक चित्र को Fig 3.1.2.4.a यहाँ पर पुनः प्रस्तुत करते हैं। इस रेखाचित्र से तीन बातें स्पष्ट होती हैं :

- वर्तमान स्थिति
- लक्ष्य
- वर्तमान स्थिति से लक्ष्य तक पहुँचने का रास्ता।



चित्र **3.24** विकास की गतिकी

अब प्रश्न उठता है :

- वर्तमान स्थिति को कैसे समझा जाय?
- लक्ष्य का निर्धारण कैसे किया जाय?
- लक्ष्य तक पहुँचने के रास्ते का चयन कैसे होगा?

जब संबंधित समुदाय सदियों से पिछड़ा रहा है और विकास कार्यों से कभी परिचित ही नहीं हुआ तो कैसे वह उक्त तीन प्रश्नों का उत्तर दे पाएगा? असल में कई शोषित एवं दलित वर्ग अपनी अनेक पीढ़ियों से उसी स्थिति में रह चुके हैं। इसके कारण ये परिस्थितियाँ उनके लिये स्वाभाविक बन जाती हैं। अतः उनके लिए भिन्न स्थिति की कल्पना करना ही असंभव हो जाता है। ऐसे संदर्भ में एक बाहरी व्यक्ति को आकर उस समुदाय को जागृत करना पड़ता है। उदाहरण के लिए दक्षिण अफ्रीका में यदि गाँधीजी द्वारा काले कानून से उनके समुदाय पर होने वाले आघात के बारे में समझाया नहीं जाता तो वहाँ के लोग कभी भी संगठित न हो पाते।

अण्णा हज़ारे, इलंगो और राजेन्द्र सिंह की कहानियों को पढ़ने पर पता चलता है कि उन्होंने वर्तमान स्थिति को समझाने के काम को अपना पहला कार्य बना लिया। इसके लिये समस्याओं को खुद ही सही ढंग से समझने की उन्होंने पहल की। उदाहरण के लिए गाँधीजी के चंपारन सत्याग्रह को ले सकते

हैं। शुरू में गाँधीजी ने घर–घर जाकर असलीयत को समझने के लिए सर्वेक्षण किया एवं आंकड़ों को इकट्ठा किया।

NOTES

लक्ष्य निर्धारण

पिछड़े इलाकों में कार्य शुरू करने के पहले लोगों के साथ मिलकर अपने विकास के लक्ष्यों को निर्धारित करना पड़ता है। गाँधी जी ने हिन्द स्वराज नामक पुस्तक को 1908 के करीब लिखा और इसके द्वारा भारत के भविष्य के विकास के बारे में उनका दर्शन पैदा हुआ। अण्णा हज़ारे ने एक ऐसे रालेगण सिद्धि की कल्पना की जो प्राकृतिक संपदा के प्रबंधन द्वारा स्वावलंबी बनेगा और सामाजिक दृष्टि से एक सहकारी एवं परस्पर पूरक समाज बनेगा। जहाँ राजेन्द्र सिंह कार्य कर रहे थे, वहाँ पानी ही मुख्य समस्या थी– जिसके कारण सारे गाँव के लोग बहुत परेशान थे। सभी के हित को ध्यान में रखते हुए गाँव में पानी लाने के कार्य को राजेन्द्र सिंह ने अपना प्रमुख लक्ष्य बनाया। लक्ष्य निर्धारण के साथ ही निम्न वर्णित प्रक्रियाओं को भी समझना पड़ेगा–



चित्र **3.25** 'हम चलेंगे साथ–साथ'

दिशा निर्देशन

किस दिशा में कार्य करना है। क्या रणनीति अपनाकर कार्य करना है। इसके लिए लोगों का दिशा निर्देशन का उत्तरदायित्व निभाना। गाँव में पानी लाने के लिए कौन–कौन से आवश्यक कदम उठाए जाने हैं और उसके लिए सभी की सहभागिता से किस तरह की रणनीति अपनाई जाएगी ? यह उत्तरदायित्व राजेन्द्र सिंह ने स्वयं निभाया। 200 साल पहले कहे गए एक तमिल दोहे के अनुसार निम्न शर्तों के बाद ही किसी को जिम्मेवार बनाना उचित होता है–

"पहले निर्णय करो कि **क्या** करना है?
फिर निर्णय करो कि **किस तरीके से** करना है?
फिर निर्णय करना कि **कौन** करने के लिए सक्षम होगा?
यह निर्णय सही तरह की **जॉच पर** आधारित हो।
एक बार **निर्णय** हो गया तो
उस लक्ष्य सिद्धि का काम **उस आदमी** पर छोड़ना।
कोई दखल नहीं देना।"– **तिरूक्कुरल दोहा क्र. 517**

NOTES

श्रेय देना :

किये गये कार्यों के लिए दल से जुड़े हर व्यक्ति के योगदान को रेखांकित करना एवं सराहना करना आवश्यक है। अण्णा हज़ारे के जीवन में इसका बहुत अच्छा उदाहरण मिलता है। उनकी लिखी आत्मकथा– **मेरा गाँव एक पुण्यतीर्थ** को पढ़ने वाले पायेंगे कि उन्होंने 'रालेगण सिद्धि के पुनर्निर्माण के मुख्य शिल्पी' शीर्षक वाले लंबे भाग में अपने सहयोगियों की उनके फोटो सहित नाम देकर सराहना की है।

एक अच्छा नेतृत्व किस प्रकार कार्य करता है उसे निम्नांकित चित्र से समझा जा सकता हैं–

- समूह की सहायता से अपने कार्य को पूर्ण करना,
- समूह और समूह के सदस्यों की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की पूर्ति करना।
- कोई भी नेता उपरोक्त दोनों कार्यो को कैसे करता है, यह उसकी नेतृत्व शैली पर निर्भर है :



चित्र **3.26** प्रमुख नेतृत्व शैलियाँ

3.1.5 नेतृत्व की प्रमुख शैलियाँ (Main Styles of Leadership)

- **निरंकुश शैली**– सिर्फ नेता की ही मर्जी लागू होती है, अन्य सदस्यों की निर्णय लेने में कोई सहभागिता नही होती। नेता स्वयं फैसला लेता है, अपने सहभागियों को आदेश देता है।
- **जनतांत्रिक शैली**– नेता अपने सदस्यों के साथ मित्रतापूर्ण सहभागिता का दृष्टिकोण रखता है। लीडर और सहभागियों के बीच द्वि–पक्षीय या बहु–पक्षीय संचार होता है। निर्णय, कार्यविधि पर चर्चा होती है। लीडर कार्य का संयोजन करता है। कर्तव्य पालन में मदद करता है। सहभागियों के साथ

विश्लेषण कर निर्णय करता है।(इसकी आधुनिक विधायें अनुभाग 2.3 में पढ़ेंगे।)

- **उदार विचारधारा शैली**– नेता अपने सहभागियों पर विश्वास करके प्रत्येक की गतिविधियों का उद्‌देश्य निर्धारण कर देता है। साथ ही उसे प्राप्त करने का माध्यम, और लागू करने की प्रक्रिया भी। नेता कभी–कभी ही अपने अधिकारों का उपयोग करता है और अपने अनुयायियों को पूर्ण स्वतंत्रता देता है। ऐसे नेताओं की मानसिकता को निम्न कहावत अभिव्यक्त करता है :

"मैं नहीं चाहता कि मैं आपके आगे चलूं।

मैं नहीं चाहता कि मैं आपके पीछे चलूं।

मैं चाहता हूं कि आपके कंधे से कंधा मिलाकर चलूं।"

NOTES

हमने जाना

- नेता सबसे पहले समाज की समस्या का विचार, फिर हल करने के लिए नवाचार, फिर उसे साबित करने के लिए व्यवहार, समुदाय के सभी लोगों को साथ लाने के लिए संचार और अंत में अधिक से अधिक लोगों में उसका विस्तार कर उसे अभियान में बदल देता है।
- समाज के विकास के लिए स्वप्रेरित नेताओं की आवश्यकता है।
- प्रायः समाज के सदस्यों को अपनी वर्तमान स्थिति, लक्ष्य एवं लक्ष्य तक पहुचने का रास्ता पता नहीं होता अतः एक बाहरी व्यक्ति को आकर उस समुदाय को जागृत करना पड़ता है।
- जो समाज में स्वयंसेवक के रूप में उभरता है और समाज के लिए कार्य करता है वह सामाजिक कार्यकर्ता कहलाता है।
- नैसर्गिक सिद्धांत के आधार पर नेतृत्व को समझने के लिए डॉ. जे.सी. कुमारप्पा अवधारणा के अनुसार सिंह, बंदर, मधुमक्खी एवं माँ शैली के नेता होते है। एक समाजिक कार्यकर्ता या नेता को माँ शैली का होना चाहिए।
- नेतृत्व कौशल दो प्रकार के होते हैं–

  1. स्वतः प्रबंधन

  (अ) स्वयं के प्रति जागरूकता (ब) स्वसंचालन (स) स्वप्रेरणा

NOTES

2. दूसरों से जुड़ने की क्षमता

(अ) परानुभूति (ब) व्यावहारिकता

- नेतृत्व की शैलियाँ– मुख्यतः तीन शैलियाँ : 1. निरंकुश शैली 2. जनतांत्रिक शैली 3. उदार विचारधारा/अहस्तक्षेप शैली

कठिन शब्दों के अर्थ

निरंकुश : निरंकुश का अर्थ है बिना किसी बंधन के। प्रत्येक सत्ता पर नियमानुसार आचरण के लिए कुछ नैतिक, कुछ विधिक बंधन होते है। किसी बंधन को, किसी नियम को न मानने वाली व्यवस्था या व्यक्ति निरंकुश कहलाता है।

जोखिम : जोखिम का अर्थ है निर्णय के साथ जुड़ा हुआ खतरा। किसी भी निर्णय को लागू करने में सफलता असफलता की बराबर संभावनायें होती हैं। निर्णय के साथ जुड़ी असफलताओं की संभावनाओं को जोखिम कहते हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न

संक्षिप्त में उत्तर दें?

- अण्णा हजारे में कौन–कौन से गुण हैं ?
- राजेन्द्र सिंह किस अभियान का नेतृत्व कर रहे थे?
- नेता किसे कहते हैं ?
- नेतृत्व क्या है और नेतृत्व कितने प्रकार का होता है?
- आप किस नेता से सर्वाधिक प्रभावित हैं? उससे प्रभावित होने के कारणों का वर्णन कीजिये।
- आपके अंदर नेतृत्व के कौन–कौन से गुण हैं? कृपया उल्लेख कीजिए।
- अवसर मिलने पर आप अपने गाँव व समाज के लिए क्या–क्या करना चाहते हैं?
- अपने पसंद के नेताओं की तस्वीरों को एकत्रित करें तथा उनके द्वारा समाज में दिए गये योगदान को उल्लेखित करें।

- अपने गाँव या आस–पास के गाँव की एक प्रमुख समस्या की पहचान कर उसे कैसे दूर किया जा सकता है? एक नेता की दृष्टि से रणनीति बनायें।
- एक नेता को समाज के दिशा निर्देशन का कार्य कब छोड़ देना चाहिए?
- जे.सी.कुमारप्पा द्वारा प्रतिपादित नेताओं के प्रकारों के अनुरूप अपने आसपास से चुनकर उदाहरण दीजिए–

NOTES

क्र.	**नेता के प्रकार**	**सामुदायिक नेतृत्वकर्ताओं के नाम**
1.	सिंह शैली	
2.	बंदर शैली	
3.	मधुमक्खी शैली	
4.	मां शैली	

अधिक जानकारी के लिए संदर्भ सूत्र

- अन्ना हजारे की जीवनी पढ़ें।
- गांधी जी की आत्मकथा – सत्य के प्रयोग को पढ़ें।

■■■

NOTES

3.2 आंतरिक शासन द्वारा सामुदायिक अगुवाई (Inner Governance and Community Initiation)

उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़कर आप जान सकेंगे कि–

- आंतरिक शासन के मूलभूत सिद्धांत कौन–कौन से हैं।
- स्वयं प्रेरित सामाजिक नेता दूसरे नेताओं से किस प्रकार भिन्न हैं।
- स्वयं के विकास व समाजिक विकास के बीच विरोधाभास के बिना सामंजस्य एवं समन्वय के लिये सहकारी सिद्धांतो की पहचान कर उन्हें कैसे अपनाया जा सकता है।

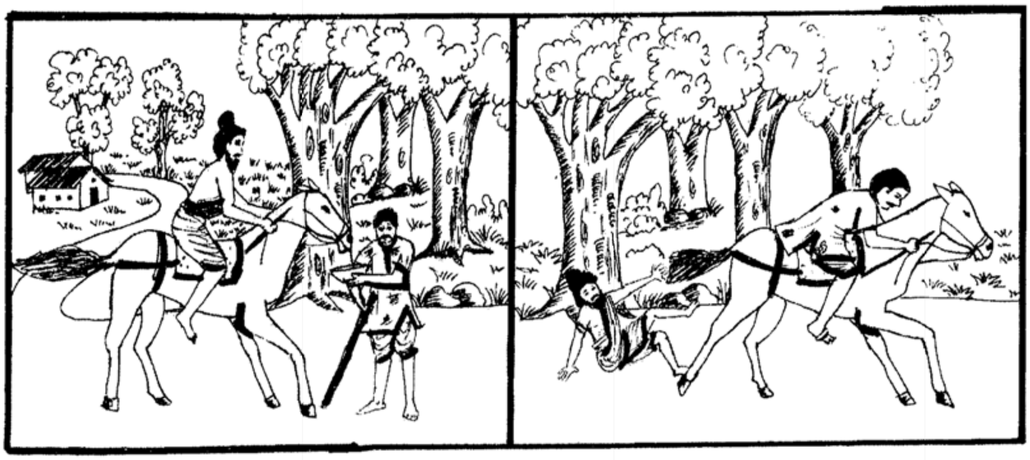
3.2.1 स्वयं की पहचान से संबंधित बुनियादी सिद्धांत (Fundamental Principles of Self-actualization)

सामाजिक क्षेत्र में काम करने के पूर्व यह आवश्यक है कि अपने जीवन से सम्बन्धित पहलुओं पर हमारी जानकारी गहरी और सही हो। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम स्वयं को जाने। स्वयं की पहचान से सम्बन्धित कुछ प्रचलित और प्रेरक कहानियाँ इस उद्देश्य से प्रस्तुत हैं कि यह आपको स्वयं को पहचानने में मदद करेंगी।

अंतर मन की आवाज से मार्गदर्शित होना

हार की जीत

बाबा भारती एक बहुत उदार और मानवतावादी संत थे। उनके पास एक बहुत सुंदर घोड़ा था। वह अपनी रफ्तार और सुदंर डील–डौल के कारण दूर–दूर तक प्रसिद्ध था।



चित्र **3.27** बाबा भारती एवं डाकू खड़्गसिंह

NOTES

एक खूंखार डाकू खड्गसिंह उस घोड़े को पाना चाहता था। इसके लिए उसने एक तरकीब निकाली, बाबा की उदारता का फायदा उठाकर घोड़ा पाने की। एक दिन जब बाबा भारती अपने घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहे थे, तो डाकू खड्ग सिंह अपाहिज और असहाय का भेष बनाकर रास्ते के किनारे बैठ गया और बाबा भारती जब वहाँ से घोड़े पर सवार होकर निकले, तो वह उनसे मद्द मांगने लगा। चूंकि बाबा भारती बहुत उदार थे अतः वे स्वयं घोड़े से उतरे और उन्होंने उस अपाहिज के भेष वाले डाकू को घोड़े पर बैठा दिया और खुद पैदल चलने लगे। घोड़े पर बैठते ही डाकू खड्गसिंह घोड़ा लेकर भागने लगा, तो बाबा ने उससे कहा ''जरा रूको, बस, मेरी एक बात सुनते जाओ, तुम यह घटना किसी को मत बताना नहीं तो लोगों का मानवता और उदारता पर से विश्वास उठ जाएगा और वे किसी की मद्द नहीं करेगे''।

उस समय तो डाकू खड्गसिंह घोड़ा लेकर वहाँ से भाग गया। लेकिन बार–बार उसके कान मे बाबा की यही बात गूंज रही थी कि ''लोगों का मानवता पर से विश्वास उठ जाएगा और कोई किसी की मद्द नहीं करेगा''।

वह घोड़ा पाने की खुशी में अपने ठिकाने पर आकर शांत होकर लेट गया, पर उसे नींद नही आ रही थी, उसे अपने अंदर से एक धीमी सी आवाज आती सुनाई दे रही थी जो कह रही थी कि ''यह तूने बहुत गलत किया है, तुझे ऐसा नहीं करना था।'' उसने गौर किया, यह आवाज कई बार आई। खड्गसिंह समझ गया कि यह उसकी ही अंतरात्मा की आवाज है। अंततः खड्गसिंह ने अपनी अंतरात्मा की आवाज मानी और रात में ही चुपचाप बाबा भारती की कुटिया में जाकर वापस उनका घोड़ा बांध दिया।

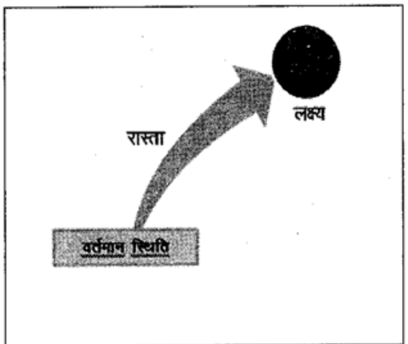
एक डाकू होने के बाद भी खड्गसिंह ने जब अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनी तो उसे अपने किए गलत क़ाम का एहसास हुआ और उसने उसे सुधार कर अपनी गलती का पश्चाताप किया। इसी तरह हर व्यक्ति के अंदर अच्छाई और बुराई दोनों होती है। सभी की अंतरात्मा उन्हें सही निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है। जिसने उसे सुनने का प्रयास किया और मान लिया, उसने अपने आप को जीत लिया। यही आंतरिक शासन है।

3.2.3 आंतरिक शासन की आवश्यकता (Need of Inner Governance)

आंतरिक शासन अर्थात् स्वयं के ऊपर शासन करने की आवश्यकता को हमने हार की जीत कहानी के माध्यम से संकेत रूप में व्यक्त किया है। इसका विस्तार से अध्ययन करना उचित होगा।

3.2.3.1 अपने को समझना

NOTES



चित्र **3.28** विकास की यात्रा

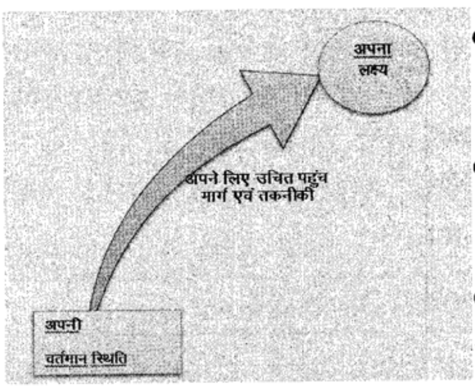
इस रेखा चित्र को स्मरण कीजिए। इसे हम मॉड्यूल–1 विकास की समस्यायें एवं मुद्दे में देख चुके हैं। आईये हम पुनः लक्ष्य की ओर यात्रा को याद करें।

समाज को तो वर्तमान स्थिति से लक्ष्य की ओर जाना है। हमने पहले ही उल्लेख किया है कि गरीब और पिछड़े समूह इसलिए पिछड़े हैं क्योंकि वे खुद अपनी वर्तमान स्थिति को समझ नहीं पाते, न ही अपने लक्ष्य को। पहुँच मार्ग व साधन की पहचान तो उनके लिए और भी मुश्किल होता है। अतः एक नेता की जरूरत होती है– जो उनको वर्तमान स्थिति इत्यादि को समझाये और परिवर्तन की (या मुक्ति) की इच्छा को उन पर पैदा करे।

अब प्रश्न उठता है कि जब संबंधित लोग (हितग्राही समूह) ही अपनी स्थिति नहीं समझ पाते तो सही पहचान (सम्भवतः बाहर से आये हुए) नेता द्वारा कैसे हो सकता है ?

यदि स्वयं प्रेरित सामाजिक नेता अपने खुद के विकास करने में असमर्थ है–तो दूसरों को विकास का रास्ता कैसे बता पाएगा।

तब यह अनिवार्य है कि नेतृत्व करने वाला व्यक्ति को खुद में परिवर्तन या विकास को लाने का अनुभव हो।



चित्र **3.29** अपने विकास पर चिन्तन

- मेरी वर्तमान स्थिति क्या है ?
- मेरा लक्ष्य क्या है ?
- मेरा पहुंच मार्ग व तकनीक क्या है?

ये सब प्रश्न अपने बारे में हैं। अपने को ही उत्तर देना है। ये तभी सम्भव है जब व्यक्ति अपने अंदर स्थित शक्ति को देखने की क्षमता रखता है। मतलब अपने अन्दर की संरचना समझने की क्षमता रखता है। यह तो अंदर की बात है। अपने को कैसे समझें ? और इसके लिए अपने अंदर का भ्रमण कैसे शुरू करें ? अपनी संरचना को किस रूपरेखा के आधार पर समझें ? और अपनी वर्तमान स्थिति (Fig 3.2.3 b) से पूरी तरह से अवगत हो जाये। आईये आगे बढ़ें :

NOTES

स्वयं में तो–(क) शरीर है, (ख) चिन्तन करने वाला मन है और है, (ग) अपने समझ के सहायक के रूप में एक मूल्य प्रणाली (Value System) –जिसके आधार पर कोई भी विचार या परिस्थिति मान्य या अमान्य होती है या उसका मूल्य निर्धारण होता है। अब पहले वर्तमान स्थिति को समझने में, शरीर की स्थिति, मन की गति (प्रक्रिया) की शैली एवं मूल्य प्रणाली को आधुनिक समझ के आधार पर निम्नांकित रूप में वर्णित किया जा सकता है–

तालिका 3.2.3.d शरीर मन और मूल्य प्रणाली

शारीरिक स्थिति	सात्विक	पवित्र एवं अच्छी भावनाओं के अनुकूल रहने वाली शारीरिक स्थिति
	तामसिक	गतिशीलता को धीमी करने वाली जड़ता पूर्वक शारीरिक स्थिति
	राजसिक	जुनून एवं गतिशीलता के अनुकूल शारीरिक स्थिति
मानसिक स्थिति	माँ बाप की भावना (parental psych)	पहले की मान्यताओं पर ही चलने की आदत
	बच्चे की भावना (child psych)	जिज्ञासा एवं नतीजों को नजरअंदाज करके कार्यो में कूदने की आदत
	वयस्को की भावना (adult psych)	दोनो के बीच का एक संतुलन जिसमें सतर्कता की भूमिका होती है।
व्यक्ति के खुद के संचालन को प्रभावित करने वाली मूल्य प्रणाली	विश्वावलोकन (world view)	परिस्थिति को समझने की परिपाटी
	मान्यताएं (belief system)	जिसको सही समझतें हैं
	नैतिकता; मापदण्ड; प्राथमिकता (moral/ethics ; standards; priorities)	आचार (व्यवहार)को मार्गदर्शित करने वाले सिद्धांत/आदर्श/अधिक महत्वपूर्ण.

NOTES

इस तालिका के आधार पर अपनी वर्तमान स्थिति को समझना काफी आसान है। आइये इसका अनुभव करें :

- **शारीरिक स्थिति** : पिछले कुछ समय के अनुभव के विश्लेषण के आधार पर यह समझ में आता है कि क्या मैं अपने योजना के अनुसार आगे बढ़ पा रहा हूँ? नहीं तो मेरी शारीरिक स्थिति के कारण कुछ बाधा तो नही आ रही है ?

  जैसे– मैं सुबह उठकर ब्रम्ह मुहूर्त में बैठ कर कुछ पठन–पाठन एवं चिन्तन मनन करना चाहता हूँ परन्तु कभी सुबह आठ बजे से पहले उठ ही नहीं पाता फिर मैंने पाया कि मैंने रात में देरी से गरिष्ठ भोजन किया, टीवी को देखता रहा, और टीवी तथा लाईट को बन्द किए बिना ही सो गया। नतीजा– आठ बजे तक सोता रहा। अब इस छोटे से विश्लेषण द्वारा मुझे कारण व परिणाम (cause & effect) का रिश्ता समझ में आ गया और अपनी स्थिति के बारे में जानकारी हो गई। एक बार जानकारी हो जाने पर यह समझना आसान हो जाता है कि वांछित स्थिति क्या है ?

  संक्षेप में कहें तो–

  – मेरे आहार

  – मेरे व्यवहार एवं

  – मेरी जीवन शैली (life style)

से संबंधित तथ्यों को कहां से कहां ले जाना है? यह आसानी से समझ में आ जाता है। बस थोड़ा बहुत योग सिद्धांत व अभ्यास जो वर्तमान में विश्व मान्य विज्ञान है, को अपनाना पड़ेगा। युवकों के मार्गदर्शक एवं उर्जा देने वाले महान दार्शनिक विवेकानंद की योग संबंधित पुस्तकें आपको काफी शक्ति और पथ प्रदर्शन प्रदान करेगीं।

इस संदर्भ में योग दर्शन के प्रणेता महर्षि पातंजलि के द्वारा योग की परिभाषा दी गयी है कि : **"योग चित्तवृत्तियों (मन) पर नियंत्रण है।"**

अंतर में प्रवेश करने पर चित्तवृत्तियों पर नियंत्रण स्थापित हो जाता है, जिससे सही–गलत की पहचान करना आसान हो जाता है।

जब हम बोलते हैं कि 'उचित व्यवहार सुनिश्चित किया जा सकता है'–कुछ भ्रामक स्थिति पैदा हो सकती है। एहसास ऐसा होता है, मानों आदमी

एक कुशल अभिनेता की तरह विभिन्न भावनाओं को और व्यवहारों को प्रदर्शित करके समाज को सँभालता है।

NOTES

किन्तु यहां उचित व्यवहार से मतलब है सच्चा बर्ताव। यह अंतर्मन की परिपक्वता के कारण निकलता है। लेकिन अंतर्मन की सच्ची परिपक्वता तभी होती है जब अपने अंतःकरण या मन को बाहर की सच्चाई के साथ सम्पर्क रखने की स्थिति हमेशा बनी रहे ताकि सच्चाई से अलग हुई कोई बात अंदर घुस कर मानव की मानसिकता को प्रदूषित न करे। माँग यह है कि अंदर और बाहर की एक रूपता को बनाए रखने की कला को सीखा जाये। जब इस कला को सीखा जाता है तो व्यक्ति का अंतःकरण शुद्ध हो जाता है और उसको अपने वर्तमान स्थिति लक्ष्य और रास्ता संबंधी विवरण को समझना आसान हो जाता है।

धर्म क्या है ?
परहित सरिस धर्म नहि भाई **पर पीड़ा सम नहीं अधमाई** **गोस्वामी तुलसीदास जी का कथन है दूसरों का हित करने से बड़ा कोई धर्म नहीं और दूसरों को पीड़ा पहुंचाने से कोई बड़ा पाप नहीं है।**
चित्र **3.30**

संक्षेप में उक्त सच्चाई की खोज के अभियान में

– अंदर और बाहर की एकरूपता होनी चाहिये।

– अपने और समाज के बीच में सामंजस्य एवं समन्वयन कायम करना है।

और इस प्रयत्न के लिए

– शरीर और मन के बीच समन्वयन स्थापित करना है ताकि मन की कल्पना को जमीन पर उतारने की क्रियाशक्ति शरीर में विद्यमान हो जाये।

परन्तु ये सब जोड़ने वाले कार्य हैं और इसके लिए हमें शायद योग का संदर्भ अपनाना पड़ेगा। अंदर–बाहर की एकरूपता को समझने के लिए निम्नांकित कहानी प्रस्तुत है–

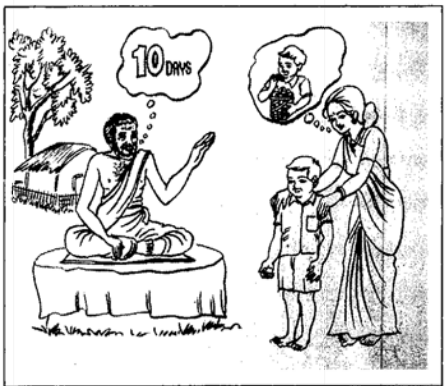
हम सुधरे तो सब सुधरे, हम बदले तो युग बदले

यह कहानी गौतम बुद्ध, रामकृष्ण परमहंस, महात्मा गांधी, रमण महर्षि इत्यादि से जोडकर लिखी जाती है : लेकिन बात आसान है।

NOTES

एक माँ ने रामकृष्ण के पास आकर अपने बच्चे की शिकायत की : "महराज! मेरा बच्चा हमेंशा शक्कर खाता रहता है। मैं चाहतीं हूं कि उसे आप समझाये कि वह शक्कर खाना छोड़ दे।"

रामकृष्ण ने उस महिला को 10 दिन बाद आने को कहा। जब महिला 10 दिन बाद बच्चे को लेकर आई तो उसको श्री रामकृष्ण द्वारा उद्‌बोधन हुआ : "बच्चे आज से शक्कर न खाया कर।" बच्चे ने हामी भर के शीश नवाया।



चित्र **3.31** शक्कर मत खाओ।

जाने के पहले माँ ने नम्रता से पूछा– "महराज यह बात अगर 10 दिन पहले बोल देते तो, वह अब तक सुधर गया होता। मुझे समझ में नहीं आ रहा कि आपने इतनी छोटी सी बात बताने के लिए 10 दिन का समय क्यों लिया ?"

तब रामकृष्ण बोले– "असल में मुझे भी शक्कर खाने की आदत थी। मैं यह देखना चाहता था कि मैं 10 दिनो के लिये शक्कर खाना बंद कर सकता हूं क्या ? इसलिये 10 दिनो के बाद आने को कहा।"

मूल्य क्या है ?

मूल्य को जीवन में सामाजिक और आर्थिक संदर्भों में अलग–अलग समझ सकते हैं। मूल्य को गहराई से समझने के लिए यहाँ हम एक रोचक कहानी प्रस्तुत कर रहे हैं।

थोड़ी सी धूप

जब सिकन्दर भारत आया और एक साधु को बैठे देखा, उसके सामने खड़े होकर पूछने लगा:

"मांगो, तुम्हें क्या चाहिए।"

सिकन्दर ने सोचा होगा कि वह पैसा, मकान, कपड़ा आदि मांगेगा।

साधु बोले :"थोड़ा–सा हट कर खड़े हो जाओ ताकि सूरज की किरणें पहले की तरह मुझ पर गिरती रहें।"

अब देखिए धन, दौलत, मकान,कपड़े आदि सिकन्दर के मन में मूल्यवान चीजें थी, जबकि साधु के सामने वे धूल के समान थीं।

NOTES

(कहानी तो कुछ आगे भी चलती है, यद्यपि हमारे संदर्भ में उतना महत्वपूर्ण नहीं है। असल में सिकन्दर बहुत नाराज हो गया और कहने लगा कि वह साधु को मार भी सकता है। तो साधु जोर से हंसे और बोले : "तुम मुझे शरीर समझ रहे हो, जबकि मैं आत्मा हूं और मेरे आत्मा को मारने की शक्ति तुम में नहीं है।" इस कथन से सिकन्दर को बड़ा धक्का लगा। अंत में जब वह बीमार होकर मरने की स्थिति में था तब उसने आदेश दिया कि जब अंतिम संस्कार के लिए उसका शव ले जाया जाये तो दोनों हाथों को ताबूत के बाहर रखा जाये, जिससे सब यह सीख ले सकें कि विश्वविजेता सिकंदर भी इस दुनिया से खाली हाथ ही गया।

व्यावहारिक शिक्षा का मूल्य



चित्र **3.32** "तैरना भी नहीं सीखा ?

एक नाविक एक पंडित को नदी के एक किनारे से दूसरे किनारें की ओर ले जा रहा था। पंडित जी पूछने लगे: "भाई तुमने वेद पढ़ा है ?" तो उसने कहा नहीं। तब पंडित जी बहुत ही तिरस्कार से बोले: "तुमने वेद नहीं पढे तो तुम किसी लायक नहीं हो। तुमने अपने जीवन को बर्बाद किया है– जिसके कारण तुम इस संसार सागर को पार नहीं कर पाओगे।"

कुछ समय के बाद तूफानी लहरों में नाव डगमगाने लगी और पूरी सम्भावना थी कि वह पलट जाएगी। नाविक न पंडित जी से पूछा कि आप तैरना जानते हैं? जब उन्होने नहीं बोला तो नाविक को कहना पड़ा : "तैरना भी नहीं सीखे? अपने जीवन को बर्बाद कर दिया तुमने– क्योंकि तुम अब इस नदी को भी पार नहीं कर पाओगे" और वह नांव से कूद गया।

NOTES

काला अक्षर भैंस बराबर

एक संगीतकार विद्वान अकेले रहते थे, और उनके साथ एक पहरेदार काम करता था। एक दिन विद्वान स्वर्ग सिधार गए और पहरेदार उस घर का मालिक बन गया। ठंड को मिटाने के लिए रात में लकड़ी जल रही थी। जब लकडियां खत्म हो रही थीं, तो आग को बनाये रखने के लिए पहरेदार ने वीणा को उठाया और आग में डाल दिया। जब वह अच्छा जलने लगा, तो वह बहुत खुश होकर नाचने लगा।



चित्र **3.33** बहुत अच्छा जलता है।

ऊपर की तीनो कहानियो पर विचार करें :

- सिकन्दर के मन में धन दौलत बहुत मूल्यवान थी। परन्तु साधु के मन में उसका कोई मूल्य नहीं था।
- पंड़ित जी के लिए वेद बहुत मूल्यवान था क्योंकि वह संसार सागर पार करने में उपयोगी है, परन्तु नदी को पार करना ही नाविक के मतलब की चीज थी। वेद पाठ पढने का कोई मायना नहीं रहा।
- संगीत विद्वान के लिए अपनी वीणा अमूल्य थी, परन्तु पहरेदार की दृष्टि में उसका मूल्य लकड़ी के बराबर ही था।

कुल मिलाकर "अच्छा–बुरा" "मूल्यवान–महत्वहीन" इस प्रकार के निर्णय, हर व्यक्ति जीवन के हर क्षण में लेता है। ऐसे निर्णयों के आधार पर ही अपना तात्पर्य निकालता है।

समाजिक नेता के लिए बहुत जरूरी होता है कि वह समझे कि : " क्या जिस समाज के लिए मैं काम करने जा रहा हूं, उनकी समस्यायें किसी गलत मूल्यों के कारण तो नहीं है ?

उदाहरण के लिए, हाल ही में भारत सरकार के योजना आयोग द्वारा एक रिपोर्ट आई। जिसमें बताया जाता है कि कभी–कभी आदिवासी जन अपने आस–पास के संसाधनों का मूल्य नहीं जानते। इसका लाभ उठाकर कुछ व्यापारी लोगों द्वारा उनकी वस्तुओं को 400 गुना तक कम दाम में खरीदे जाने की सूचनायें मिली हैं।

आइये विचार करें कि मूल्य संबंधित धारणायें उपरोक्त व्यक्तियों में कहाँ से आयीं ?

- ☞ सिकंदर को पाश्चात्य सभ्यता ने दिखाया होगा तो साधु को पूर्वी सभ्यता (जिसमें जब नरेश को 'राजा' बोलतें हैं तो साधु संतों को महाराज कहकर संबोधित करते हैं और नरेश को संतो के पैर छूना पड़ता है। इसका मतलब धन–दौलत के मालिकों की तुलना में धन दौलत को त्यागनेवालों का महत्व ज्यादा है।
- ☞ पंड़ित जी को अपने धर्म द्वारा नीति का ज्ञान मिला होगा जबकि नाविक को व्यवहारिक जीवन से मिला होगा।
- ☞ पहरेदार को उनके अज्ञान के कारण और जीवन संदर्भ के कारण मूल्य संबंधित धारणायें आई होंगी।

NOTES

इसको और भी जरा गहरे ढंग से समझना सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिये आवश्यक है।

संस्कार की धरती में खिलते हैं – मूल्य के फूल

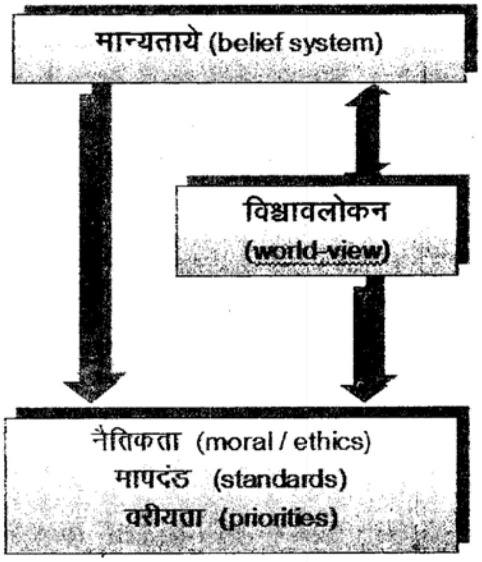
एक मछुआरिन की एक मालिन (फूलों से हार बनानेवाली) से गहरी दोस्ती थी। एक दिन मछुआरिन, मालिन के घर गई तो गप–शप में रात हो गई। मालिन ने आग्रह किया कि वह उसी के घर ठहर जाये। रात में मछुआरिन बहिन को नींद नहीं आयी। कारण ? चारों ओर फूल और उसके कारण कमरे में फैली हुई 'दुर्गन्ध'। (!)

अंत में समस्या का हल कैसे हुआ ? मछुआरिन की मछली की टोकरी बाहर रखी थी। वह टोकरी अंदर लाई गई। उसमें कुछ पानी छिड़का गया। अब उससे ''सुगंध'' आने लगी और मछुवारिन खर्राटे के साथ सोने लगी।

संस्कार के अंश ज्यादातर कहाँ से आते हैं ?

उपरोक्त कहानी से स्पष्ट है कि हमारे संस्कार, हमारे परिवेश और वंशानुगत व्यवहार से आते हैं। यही कारण है कि जो वातावरण एक व्यक्ति के लिए अनुकूल होता है, दूसरे के लिए प्रतिकूल हो जाता है।

NOTES



चित्र **3.34** मूल्य प्रणाली (value system)

धर्म का आधार क्या है ?

मान्यातायें : (belief systems)

अपनी मान्याताओं के अनुकूल होने वाले धर्म से साधारणतया आदमी जुड़ता है;

इसके उल्टे अपने परिचित धर्म के आधार पर ही उसकी मान्यतायें भी बनती हैं।

इन दोनों के आधार पर ही उसका विश्वदृष्टि विश्वावलोकन (world-view) या नजरिया बनता है। संसार को देखने, समझने की उसकी दृष्टि विकसित होती है– जिसे विश्व दृष्टि या विश्वावलोकन भी कहते हैं।

इस चित्र में दर्शाया गया है कि विश्वावलोकन से "मूल्य" कैसे संबंधित हैं ? तथा ये सब मिलकर एक प्रणाली (system) के रूप में व्यक्ति की मानसिकता एवं व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

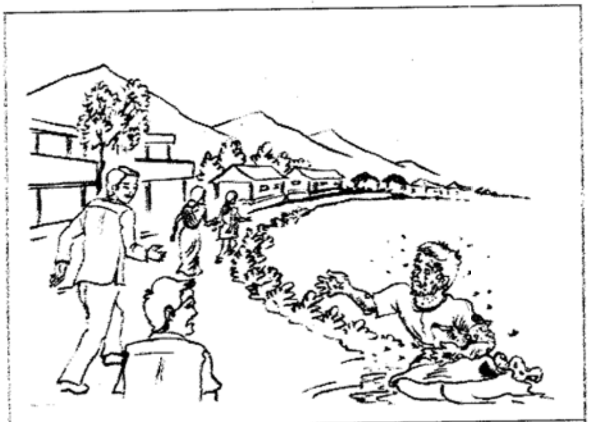
उदाहरण :

हर धर्म की मान्यता है कि

- पूर्व में किये गए गलत कार्यो को आप वर्तमान में भुगत रहे हो या भविष्य में भुगतना होगा। ऐसी मान्यतायें मानव व्यवहार को अवश्य प्रभावित करती हैं।

उदाहरण 1 :

मान लीजिये कि कुष्ठ रोग से पीड़ित एक व्यक्ति रास्ते के किनारे पड़ा है और पीड़ा के कारण रो रहा है और भूख और प्यास से भी पीड़ित है। अनेकों ऊपर दर्शित मान्यता वाले, व्यक्ति उस रास्ते से गुजरते हैं– रोगी को बिल्कुल नज़रअंदाज़ करते हुए।



चित्र 3.35 वह अपना कर्म भुगत रहा है

इसका कारण यही हो सकता है कि उनके मन में है कि ''वह अपने किये हुये पापों का नतीजा भुगत रहा है; उसको तो यह होना ही है; इसका कोई विकल्प नहीं। इसको राहत पहुँचाने से शायद मैं उसके कर्म फल में बाधा पहुँचाउँगा; अतः मुझे कुछ करना उचित नहीं होगा''– इस प्रकार के विचार चल सकते हैं।

NOTES

यदि कोई मान्यता या विचारधारा उस व्यक्ति के मन में नहीं है, तो संभवतः वह एक प्रकार के नैसर्गिक करूणाभाव से प्रभावित होकर पीड़ित व्यक्ति की सेवा में लग जायेगा।

उदाहरण 2 :

छत्तीसगढ़ के कुछ इलाकों में और मध्यप्रदेश के भी कुछ क्षेत्रो में ''डायन'' की प्रथा प्रचलित है– जिसके कारण दर्जनों महिलायें आज भी प्रताड़ित की जाती हैं। पत्थर से मारी जाती हैं। आग से जलायी जाती हैं। उसका कारण : लोगों द्वारा यह मानना है कि कुछ लोग ''जादू टोना'' कर बुराई करनेवाले पिशाचों को दूसरों के ऊपर भेज सकते है और उनको नुकसान पहुँचा सकते हैं।



चित्र 3.36 डायन नामक असभ्य प्रथा

जैसे गाँव में कुछ बच्चे बीमार पड़ गये। कोई कहता है : ''अमुक महिला एक डायन है, उसका जादू टोना ही बीमारी का कारण है।''

अब गाँव के लोग पंचायत बुला लेते हैं। चूँकि सबके मन में इस प्रकार की मान्यता है– अंत में निर्णय हो जाता है उस ''डायन'' को जलाने का, पत्थर से मारने का, गाँव से भगाने का इत्यादि ....

अब मान लीजिये: गाँव में यह मान्यता नहीं होती कि डायन होती है तो न इस प्रकार का निर्णय पंचायत में होता, न ही कोई महिला मारी जाती।

NOTES

टीप : पाठक यह न मानें कि यह मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में ही होता है। यूरोप में भी यह प्रथा उन्नीसवीं सदी में भी प्रचलित थी जिसके कारण हजारों भोले–भाले लोगों को, खासकर महिलाओं को, मरना पड़ा।

कारण : पुराने जमाने में विज्ञान विकसित नही था। उदाहरण के लिये, गाँव के नमीवाले क्षेत्रों में कभी–कभी रात में कुछ जलने लगता है। तो लोग मान लेते हैं कि : वहाँ कुछ पिशाच तो जरूर होते हैं। नही तो ऐसे खुद कैसे दीप जल सकता है ? आजकल सब जानते हैं कि मिथेन (methane) नाम की गैस का उत्पादन होता है कुछ पदार्थों के सड़ने से। उस पर आग स्वतः लग जाती है। इस प्रकार पुराने जमाने में जादू–टोना, पिशाच इत्यादि को लेकर जो मान्यतायें थीं इन सब मिथ्याओं का असली कारण अब हम जान चुके हैं। परन्तु जिस क्षेत्र में शिक्षा का अभाव है, इस प्रकार की मान्यतायें जारी रहना स्वाभाविक है।

यह ऊपर का विश्लेषण समाजसेवक की दृष्टि से महत्वपूर्ण है –क्योंकि उसको तो पूरी पृष्ठभूमि के अलावा अद्यतन विज्ञान का संदेश भी जानना जरूरी है। नहीं तो वह इस प्रकार की समस्याओं का समाधान ढूँढ नहीं पायेगा।

कुछ गलत मान्यताओं के कारण (वे जहाँ से भी आये हों) मानव को कई त्रासदियों का सामना करना पड़ा– जैसे :

हिटलर के मन की मान्यता कि "आर्य वंश ही सर्वोच्च है"	• **कई करोड़ यहूदियों का कत्ल** • **विश्व युद्ध**
आदमस्मिथ (Adamsmith) की मान्यता कि किसी की बुराई से ही किसी और की भलाई हो सकती है।	• **पाश्चात्य देश विश्व के कई देशों को अपने कालोनी बनाके शोषण बनाने के लिये यह कारण बना**

अब देखें विश्व दृष्टि क्या होती है :

हर मानव पैदा होता और सामाजिक एवं नैसर्गिक पर्यावरण में जीता है। उसके मन में दर्जनों प्रश्न उठते हैं जिसका जब तक कुछ न कुछ उत्तर नहीं मिलता तब तक वह आगे बढ़ नहीं सकता है। अब यह "कुछ न कुछ उत्तर" अंतिम सत्य के आधार पर नहीं हो सकता क्योंकि अंतिम सत्य की खोज तो अभी भी जारी है। अतः हर मानव, हर समूह अपनी मान्यता और उससे तालमेल रखनेवाले विश्व दृष्टि को लेकर आगे बढ़ता है।

पाठकों को पता लगा होगा कि उक्त शैली के जेर्मानिक या स्कैंडिनेवियन पुराण अन्य कई देशों और धर्मो के पुराणों और मान्यताओं से कहीं मिलता है और कहीं अलग भी है। यही कारण है कि अलग–अलग मानव समूहों में भिन्न–भिन्न मान्यतायें एवं विश्व दृष्टि पाये जाते हैं।

3.2.2 सामाजिक नेतृत्व के सन्दर्भ में स्वयंसेवक की अवधारणा (Concept of Volunteer in Context of Social Leadership)

NOTES

स्वयं प्रेरित सामाजिक नेता और अन्य नेताओं के बीच अन्तर करने वाला प्रमुख तत्त्व है स्वयंसेवक की अवधारणा। आइये इसे विस्तारपूर्वक समझने का प्रयत्न करते हैं। हमने मुख्य रूप से दो प्रकार के नेतृत्व के बारे में पूर्व में पढ़ा–(1) सत्ता आधारित शासक नेतृत्व (rulership) और (2) पथ प्रदर्शक नेतृत्व : leadership (leading through action)

आम जनता तो पहले को ही नेता के नाम पर जानती है, इसलिए लोगों के बीच नेता वह है, जिसके पास अनुयायी हैं। नेता वह है जिसके पास शक्ति है। नेता वह है जिसके पास प्रभाव है इत्यादि। इस प्रकार के नेतृत्व सत्ता को पकड़ने और उसको बनाये रखने पर ही जोर देता है। सत्ता वाले नेता कई नीति और नियमों को बनाते हैं, इस्तेमाल करते हैं और उसके द्वारा अन्य लोगों पर नियंत्रण रखते हैं। यहाँ अपने ऊपर नियंत्रण रखने का सवाल ही नहीं उठता। परन्तु यह पाठ्यक्रम तो स्वयं प्रेरित सामाजिक नेताओ के बारे में है। ये अपने अभियान में तभी सफल होंगे जब ये समाज के सदस्यो के **दिल पर शासन** कर सकने की क्षमता रखते हों। **दिल पर शासन तभी सम्भव है, जब प्रेम, परानुभुति परोपकार, त्याग आदि गुणों से नेता सुशोभित हो।**

सामाजिक विकास के नेता तभी सफल होंगे, जब अपने जीवन द्वारा अपना संदेश देंगे और आत्मशासन व स्वशासन द्वारा समाज के हृदय परिवर्तन एवं व्यवस्था परिवर्तन में कामयाब होंगे। **हाँ "अपने ऊपर नियंत्रण, औरों के लिए अगुवाई"** Rulership on self;Leadership to the community

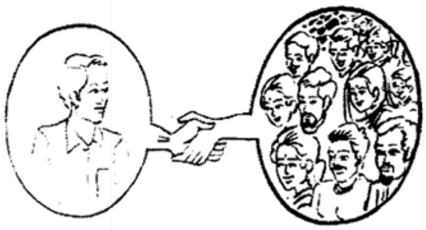
अब प्रश्न उठता है कि अपने ऊपर कैसे नियंत्रण रखा जाए ताकि समाज सेवा एवं समाज परिवर्तन के मार्गदर्शक की भूमिका निभाना संभव हो। आईये इस गम्भीर प्रश्न का उत्तर ढूंढे :

3.2.3.2 योग की आवश्यकता :

NOTES

"योग" शब्द का अर्थ है : जोड़ना। किसको जोड़ना ?





चित्र **3.37 शरीर ओर मन को जोडना; अपने को समाज के साथ जोडना**

- शरीर और मन को ज़ोड़ना (याने समन्वयन लाना)
- व्यक्तिं और समाज को जोड़ना
- कथनी और करनी को जोड़ना इत्यादि।

यह जोड़ने वाली चीज असल में है क्या ?

वह है, 'सत्य' जो बिना रस्सी बांधने वाला एक औजार है। कैसे ?

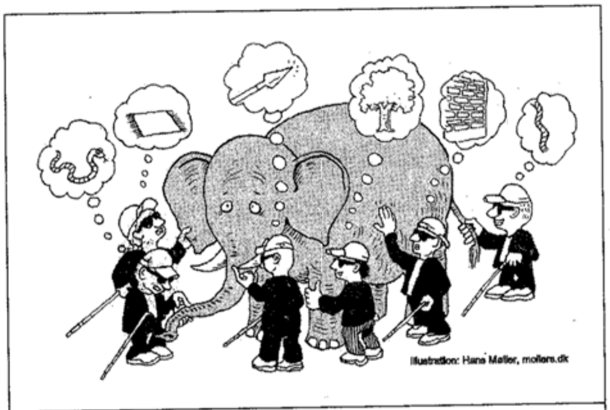
जैसे अपने विश्लेषण द्वारा किसी निर्णय व निचोड़ पर पहुँचा परन्तु उस निर्णय को ईमानदारी से व्यक्त न करके कुछ और जोड़–घटाकर बताया (मतलब असत्य बोला)। तब मुझे यह आवश्यक हो जाता है कि मैं अपनी झूठी बात को हमेशा याद रखूं, ताकि अगली बार दूसरी नई बात न कह डालूँ। (जैसे किसी ने आपकी उम्र जाननी चाही; आपने घटा के बोल दी– तो इसको आपको कहीं नोट करके रखना पड़ता है ताकि आप अगली बार उसी झूठ को दोहरा सकें। यानि मन ओर दिमाग पर एक और अतिरिकत बोझ इस झूठ को याद रखने का) जबकि यदि सच बोला तो कहीं नोट करने व याद रखने की जरूरत नहीं होती। वह हमेशा एक ही रहेगा।

उक्त बात (कि 'सत्य जोड़ता है') उतना स्पष्ट नहीं है। हम कम से कम आपको समझा पायेंगे कि असत्य (या अपूर्ण ज्ञान) समाज को बांट सकता है।

इसको समझाने के बदले हम समझायेंगे कि कैसे असत्य या अपूर्ण ज्ञान लोगों को बांटता है।

NOTES

हाथी को समझनेवाले अंधे लोग हकीकत को पूर्ण रूप से न देख पाने से अपने बीच में बंट जाते हैं :



चित्र **3.38 हकीकत को पूर्ण रूप से न देख पाने से अंधों का समाज बंट गया।**

- हाथी को दीवार जैसे मानने वाला समूह;
- हाथी को पेड़ का तना माननेवाला समूह;
- हाथी को सांप जैसे माननेवाला समूह;
- हाथी को रस्सी मानने वाला समूह और
- हाथी को सूपा जैसे माननेवाला समूह

हमने देखा कि असत्य से (या अपूर्ण ज्ञान से, या पूर्वाग्रह से बाधित होकर देखने से) कैसे समाज बंट सकता है। उदाहरण के लिए एक सत्य को विविध धर्म अपने–अपने तरीके से बताते हैं, जिससे समाज में विघटन की स्थिति पैदा होती है।

यदि सत्य साबित हो गया और उसके साथ ही प्रेम नामक बांधने वाली शक्ति भी मिल गई तो यह सोने में सुहागा का काम करता है। प्रेम दूसरों के दिल का दुख और शरीर की पीड़ा को समझने की शक्ति देता है। त्याग और सेवा का मार्ग दिलाता है।

नरसी मेहता का भजन–वैष्णव जन तो तेने कहिये जो पीर पराई जाने रे। इसी सद्‌विचार की अभिव्यक्ति है।

उपरोक्त वर्णन से हमने जोड़ने वाले परानुभूति नामक अद्‌भुत तथ्य को भी समझ लिया। हॉ, सत्य, प्रेम, और परानुभूति जोड़ने वाले मूल्य हैं और इन मूल्यों के संयुक्त योग से स्वयं प्रेरित सामाजिक नेता का जन्म होता है।

3.2.3.3 स्वप्रेरित समाजिक नेता का स्वयंसेवी बनना

इसलिए कि, वह अपनी प्रेरणा से जिम्मेदारी ले लेता है। (क्या किसी को आदेश दे सकते हैं कि : "फलाने व्यक्ति से प्रेम करो"?; नहीं क्योंकि प्रेम आदेश से नहीं स्वेच्छा से होता है) पर यह प्रेरणा स्वयं से कैसे आ जाती है ? यह तो

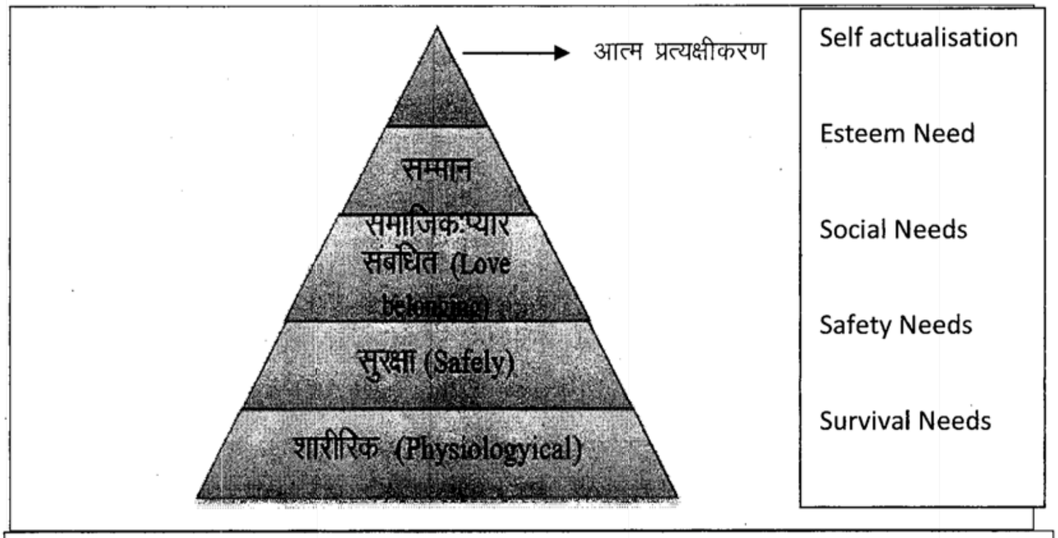
नैसर्गिक तथ्य है और विकास की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ नैसर्गिक तथ्य भी है। कैसे ?

NOTES

विकास शृंखलाबद्ध है। जब जलवायु व जमीन की स्थिति अनुकूल है तो बीज उगता है। जब पौधा काफी पनप गया तो फूलता है। उसी प्रकार किसी व्यक्ति में सही विकास और अतिरिक्त शक्ति विद्यमान है तो वह अपने जिन्दगी के अगली सीढ़ी पर कदम रखता है। वह अगली सीढ़ी क्या है ?

मेस्लो का मांग पदानुक्रम सिद्धांत (Maslow's theory of need hierarchy)

व्यक्तियों एवं सामाजिक परिस्थितियों के परीक्षण से मेस्लो ने एक सिद्धांत बनाया है जिसके अनुसार मनुष्य की मांगें अनेक होती हैं और उनके बीच का एक पदानुक्रम होता है। जैसे त्रिकोण रूपी तालिका में दर्शाया गया है।

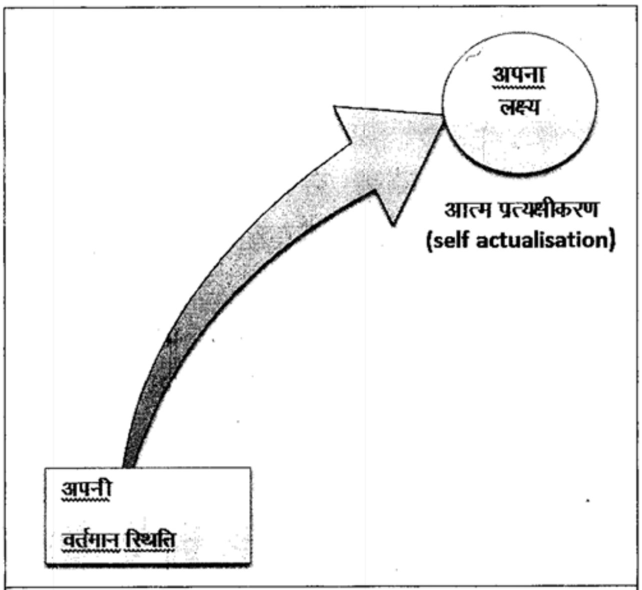


चित्र **3.39 मेस्लो का मांग पदानुकम सिद्धांत**

- पहले शारीरिक मांगें
- दूसरा सुरक्षा संबंधित मॉगें
- फिर सामाजिक आवश्यकतायें– जैसे, प्यार की मॉग, सम्पर्क और संबंध की मॉग।
- फिर सम्मान की मॉग और अंत में
- आत्म प्रत्यक्षीकरण (खुद में जो संभावना है उसको वास्तविक रूप में देखने की चाहत)

उक्त विश्लेषण महत्वपूर्ण है :

यह बताता है कि स्वयं प्रेरित समाजिक नेता (Community Volunteer Leader) का जीवन आत्म प्रत्यक्षीकरण की ओर बढ़ रहा है (जैसे हर जीव का भी)। अतः उसको समाजिक सेवा एवं विकास कार्य करना स्वाभाविक है। ऐसा किये बिना उससे रहा नहीं जाता। जैसे–एक माँ का अपने बच्चे के प्रति स्नेह व आत्मीय जुड़ाव होता है। वह उसका भूख व प्यास का ख्याल कर, बिना बच्चे के बोले खुद ही समझ जाती है अर्थात खुद ही प्रेरित होकर उसे दूध पिलाती है। (बच्चा आवेदन नहीं भेजता : हे माँ! मुझे 100 सीसी दूध पिलाओ)



चित्र **3.40 पूर्णता की ओर यात्रा**

NOTES

एक पेड़– सही ढंग से विकसित होने पर और सही खाद, पानी, रोशनी आदि के मिलने पर फल देना ही उसकी स्वाभाविक प्रक्रिया है।

दूसरे ढंग से हो नहीं सकता। क्योकि ये स्वपूर्ति के लिए होने वाले कार्य हैं। आत्म प्रत्यक्षीकरण (self-actualisation) का मामला है। याने खुद में जो सम्भावनायें हैं, उसको वास्तविक रूप में देखनेवाला संदर्भ है।



चित्र **3.41 हे !मछली तुम्हें कितना ठंड लगती होगा।**

किसी स्वयंसेवक के कार्य को देखकर

ज्यादा प्रभावित होकर तारीफ करना उतना ही हास्यप्रद है, जितना जल में मछली को दुखी होता देख के पछताना कि 'हे ! प्यारी मछली तुम्हें कितनी ठंड़ लगती होगी'। क्योकि उनका स्वभाव है, इसके बिना वह जिन्दा नहीं रह सकतीं।

मेस्लो का सिद्धांत, सांख्यिकी एवं शोध पर आधारित है एवं करीब–करीब पूरे विश्व में मान्य है। इस सिद्धांत से यह स्पष्ट हो रहा है कि: एक स्तर से दूसरे स्तर पर जाने के लिए जो नैसर्गिक स्व–प्रेरणा है वही विकास का मूल मंत्र है। इसे ऊपर की तरफ की गतिशीलता (ऊर्ध्वमुखी गति; upward mobility) कहते हैं।

NOTES

सही गतिकी (प्रक्रिया) के लिए :

– व्यक्ति के आनुवांशिक संरचना (genetic structure)
– पोषण (nurture) और
– पर्यावरण (environment)

तीनों जिम्मेदार हैं।

एक प्रश्न हो सकता है :

क्यों हर व्यक्ति एक स्वयंप्रेरित समाज नेता नहीं बनता ?

इसका उत्तर तब मिलेगा जब हम मूल्य प्रणाली (value system) पर ज्यादा चर्चा करेंगे।

अब निम्न महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं :

3.2.3.4 क्या स्वयं प्रेरित समाजिक नेता अपने विकास (शारीरिक एवं हुनर विकास) के लिए ध्यान दे सकता है ?

उसके लिए मार्गदर्शक सिद्धांत क्या होगा ?

एक उदाहरण लें :



चित्र **3.42 एक सामाजिक नेता कितना दुर्बल है।**	चित्र **3.43 एक सामाजिक नेता कितना शक्तिशाली है।**

एक माँ है जो अपने बच्चों के लिए उपलब्ध पूरा खाना दे देती है और खुद का खाना नहीं के बराबर। अंत में वह इतना कमजोर हो जाती है कि बच्चे को पिलाने के लिए उसके स्तन में दूध भी नहीं है, और बच्चे को उठाने के लिए हाथ में शक्ति भी नहीं है। उस माँ की यह सोच होनी चाहिए : मेरे लिए सही भोजन आवश्यक है, नहीं तो मेरे बच्चे को नहीं बचा पाऊँगी।

NOTES

मान लीजिए एक सेवा का भाव रखनेवाला एक सच्चा सेवक शारीरिक स्तर पर इतना दुर्बल है कि उसका खड़ा होना भी मुश्किल काम है।



चित्र **3.44** बस के चालक एक नेता के समतुल्य है। यात्रियों के अपने मंजिल पर हिफाजत से पहुँचना उसके हाथ में है।

Fig 3.2.3.l में आप देखते हैं कि समाजिक नेता इतना दुर्बल लग रहा है, कि पीड़ित लोगों को शक हो रहा है कि शायद वह उनको बचा नहीं पायेगा। जबकि Fig 3.2.3.m की समाजिक नेता शारीरिक स्तर पर शक्तिशाली लग रहा है और उसके चेहरे से लगता है कि उसमें आत्मविश्वास है और लोगों को आगे ले जाने की काफी हिम्मत है। अतः लोगो को उसके नेतृत्व पर ज्यादा भरोसा हो रहा है।

यह भरोसा जरूरी है। क्योकि एक नेता बस के चालक के बराबर है। सब यात्रियों का जान और भविष्य उसके हाथ में है। जोखिम भरे रास्ते से गुजरते समय उसके लिए जागरूक रहना आवश्यक है, सशक्त रहना आवश्यक है और नियमों को जानना और पालन करना आवश्यक है– भले ही यात्री लोग नहीं जानते। अंत में यह कहने की जरूरत नहीं है कि उसको जानना आवश्यक है कि जाना कहाँ है और मार्ग क्या है

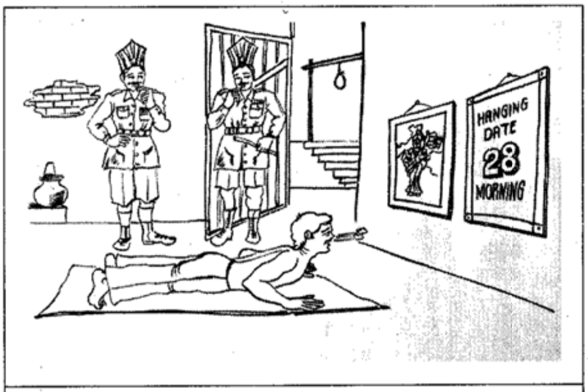
स्वयंसेवक नेता समझता हैः

'मैने अपने को सामाजिक विकास के लिए समर्पित करने का सोचा है। इसका मतलब मेरा शरीर भी समाज का है। यह मेरे पास दी गई एक पूँजी है। इसका संरक्षण और सदुपयोग मेरे लिए कर्तव्य बनता है। Fig 3.2.3.m भारत के एक महान देश भक्त का के अंतिम 10 मिनट की कहानी का एक दृश्य दिखाया गया है। वह रोज की तरह योग व्यायाम कर रहा है, जबकि कुछ मिनटों के बाद वह फासी में लटकनेवाला है।

NOTES

जेल के सिपाही पूछतें हैं : " भाई चन्द क्षणों में तुम्हारा जीवन खत्म हो जाएगा। अब तुम्हारे योग व्यायाम आदि करने का क्या मतलब" ?

तब वह बोला: " भाई ! भारत माँ के चरण में मेरे शरीर रूपी फूल चढाया जाएगा। उस फूल को सुन्दर और स्वस्थ्य रखना मेरा फर्ज है"।



चित्र **3.45** मेरे शरीर रूपी फूल को सुन्दर और स्वस्थ्य रखना मेरा फर्ज है– क्योंकि वह भारत माँ के चरण में चडाया जाएगा।

अब सही शारीरिक विकास के लिए :

– शैशव काल की प्रक्रिया को कैसे समझना है, और

–कौन से पोषण आहार को किस ढंग से देना है

इसके बारे में संबंधित मॉड्यूल याने बाल विकास, बाल सुरक्षा और विकास (Module:11 Child Development, Protection and Education), पोषण और स्वास्थ्य सुरक्षा (Module:10 Nutrition and Health Care) में विवरण दिए गए हैं। व्यक्ति को जिस प्रकार की स्कूल शिक्षा चाहिए उसको भी Module:11 में उल्लेख है। इसके अलावा जीवन से संबंधित कुशलताएं (Life Skill) क्या–क्या चाहिए इसके बारे में सम्प्रेषण से संबंधित माड्यूल: 4 (संचार कौशल एवं विकास के लिए जीवन कौशल शिक्षा) में विवरण दिया गया है। अंत में जिस कार्य के लिए व्यक्ति प्रेरित है उसके बारे में तो पर्याप्त विवरण एवं हुनर चाहिए। इसके लिए

- विकास में समस्यायें एवं मुद्दे (Module:1-Problems and Issues in Development)
- ग्रामीण प्रौद्योगिकी (Module:9-Rural Technology) एवं अन्य कई मॉड्यूल्स इस पाठ्यक्रम में उपलब्ध हैं।

3.2.4 सामाजिक नेता के व्यावहारिक सफलता के कुछ रास्ते

NOTES

अब तक एक स्वयं प्रेरित सामाजिक नेता की मानसिकता को समझने की हमने काफी कोशिश की है। अब उनकी व्यवहारिक कुशलता की कुछ युक्तियों को बताने के लिये तैयार हैं : संक्षिप्त में नेता को मालूम होना चाहिए :

- क्या करना,
- कैसे करना,
- कब करना, और
- कब तक करना।



चित्र **3.46** जरा धूप से हट जाओ : बस!

संबंधित सिद्धांतों को नीचे के पाँच शब्दों द्वारा प्रकट कर सकते हैं :

- सु–दर्शन (correct vision: of goal, reality and approch)
- सु–प्रबंधन (correct management)
- सु–तंत्र (correct choice of technology)
- सु–शासन (correct implementation/ administration)
- विसर्जन (correct timing/policy of retiredom)

3.2.4.1 सु–दर्शन :

हकीकत के ऊपर सही समझ चाहिये इसको हमने विकास की यात्रा का पहला कदम माना है। अब बस इतना याद रखें कि :

NOTES

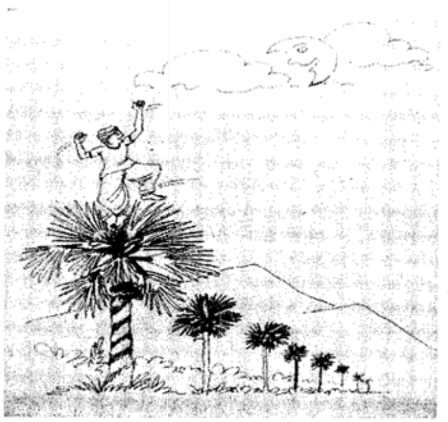
➢ सही दिशा को समझे बिना सिर्फ चलते रहना मूर्खता होगी जैसे बॉक्स – की कहानी दिखाती है

एक नेता अपने अनुयायीयों के साथ भवन की पंद्रहवी मंजिल में बसे हुए अपना ''विकास केन्द्र'' में बड़ी तेजी के साथ चढ़ रहा है। बीच–बीच में रूक कर पूछताछ कर लेता है कि किस मंजिल तक पहुँचें ? अंत में पंद्रहवी पर पहुँच ही जाता है। पर जब वह दफ्तर के द्वार पर लिखा बोर्ड देखता है तो आश्चर्यचकित हो जाता है। क्योंकि उसमें लिखा है : ''विनाश केन्द्र''। पूछता है : ''विकास केन्द्र'' कैसे ''विनाश केन्द्र'' हो गया? तो साथ वाले बोलते हैं : ''साहब आप तो हर तल पर मंजिल की संख्या ही पूछते थे। इसलिये हम संख्या बोलते रहे। असल में विकास केन्द्र तो दूसरी बिल्डिंग के पंद्रहवीं मंजिल पर है।''



चित्र **3.47** विकास केन्द्र के लिए विनाश केन्द्र वाले भवन में चढने से कोई फायदा नहीं। पहले चिन्हित करना होगा कौन से भवन में चढना

सिर्फ नंबर लक्ष्य रखने वाले विकास नेताओं पर विश्वास रखने का नतीजा यही होगा— क्योंकि विकास की दिशा भी होती है, मात्र पैमाना नहीं।



चित्र **3.48** लक्ष्य पर पहुॅचने के लिये कितनी ऊर्जा चाहिये ?

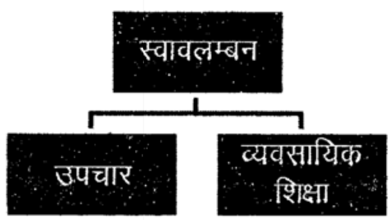
NOTES

➢ विकास यात्रा में निकलते वक्त नेता को अंदाज होना चाहिये कि लक्ष्य पर पहुॅचने के लिये कौन सा पहुॅच मार्ग है और उससे होकर लक्ष्य पर पहुॅचने के लिये कितनी ऊर्जा चाहिये। अपनी शक्ति को सही ढ़ंग से न समझने से किस तरह की हास्यजनक परिस्थिति पर आदमी पहुॅचा सकता है – इसको Fig3.2.4.1.b प्रदर्शित करता है। आदमी चॅन्द्रमा पर पहुॅंचने के लिए निकला। परन्तु ताड़ के ऊपर चढकर महसूस किया कि कुछ प्रगति हो गई। पर लक्ष्य पर पहुॅचेगा? वांछित शक्ति का मतलब युक्ति–युक्त तकनीक (Appropriate Technology and System) समझना उचित होगा।

सु – प्रबंधन

यहॉ एक संवेदनशील बिन्दु, यथा, विकेन्द्रीकृत नेतृत्व पर जोर देना चाहेंगे। उसके लिये आवश्यक तकनीक यथा : "लक्ष्याधारित प्रबंधन शैली" (Management by Objectives-MBO) को यहां उल्लेख करना चाहेंगे।

लक्ष्य आधारित प्रबंधन के लिए अनिवार्य है कि हाथ में लिए गए कार्यक्रम को परीक्षण करके यह देखना है कि क्या उस कार्यक्रम के लक्ष्य को संबंधित कुछ उपलक्ष्यों में बांट सकते हैं ताकि उन उपलक्ष्यों की पूर्ति के द्वारा मूल लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।



चित्र **3.49** मूल्य लक्ष्य को दो बिन्दु में बांट दिया।

उदाहरण 1 : पोलियो पीडित बच्चों को यथा सम्भव क्रियाशील एवं स्वावलम्बी बनाना है।

अब लक्ष्य है : स्वालम्बन।

इस लक्ष्य को पाने के लिए हमें दो उपलक्ष्यों को पाना आवश्यक है :

(1) पोलियो के प्रभाव को कम करने के लिए उपचार (जिसके अन्तर्गत अभ्यास भी आयेगा)

(2) कार्य आधारित शिक्षा (जिससे शैक्षणिक क्षमता एवं उत्पादक क्षमता पैदा हो)

यदि (1) को ''उपचार'' मानें और (2) को ''व्यावसायिक शिक्षा'' मानें तो मूल लक्ष्य को Fig 3.2.4.2.a के तहत दो भिन्न उप–लक्ष्य ''उपचार'' एवं ''व्यावसायिक शिक्षा'' द्वारा हम प्राप्त कर सकते हैं।

NOTES

दो मुख्य तत्वों को अब आसानी से समझ सकते है :

लक्ष्य को उप–लक्ष्यों में विभाजित करते समय ''कैसे ?''(how) प्रश्न मदद करता है। जैसे–

- स्वालम्बन कैसे ? उपचार एवं व्यावसायिक शिक्षा द्वारा।

एक उल्टी प्रकिया भी सम्भव है– '' क्यों'' (why) प्रश्न द्वारा। जैसे–

उपचार क्यों ? – स्वावलम्बन के लिए

व्यावसायिक शिक्षा क्यों ? – स्वावलम्बन के लिए

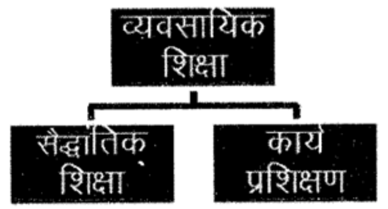
ऊपर के वर्णन से आपको समझना आसान होगा कि संबंधित कार्य के लिए दो व्यक्ति जिम्मेदार हो सकते हैं– एक पोलियो उपचार के लिए दूसरा व्यावसायिक शिक्षा के लिए। इस प्रकार नेतृत्व या जिम्मेदारी को बाँटना सम्भव है।

वर्तमान उदाहरण में बांटने का प्रकरण आगे भी बढ सकता है। जैसे–

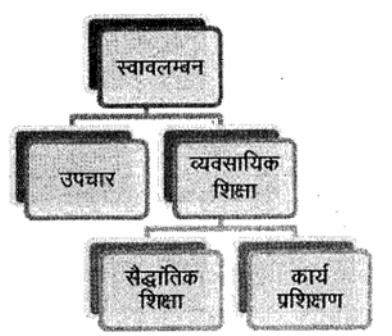
व्यावसायिक शिक्षा कैसे ? – सैद्धांतिक शिक्षा एवं कार्य प्रशिक्षण

ऊपर की दोनों विभाजन कार्यों को एक ही चार्ट द्वारा प्रदर्शित करना भी सम्भव है।

जैसे Fig 3.2.4.2.c में दिखाया गया है।



चित्र **3.50** व्यावसायिक शिक्षा लक्ष्य को दो अंगो में बांटना।



चित्र **3.51** दो स्तर का प्रब्रधन ढांचा

उदाहरण 2 :

अमुक गाँव को हस्तकला एवं फूलों के व्यवसाय में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकसित करना उद्देश्य है। उसके विकेन्द्रीकृत प्रबंधन को किस ढंग से समझा जाये ?

लक्ष्य को उप–लक्ष्यो में बांटना :

गाँव के आर्थिक विकास का लक्ष्य को

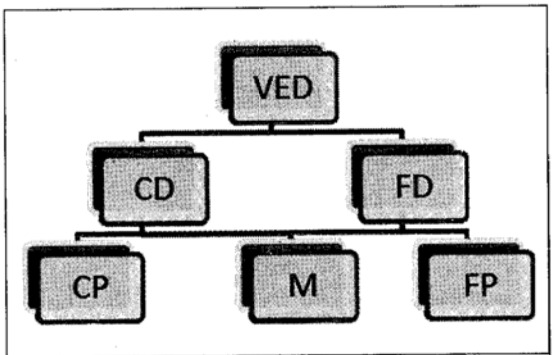
VED : Village Economy Development का नाम दें।

अब हम "कैसे ?" प्रश्न उठातें है

मतलब VED कैसे होगा ? उत्तर मिलता है, हस्तसिल्प विकास (CD) एवं फूल चिकास (FD) द्वारा।

NOTES

अब एक कदम आगे जाकर CD एवं FD के विकास पर "कैसे ?" का प्रश्न उठायें।



चित्र **3.52** गाँव में हस्त शिल्प एवं कुल व्यवसाय के लिए विकेन्द्रीकृत नंतृत्व

उदाहरण के लिए :

CD कैसे ?

CP एवं M द्वारा। मतलब कारीगरी उत्पादन (craft production) एवं मार्केटिंग (marketing) द्वारा ।

दूसरी ओर से :

FD कैसे ?

FP एवं M द्वारा, मतलब फूल उत्पादन (flower production) एवं मार्केटिंग द्वारा ।

इन दोनो स्तर के बांटने के कार्य को Fig 3.2.4.2.d में दर्शाया गया है।

उक्त चित्र को देखते हुए हमें लगता है कि न्यूनतम तीन लोगों को जिम्मेदारी देकर इस कार्य को विकेन्द्रीकृत ढंग से कर सकते हैं– यदि यह मानें कि दोनों तरफ का मार्केटिंग एक ही व्यक्ति कर सकता है। ऊपर के दो स्तरों में इनकों चक्रीय ढंग से समन्वयन की जिम्मेदारी दी जा सकती है। इससे लोगों की लगन बढ जाएगी।

उक्त उदाहरणों द्वारा हमें प्रेरणा मिलता है कि

- ☞ किसी भी परियोजना या कार्यक्रम के लक्ष्य को उप–लक्ष्य के रूप में बाँटने से और उनको भी आगे बांटने से एक या एक से ज्यादा सोपान वाले पदानुक्रम (hierarchy) मिलता है। इस ढांचे को देखने से पता चलता है कि मूल्य नेतृत्व को कितने उप नेतृत्व में बांटा जा सकता है।
- ☞ नेतृत्व करने वाले हर व्यक्ति एक उप–लक्ष्य या लक्ष्य के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार होगा।

NOTES

सु–शासन

सुशासन की अवधारणा को गहराई से समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि सुशासन है क्या?

- समाज एवं शासन की सभी इकाईयों के कार्य करने में पारदर्शिता सुनिश्चित हो।
- शासन द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएं समान रूप से सभी लोगों तक पहुँचती हैं या नहीं यह सुनिश्चित किया जाये।
- समाज एवं शासन द्वारा किए गए कार्यों एवं निर्णयों में विश्वसनीयता बढाई जाये।
- समाज एवं शासन के कार्यों में सार्थकता और सटीकता के साथ औचित्य समूहों का समाहित होना सुनिश्चित किया जाये।
- सामान्य व्यक्ति को उसका हक एवं अधिकार बिना परेशानी के प्राप्त हो।
- समाज एवं शासन में सामंजस्य एवं संवेदनशील व्यवहार हो।

अब जैसे ही ''सुशासन'' शब्द कहा जाता है तो हमारे दिमाग में एक छबि बनती है, 'अच्छा शासन'। जब हम अच्छे शासन की बात करते हैं तो शासन में उपरोक्त गुणों का समावेश होता है।

उद्देश्यों एवं संदर्भ को ध्यान में रखते हुए सुशासन में मानवाधिकारों के प्रति सम्मान, विधि–नियम, प्रभावी भागीदारी, राजनैतिक बहुलवाद (pluralism), पारदर्शी एवं जिम्मेदार प्रकिया, औचित्यपूर्णता, ज्ञान एवं सूचना के लिए प्रबंध, लोगों के राजनैतिक सशक्तिकरण, निष्पक्षता, स्थिरता, धैर्य और मूल्यों का समावेश होता है।

सुशासन केवल सही निर्णय लेने को ही नहीं कहा जा सकता। अपितु सही निर्णय लेने हेतु किये गये हर संभव प्रयास, प्रक्रिया के सही पालन एवं सही क्रियान्वयन करने को सुशासन कहा जाता है।

सुशासन की विशेषताएँ–

NOTES

- **जवाबदेही**– जवाबदेही सुशासन की मौलिक एवं आधारभूत आवश्यकता है। जैसे लिये गये निर्णयों के परिणामों को समाज को बताना, समझाना एवं उसकी जवाबदेही लेना हर शासन की प्रतिबद्धता होनी चाहिए।

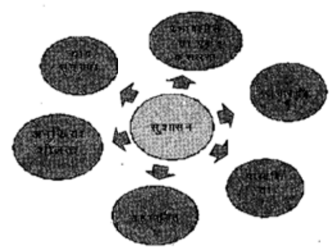
- **पारदर्शिता**– लोगों को निर्णय लेने की प्रक्रिया की समझ होनी चाहिए तभी वे उस निर्णय का अनुसरण कर सकेंगे। इस हेतु यह आवश्यक है कि लोगों को निर्णय लेने की प्रक्रिया सुस्पष्ट हो और उन्हें यह भी ज्ञात रहे कि यह निर्णय क्यों लिया गया है।

- **कानून का पालन**– इसका अर्थ है कि लिये गये निर्णय कानून के तहत हों एवं ये निर्णय, निर्णय लेने वाली संस्था की शक्तियों के दायरे में हों।

- **अनुक्रियाशील**– सुशासन को अनुक्रियाशील होना चाहिये, जिससे समुदाय की आवश्यकताओं को संवेदनशील एवं उपयुक्त ढंग से समय रहते पूर्ण किया जा सके।

- **न्यायसंगतता**– सुशासन का न्यायसंगत होना अति आवश्यक है। समाज की भलाई इसी में है कि समाज के हर वर्ग की भावनाओं एवं हितों का ध्यान रखा जाय। इससे आशय है कि निर्णय लेने की प्रक्रिया में समाज के हर वर्ग विशेषरूप से कमजोर वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित हो सके।

- **प्रभावशीलता एवं कुशलता**– शासन द्वारा ऐसे निर्णयों एवं प्रक्रियाओं का पालन किया जाना चाहिये जिससे उपलब्ध संसाधनों का पर्याप्त एवं प्रभावी दोहन/उपयोग किया जा सके। जिसके फलस्वरूप समाज के विकास एवं हितों के लिये बेहतर परिणाम प्राप्त हो सकें।



चित्र **3.53** सुशासन को कैसे सुनिश्चित करें ?

- **भागीदारी**– सामान्यतः निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिये। इसे कई प्रकार से हासिल किया जा सकता है जैसे– किसी व्यक्ति या समूह को निर्णय लेने से संबंधित तथ्यों से अवगत कराते हुए इस पर उनकी राय ली जाकर या व्यक्ति या समूह को वास्तविक निर्णय लेने की प्रक्रिया में

शामिल किया जाकर। सुशासन से संबंधित सभी मुद्दे Fig 3.2.4.3.a में प्रदर्शित हैं।

NOTES

आपके दिमाग में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि नेतृत्व और सुशासन को जानने की मेरे लिए क्या आवश्यकता एवं उपयोगिता है ?

नेतृत्व और सुशासन ऐसे गुण हैं जिनके बगैर न तो व्यक्ति, न समुदाय और न ही राष्ट्र का विकास संभव है। एक नेता को अपने क्षेत्र, समुदाय एवं राष्ट्र में विकास करने के साथ–साथ उसके मार्ग में आनेवाले बाधाओं को भी दूर करना पड़ता है। इस प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए प्रभावी व्यक्तित्व का होना आवश्यक है। नैतिकता एवं सुशासन नेतृत्व की प्रभावशीलता को बढ़ाने में सहायक हैं। अतः प्रभावी सामुदायिक नेतृत्व के लिए इन्हे अपने व्यवहार, विचार, निर्णय एवं कार्य में समाहित करना आवश्यक है।

3.2.5 सामाजिक नेतृत्व की एक ताबीज : समाज के लिए समाज द्वारा

लाउत्से की सीख एक ताबीज की तरह मार्गदर्शन देती हैं। इस प्रश्न पर कि एक नेता कैसे काम करे : पूरा कथन Box 3.54 में दिया गया है। आप समझे होंगे कि एक लोक–केन्द्रित नेतृत्व का दर्शन लाउत्से द्वारा मिलता है। यह एक परितंत्र की परिपाटी है और शाश्वत विकास के साथ रहने वाला एक साफ्टवेयर !

> लोगों के पास जाओ, उनके साथ रहो
> उनसे सीखो, उनके साथ मिलकर योजना बनाओ
> उनके साथ काम करो,
> वे जो भी जानते हैं, उससे प्रारंभ करो
> जो उनके पास है, उससे निर्माण करो
> दिखा कर सिखाओ, करके सीखो
> सिर्फ दिखावा नहीं एक पद्धति विकसित करें
> कार्य ऐसा हो जो बेतरतीब नहीं, व्यवस्थित हो
> टुकड़ों में नहीं समग्रता के साथ हो,
> जिसमें अंधानुकरण नहीं परिवर्तन हो,
> जिसमें सिर्फ राहत नहीं छुटकारा हो।
>
> – **लाउत्से**

चित्र **3.54** **सामाजिक नेतृत्व की एक ताबीज**

हमने जाना :

- समाज में यह गलतफहमी रही है कि शक्तियों द्वारा दूसरों पर शासन करना ही नेतृत्व है। परन्तु परिवर्तन एवं विकास के उद्देश्य को लेकर जब स्वयं प्रेरित नेता निकलते हैं उनके लिए उक्त शैली अनुपयोगी है। वे अपने आदर्श के माध्यम से दूसरों को प्रभावित करते हैं। परन्तु इसके लिए अपने को परिपक्व करना पडता है ताकि अपने ऊपर अनुशासन और समाज के लिए अगुवाई के लिए तैयार हो

जायें। अपने आपको कैसे तैयार करना है यह आंतरिक शासन की जानकारी से प्राप्त होता है।

NOTES

- समाज सुधारक व स्वयंसेवक को जरूरी है कि दूसरों को बदलने से पहले अपने आप में विकास या परिवर्तन करके सीखे। परन्तु अपने में विकास लाने के लिए अपनी वर्तमान स्थिति, अपना लक्ष्य एवं पहुँच मार्ग को समझना पड़ता हैं।
- अपने को समझने और संभालने के प्रयत्न में अपने शरीर को भी समझना पड़ता है और मन की स्थिति और प्रक्रिया को भी समझना पड़ता है।

  – अपने शरीर को समझने और संभालने में तमोगुण, रजोगुण, एवं सात्विक गुण, को समझकर आहार, व्यवहार इत्यादि अपनाना पड़ेगा।

  – अपने मन को समझते समय मनोवैज्ञानिक तथ्य द्वारा समझना होगा कि वह

  (i) माँ–बाप मनोस्थिति के आधार पर ही व्यवहार सुनिश्चित करने की भावना या

  (ii) बच्चों की मनोस्थिति जिसके कारण सृजनात्मक काम करना और जोखिम उठाना सम्भव होता है

  (iii) वयस्कों की मनोस्थिति जो (i) और (ii) के बीच का रास्ता मानता है और तर्कसंगत शैली में आगे बढने देता है।

- योग द्वारा मन और शरीर के बीच में समन्वयन, अपने और समाज के बीच में सक्रिय सम्पर्क और उसके साथ ही कथनी और करनी में एकरूपता प्रदर्शित करने वाला व्यक्तिव पाना है। मुख्यतः

  – खुद को समझने के लिए शरीर, मन और मूल्य प्रणाली से पूरी तरह से अवगत होना आवश्यक है।

  – सत्य, प्रेम और परानुभूति सबको जोड़ने वाले मूल्य हैं तथा योग जोड़ने वाला बेहतरीन औजार है।

  – जीवन के अनुभवों, मान्यताओं एवं संस्कारों के आधार पर ''अच्छा–बुरा'' ''मूल्यवान–महत्वहीन'' इस प्रकार के निर्णय मूल्यों के आधार पर लिए जाते हैं।

  – मान्याताओं और धर्म दोनों के आधार पर किसी व्यक्ति का विश्वावलोकन या विश्वदृष्टि (world-view) बनता है तथा विश्वावलोकन से ''मूल्य'' संबंधित है।

NOTES

- स्वयं प्रेरित सामाजिक नेता की मानसिकता समग्र विकास का एक अनिवार्य अंग है। जैसे एक स्वस्थ माँ अपने स्तन के दूध को अपने बच्चे को पिलाये बिना नहीं रह सकती उसी प्रकार एक स्वस्थ एवं विकसित व्यक्ति सामुदायिक सेवा किये बिना रह ही नहीं सकता। इस प्रक्रिया को हमनें मेस्लो सिद्धांत के आधार पर समझा।
- स्वयं प्रेरित सामुदायिक नेता तभी अपने लक्ष्य प्राप्त कर सकेगा जब वह खुद के विकास पर सही ध्यान दे – याने शारीरिक विकास, मानसिक विकास, मूल्य प्रणाली का निर्माण एवं कार्य संबंधित पुनः प्राप्त करना।
- क्रियान्वयन की सफलता के लिए पाँच सिद्धांतों को मार्गदर्शन के रूप में अपनाना उचित होगा। वे हैं : सु–दर्शन, सु–प्रबंधन,सु–तंत्र, सु–शासन एवं विसर्जन। इनमें सु–शासन सबसे प्रमुख बिन्दु होगा।
- सुशासन में मानवाधिकारों के प्रति सम्मान, विधि–नियम, प्रभावी भागीदारी, राजनैतिक बहुलवाद (pluralism), पारदर्शी एवं जिम्मेदार प्रकिया, औचित्यपूर्णता, ज्ञान शिक्षा तथा सूचना तक पहुँच (access to information), लोगों के राजनैतिक सशक्तिकरण की क्षमता, निष्पक्षता, स्थिरता, धैर्य और मूल्यों का समावेश होता है।

कठिन शब्दों के अर्थ

सुशासन – अच्छा शासन,

स्वशासन – अपना शासन, सबका शासन

आन्तरिक शासन – अपने आप पर शासन, खुद पर नियंत्रण

अनुक्रियाशील – परिवेश से प्रभावित होकर सही निर्णय लेना,

पारदर्शिता – जैसा है वैसा ही दिखना अर्थात गोपनीयता का अभाव,

बहुलवाद – समाज के सभी समुदायों का सहअस्तित्व अर्थात किसी भी समुदाय (जैसे राज्य) का अन्य पर नियंत्रण न होना।

अभ्यास के लिए प्रश्न

NOTES

1. सही जोड़ी मिलाइये–

क्र.	मूल्य	मूल्य का अर्थ
1.	आत्म नियंत्रण	दूसरों के कष्ट को स्वयं पर मानना
2.	लय और व्यवस्था	कार्य का बार–बार दुहराव
3.	समानुभूति	लक्ष्य से भटकाव न होना
4.	अभ्यास	भविष्य का अनुमान
5.	केन्द्रण	कार्य को सुव्यवस्थित ढंग से करना
6.	कल्पना शक्ति	पूर्ण एकाग्रता से कार्य
7.	लक्ष्य साधित एकाग्रता	मूल्यों के आधार पर आन्तरिक नियंत्रण

2. आन्तरिक शासन क्यों उपयोगी है?
3. मूल्य क्या हैं?
4. एक सामुदायिक नेता को खुद को समझना क्यों आवश्यक है ?
5. खुद को समझने के लिए किन तथ्यों से अवगत होना आवश्यक है ?
6. क्या एक सामुदायिक नेता को आन्तरिक शासन से अवगत होना आवश्यक है? स्पष्ट कीजिए।
7. सुशासन और विकास एक–दूसरे के पूरक हैं। क्या आप सहमत हैं? यदि हाँ तो क्यों?
8. सुशासन की प्रमुख विशेषताएँ बताइये।
9. विश्वावलोकन या विश्वदृष्टि क्या है तथा इसका मूल्य से क्या संबंध है।

अधिक जानकारी के लिए संदर्भ सूत्र

1. विजय आनन्द द्वारा निर्देशित फीचर फिल्म 'गाईड' देखें।
2. विपश्यना के लिए दिए गए व्याख्यानों को सुनें।
3. स्वामी विवेकानन्द के राजयोग पुस्तक को पढ़ें।

■■■

3.3 सामुदायिक सहभागिता : योजना निर्माण एवं निर्णय लेने हेतु

(Community Participation : For Planning and Decision Making)

NOTES

उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़कर आप जान सकेंगे कि–

- सामुदायिक सहभागिता क्या है?
- सामुदायिक सहभागिता की आवश्यकता क्या है ?
- योजना का तात्पर्य क्या है? योजना निर्माण के विभिन्न चरण कौन से हैं?
- सामूहिक सहभागिता द्वारा योजना निर्माण करने के तरीके क्या हैं?
- विकास से संबंधित निर्णय के लिए सामूहिक सहभागिता कैसे प्राप्त की जाय?

नेता का सबसे प्रमुख कार्य सबके सहयोग से विकास के मार्ग में आने वाले बाधाओं को दूर कर विकास के लक्ष्य को प्राप्त करना है। हमारे देश में एक व्यक्ति द्वारा किसी एक स्थान पर बैठकर पूरे देश के लिए योजनाएँ बनाने एवं उन्हें लागू करने का प्रयास किया जाता था। विगत अनुभव के आधार पर अब यह सिद्ध हो गया है कि जिसके लिए योजना बनाई जानी है तथा जिनके लिए उन्हें क्रियान्वित किया जाना है, उनकी भी इसमें सहभागिता आवश्यक है। एक सफल नेता वही है जो विकास के प्रत्येक कार्य में सबकी सहभागिता प्राप्त करे। इस इकाई में सामूहिक या सामुदायिक सहभागिता से विकास के लिए योजना का निर्माण कैसे किया जाए तथा इस प्रकार की योजनाओं के क्रियान्वयन में सबकी सहभागिता कैसे प्राप्त की जाय की जानकारी प्रदान की जा रही है।

3.3.1 : समुदाय क्या है? (What is Community?)

सामुदायिक नेतृत्व को समझने से पहले आईए हम जानें समुदाय किसे कहते है? भाषा, परम्परा, कौशल, विचार या व्यवसाय के आधार पर पारस्परिक लाभ एवं हितों की रक्षा के लिए सामान्यतः क्षेत्रिय समुदाय का निर्माण होता है।

यह समुदाय अनेक प्रकार के हो सकते हैं जैसे– ग्रामीण समुदाय, शहरी समुदाय एवं आदिवासी समुदाय। इसमें पड़ोसी समूह जैसी बुनियादी इकाईयाँ

भी होती हैं। जिसके बारे में **मॉड्यूल–1 में** आपने पढ़ा है। नीचे की सारणी में कुछ विशिष्ट समुदाय एवं इससे संबंधित नेतृत्व के उदाहरण दिए जा रहे हैं :–

NOTES

समुदाय का प्रकार	नेतृत्वकर्ता	अनुकरणीय कार्य
ग्रामीण समुदाय	अण्णा हजारे	ग्राम का समग्र विकास
शहरी समुदाय	बिन्देश्वरी पाठक	सुलभ इंटरनेशनल के द्वारा नगरीय स्वच्छता
कृषक समुदाय	महेन्द्र सिंह टिकैत	किसानों की समस्याओं के हल हेतु संघर्ष
श्रमिक समुदाय	शंकर गुहा नियोगी	श्रमिकों के जीवन स्तर एवं सामाजिक विकास के लिए पहल
दलित समुदाय	महात्मा अय्यंकाली कृष्णम्मा जगन्नाथन् शाहूजी महाराज	दलितों के सामाजिक स्तर उन्नयन के लिए पहल
महिला वर्ग	ज्योतिबा फुले एवं सावित्री बाई फुले	महिलाओं की शिक्षा पर पहल

3.3.2 सामुदायिक भागीदारी : अर्थ एवं आवश्यकता (Community Participation : Meaning and Necessity)

आइए, सबसे पहले जानें सहभागिता क्या है? सहभागिता को समझने के लिए इस कहानी को ध्यान से पढ़ें।

सहभागिता से सफलता

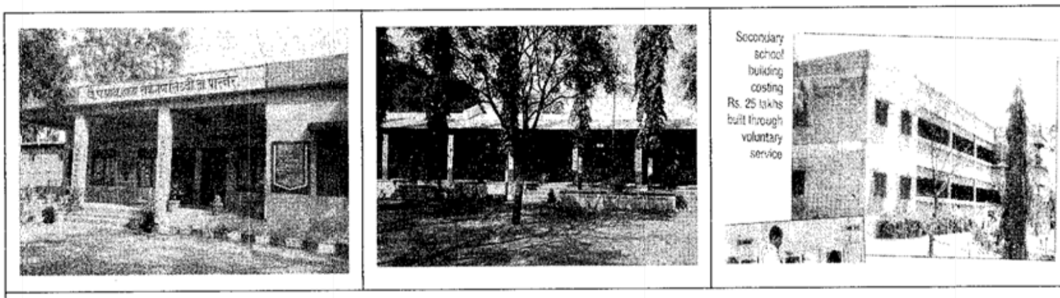
गाँव के माध्यमिक शाला के प्रबंध मण्डल ने गाँव में स्कूल के लिए दो कमरे बनाने का निश्चय किया। पर्याप्त प्रयास करने पर भी शासन से कोई आर्थिक सहयोग नहीं प्राप्त हो सका। इसके लिए ग्राम सभा बुलाई गई। बैठक में सरपंच ने अपनी समस्या बताई। गाँव के लोगों से प्रति परिवार उनकी आर्थिक स्थिति के अनुसार सहयोग करने के लिए निवेदन किया, ताकि विद्यार्थियों का पठन–पाठन बरसात के मौसम में भी ठीक ढंग से हो सके।

गाँव के गरीब परिवार के लोगों ने कहा कि इस कार्य में हम कैसे सहभागी हो सकते हैं? इस पर सरपंच ने कहा कि आप लोग अपना श्रम देकर

NOTES

भवन निर्माण में सहयोग कर सकते हैं। शहर से सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करके लौटे मनोहर ने कहा कि मैं इसका नक्शा एवं कम लागत में निर्माण कार्य करवाने का जिम्मा लेता हूँ। गाँव के पास के किसान अलगू वर्मा ने कहा कि इस शुभ कार्य के लिए मैं अपना ट्रैक्टर निःशुल्क उपयोग करने की सहमति देता हूँ। ईंटभट्टा मालिक रामलाल सिंह ने अपने भट्टे से निःशुल्क ईंटें दीं। इस प्रकार सबके सहयोग से गाँव के विद्यालय का कायाकल्प हो गया।

उपरोक्त कहानी से स्पष्ट है कि किसी कार्य में सबका सहयोग प्राप्त करना ही सहभागिता है। इस प्रकार के कार्य सिर्फ काल्पनिक नहीं हैं, रालेगण सिद्धि में जनसहयोग से खड़ा किया गया हाईस्कूल इसका जीता–जागता सबूत है।



चित्र **3.55** रालेगण सिद्धी की शाला

सहभागिता मुख्यतः तीन प्रकार से हो सकती है

1. शारीरिक सहभागिता
2. आर्थिक सहभागिता
3. मानसिक या बौद्धिक सहभागिता

सहभागिता किसी भी तरह से हो सकती है– बस वह सक्रिय एवं सकारात्मक होनी चाहिये। सहभागिता बहुत थोड़ी एवं संकेतक भी हो सकती है, लेकिन यह भावनात्मक जुड़ाव को प्रगट करती है। (जैसे सेतु बंधन में गिलहरियों का योगदान)

कुछ लोग गरीब होने के बाबजूद अपने शारीरिक श्रम से विकास कार्यों एवं निर्माण कार्यों में सहयोग प्रदान कर सकते हैं। बहुत से लोग शारीरिक श्रम के बजाय वित्तीय सहायता देकर सहभागिता कर सकते हैं। कुछ लोग न तो शारीरिक और न ही वित्तीय सहायता कर सकते हैं, किन्तु कार्यक्रम का समर्थन करके मानसिक या बौद्धिक सहभागिता प्रदान कर सकते हैं। जब किसी समूह

के सभी सदस्य शारीरिक, मानसिक या आर्थिक सहभागिता देते हैं तो उसे सक्रिय सहभागिता कहते हैं।

सामुदायिक भागीदारी क्या है? कहानी पढ़कर आप भलीभाँति समझ गये होंगे। किसी भी सामुदायिक नेतृत्व की सफलता सामूहिक सहभागिता प्राप्त करने में ही होती है। सामूहिक सहभागिता शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक तीनों प्रकार से प्राप्त की जा सकती है। कभी–कभी जनसहयोग से बहुत वृहद् कार्य, जो कि सामान्यरूप से असंभव समझा जाता है, भी संपन्न हो जाता है। गाँधी जी के नेतृत्व में चलाया गया स्वतंत्रता आंदोलन जिसमें लाखों लोगों ने अपने तन–मन–धन का बलिदान किया इसका ऐतिहासिक उदाहरण है।

NOTES

मदनमोहन मालवीय जी द्वारा हजारों एकड़ ज़मीन इकट्ठा करके स्थापित किया गया बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में जनभागीदारी का एक ऐतिहासिक उदाहरण है।

3.3.2.1 सामुदायिक सहभागिता की आवश्यकता (Need of Community Participation)

- **समूह या समुदाय की ताकत एवं कमजोरी की जानकारी प्राप्त करने के लिए।**

  बहुत बड़े अभियानों/परियोजनाओं में लोगों को शामिल करने के पहले छोटे कार्यों में उनकी सहभागिता के आधार पर उनकी ताकत एवं कमजोरी को पहचानना आवश्यक है। (Box 3.3.2.1a) में दी गई कहानी एवं गाँव की घटना (Box 3.3.2.1.b) द्वारा भी सामुदायिक सहभागिता एवं उसकी आवश्यकता को समझना आसान होगा।

> **एक मुट्ठी चावल**
>
> इस कहानी को तो सभी जानते हैं : 100 लोग यात्रा पर निकले। दोपहर खाने के लिए चावल बनाना था। हर एक को एक मुट्ठी चावल उबलते पानी में डालना था। जब लोग खाना खाने बैठे और चावल परोसा गया तो देखा कि बर्तन में पूरी रेत ही रेत भरी है। तो ये था लोगों की भागीदारी का एक नमूना।
>
> चित्र **3.56** **झूठी सहभागिता**

- स्थानीय संसाधनो की पहचान के लिए।
- आवश्यकता अनुरूप सही एवं लागू करने योग्य योजना निर्माण के लिए।

NOTES

Box 3.3.2.1.b तोड़ने में कामयाबी

मदुरै के पास करट्टलगन पट्टी नामक गरीब गाँव में सरकारी योजना के अंतर्गत एक सुंदर उपस्वास्थ्य केन्द्र लगभग 1990 में स्थापित किया गया। केन्द्र के उद्घाटन में कुछ कारणवश देरी हुई। उसके बरामदे में कुछ बेकार युवक एवं लोग बैठते और पत्थर या लोहा से भवन की दीवारों को ठोंकते थे। उन्होंने देखा कि जहॉ वे मारते हैं वहाँ दीवार बहुत तेजी से घिस रही है। इससे उनका उत्साह और बढ़ गया। वे अपने इस काम को लगातार करते रहे। जब उद्घाटन के पहले अधिकारीगण निरीक्षण के लिए गये तो देखा कि वो सुंदर भवन लगभग नष्ट हो चुका था।

अतः किसी भी कार्य में सभी की भागीदारी सुनिश्चित करना अनिवार्य है अन्यथा लोगों का उस कार्य या निर्माण से भावनात्मक जुड़ाव होगा ही नहीं और नतीजा वही होगा जो करट्टलगन पट्टी गाँव में हुआ। वास्तव में लोगों को भावनात्मक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करना और उसके लिये सही समझ पैदा करना नेतृत्व का एक अनिवार्य अंग है। इसे समझने के लिए एक छोटी सी कहानी प्रस्तुत है :

एक भवन का निर्माण चल रहा था। एक यात्री उस रास्ते से गुजर रहा था। वहाँ एक मजदूर पत्थर तोड़ रहा था। राहगीर उससे पूछने लगा कि वह क्या कर रहा है। मजदूर ने तुरंत उत्तर दिया "अरे तुझे दिखता नहीं क्या? मैं पत्थर तोड़ रहा हूँ।" राहगीर ने एक स्तंभ के निर्माण में लगे मिस्त्री से वही प्रश्न पूछा। मिस्त्री ने उत्तर दिया: "मैं ईंटो की जुड़ाई कर रहा हूँ।" जब दूसरे मिस्त्री से राहगीर ने यही प्रश्न पूछा तो उत्तर मिला : "मैं एक शानदार भवन का निर्माण कर रहा हूँ।"



चित्र 3.57 **"मै भवन बना रहा हूँ।"**

सामुदायिक कार्य में भी हर व्यक्ति में "मैं शानदार भवन निर्माण कर रहा हूँ" की भावना तभी पैदा होगी जबः

– प्रत्येक व्यक्ति को उद्देश्य निर्धारण में अपनी राय देने का अवसर दिया गया हो।

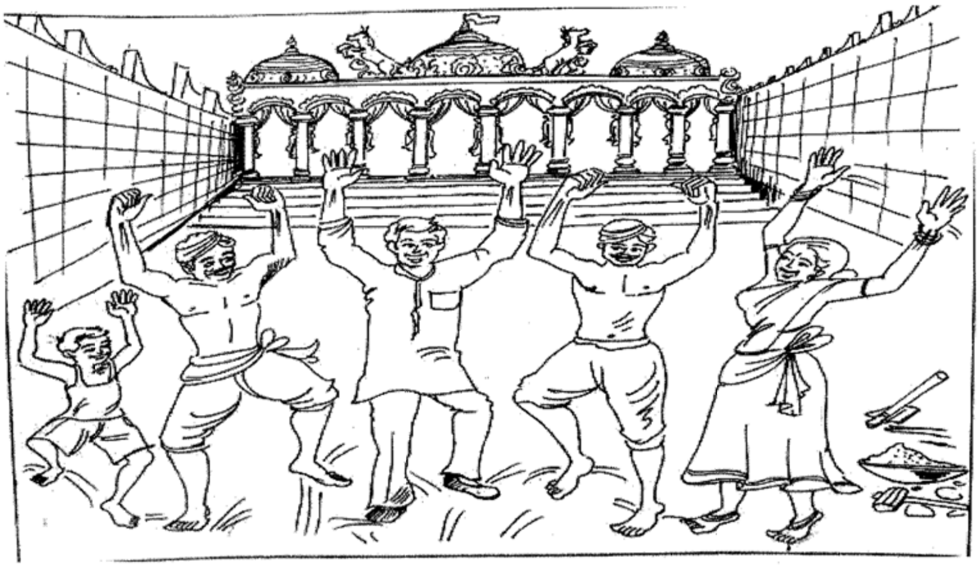
– प्रत्येक व्यक्ति को पहुँच मार्ग के सिद्धान्त के निर्णय में अपनी भावना को शामिल करने का मौका दिया गया हो और

– क्रियान्वयन के समय अपनी शक्ति या सामर्थ्य के आधार पर कुछ न कुछ योगदान करने का अवसर दिया गया हो।

इस भावना की अभिव्यक्ति कैसे होती है यह लोत्से (Lao-Tze) नामक चीनी दार्शनिक के निम्नलिखित कथन द्वारा महसूस कर सकते हैं :

लोगों के पास जाओ।	Go to the people.
उनके बीच रहो।	Live with them.
उनसे सीखो।	Learn from them.
उन्हें प्रेम करो।	Love them.
वे जो जानते हैं उससे प्रारंभ करो।	Start with what they know.
जो उनके पास उपलब्ध है, उससे निर्माण करो।	Build with what they have.
जब कार्य सम्पन्न होने पर लोग कहें कि ''ये हमने स्वयं किया'' वही श्रेष्ठ नेतृत्व है।	But with the best leaders, when the work is done, task accomplished, the people will say : "We have done this ourselves".
— लोत्से	**- Lao-Tze**

NOTES



चित्र **3.58 हमने इसको खुद ही कर लिया है।** (We have done this ouverselves)

सामुदायिक सहभागिता प्राप्त करने का सुनिश्चित तरीका : नेता द्वारा स्वयं अगुवाई करना

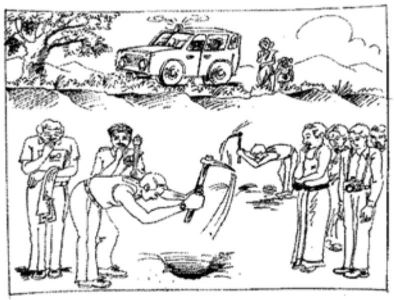
जनसहभागिता : सागर का उदाहरण

मध्यप्रदेश के सागर जिले के विकास खण्डों में हमेशा पानी की समस्या बनी रहती है। यद्यपि जिले में पर्याप्त औसत वर्षा होती है, किन्तु वर्षा का अधिकांश जल, जल–संरक्षण हेतु आवश्यक संरचनाओं के अभाव में नालों एवं

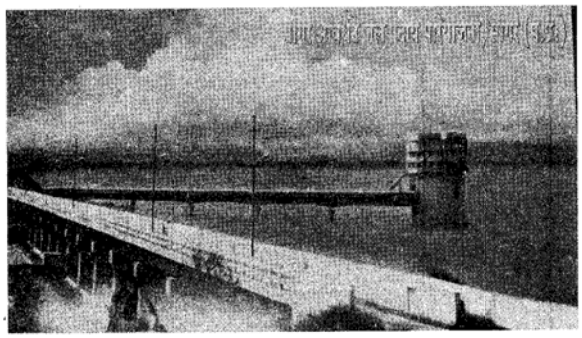
नदियों से होते हुए बाहर चला जाता है। जल संरक्षण की समस्या के समाधान के लिए अनेक योजनाएँ बनने के बावजूद जनसहभागिता के अभाव में उनका क्रियान्वयन संभव नहीं था। सागर शहर भी एक सागर नामक झील के किनारे बसा है। यह झील नालों से आने वाले तलछट, मिट्टी एवं कूड़े–कचरे से भर गई थी।

NOTES

तत्कालीन कलेक्टर इस समस्या को समझा एवं इस समस्या के समाधान के लिए सागर शहर की इस झील में सफाई एवं गहरीकरण हेतु सबसे पहले स्वयं गए और फावड़ा लेकर श्रमदान किया। इसका परिणाम यह हुआ कि शहर के अधिकांश लोग इस कार्य में जुट गये। वे न केवल शारीरिक सहयोग प्रदान करने लगे, बल्कि रूपये–पैसे के अलावा इस कार्य हेतु जेसीबी, डम्पर, ट्रेक्टर–ट्राली एवं उनके पास जो भी अन्य सामान उपलब्ध था उससे मदद करके कार्य को सफल बनाया।



चित्र **3.59** "भई, कोई फोटो वोटो मत खींचना। जब तक पानी नहीं निकलता तब तक मैं फावड़ा चलाते रहूँगा। कोई मेरे साथ बात न करें।"



चित्र **3.60** सागर डैम (दशकों से रूकी पड़ी हुई सागर जलाशय परियोजना तब पूर्ण हुई। जब कलेक्टर खुद फावड़ा लेकर काम करने लगे और पूरी जनता की भागीदारी सुनिश्चित की।)

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि–

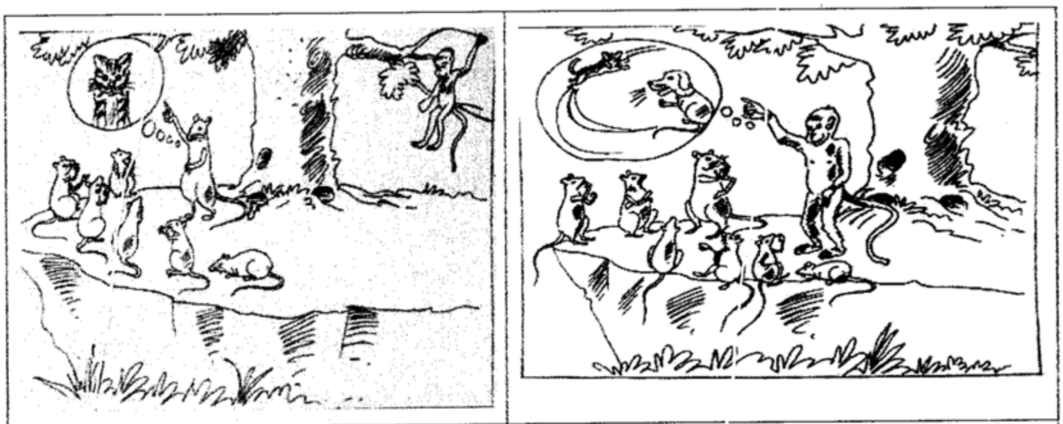
- नेता के विचार में लोगों को साथ लेने का पक्का इरादा हो और उनको श्रेय देने की मानसिकता हो तो लोगों की सहभागिता स्वमेव प्राप्त होने लगती है।
- सहभागिता के लिए नेता को स्वयं पहल करनी पड़ती है।
- सहभागिता की सफलता लोगों तक सही जानकारी (लक्ष्य, कार्ययोजना एवं कार्य विभाजन संबंधित जानकारी) पहुँचाने पर निर्भर करती है।
- नेता पर लोगों का विश्वास सहभागिता हासिल करने में सहायक बनता है।

NOTES

3.3.3 योजना निर्माण में सामुदायिक सहभागिता (Community Participation in Planning Formulation)

निराधार योजना– जिसका कियान्वयन संभव नहीं है

एक बार जंगल में एक स्थान पर बहुत सारे चूहों की सभा हो रही थी। इसमें इस बात पर सभी चिंतामग्न थे, कि आखिर बिल्ली से हमें छुटकारा कैसे मिले? लंबे समय तक विचार–विमर्श के बाद भी कोई हल नहीं निकल रहा था। वहीं एक पेड़ पर बंदर बैठा था।



चित्र **3.61** **योजना जिसका कियान्वयन सम्भव नहीं है।**

बंदर ने कहा– आप लोग क्या कर रहे हैं?

चूहों ने कहा– हम बिल्ली से छुटकारा पाने का रास्ता ढूंढ़ रहे हैं।

बंदर ने कहा– यह तो बहुत आसान है।

चूहों ने कहा– ऐसा है, तो आप हमें बताएं।

बंदर ने कहा– बिल्ली से छुटकारा पाने के लिए सभी चूहे कुत्ते बन जाएँ। बिल्ली अपने आप भाग जाएगी।

चूहों ने कहा– भाई, हम तो चूहे हैं, कुत्ते कैसे बनेंगे?

बंदर ने कहा– भाई तरकीब मैंने बता दी है। अब इसे करना आपका काम है।

उपरोक्त कहानी में बंदर ने ऐसी योजना बनाई जिसे चूहे कभी लागू नहीं कर सकते थे। इस कहानी से स्पष्ट है कि हमें ऐसी योजना बनानी चाहिए जिसे धरातल पर लागू किया जा सके। इसके साथ ही जिसे लागू करना है यदि वही योजना बनायेगा तो वह उपयुक्त होगी– क्योंकि वह अपनी ताकत एवं कमजोरी दोनों को जानता है। यदि कोई बाहरी व्यक्ति योजना बनायेगा तो वह

चूहों को कुत्ता बनाने जैसी योजना ही बतायेगा। अनेक योजनाओं की असफलता का मुख्य कारण यही है, कि योजना बनानेवाले

NOTES

- गाँव की वास्तविक समस्याओं एवं आवश्यकताओं से अनभिज्ञ होते हैं।
- वहाँ आसानी से उपलब्ध होने वाले साधनों से भी अनभिज्ञ होते हैं।
- योजना के उद्देश्य एवं महत्व से आम जनता भी अनभिज्ञ होती है। (क्योंकि योजना बनाने में उनकी भागीदारी नहीं होती।)

इस समस्या का समाधान योजना के निर्माण एवं उसके क्रियान्वयन में स्थानीय लोगों की सामूहिक सहभागिता प्राप्त करना है। जब योजना निर्माण एवं उसके क्रियान्वयन में आम जनता भाग लेती है, तभी योजना में यथार्थ धरातल पर लागू करने की क्षमता होती है।

इस कहानी और असली घटना से आपको उक्त सिद्धान्त और भी अधिक स्पष्ट हो जाएगा :

सूखापीपल गाँव में अधिकारी की जीप पहुँची तो गाँव वाले चारों तरफ इकट्ठा हो गये।

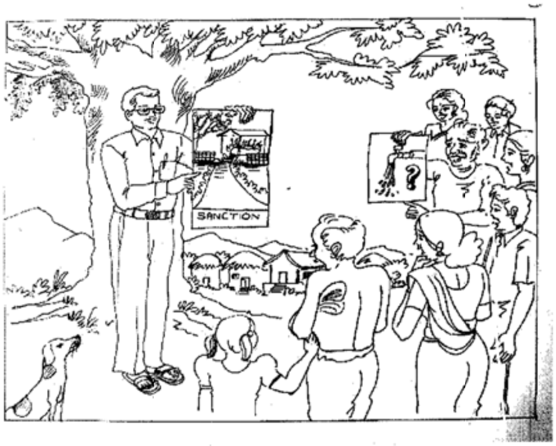
अधिकारी : गाँव से श्मशान तक जाने का रास्ता बनाने की स्कीम आपके गाँव के लिए स्वीकृत हो चुकी है।

सरपंच : साहब, पीने के लिए एक बूँद पानी भी नहीं है। कृपया आप उस पैसे से कुएँ के गहरीकरण का काम करवा दीजिये।

अधिकारी : भई, जब स्कीम तो श्मशान पहुँच मार्ग के लिए है तो उसको कुएँ के गहरीकरण के लिए केसे इस्तेमाल कर सकते हैं।

सरपंच : साहब, पानी के लिए गाँव तरस रहा है। आप कृपा करिये।

अधिकारी : भई, सिर्फ रास्ता बनाना ही संभव है।



चित्र **3.62 "योजना ऊपर से आई"**

गाँव का बुजुर्ग : ठीक है साहब, ऐसा ही करिये। पानी के बिना हम सब मरने वाले तो हैं, तब श्मशान तक ले जाना आसान होगा।

योजना क्या है?

जब हमारे घर में कोई शादी विवाह का आयोजन होता है तो हम उस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पहले यह विचार करते हैं कि शादी कहाँ करनी है? बरात कब आएगी? बारात कहाँ रूकेगी ? खाने–पीने की क्या

व्यवस्था करनी है? किन–किन लोगों को निमंत्रण देना है? तथा उस पर कितने रूपये खर्च होंगे? इत्यादि।

NOTES

इसी प्रकार किसी भी कार्यक्रम को आयोजित करने से पहले उसके हर पहलू का पूर्व विचार कर यह तय करना, कि

–क्या करना है?

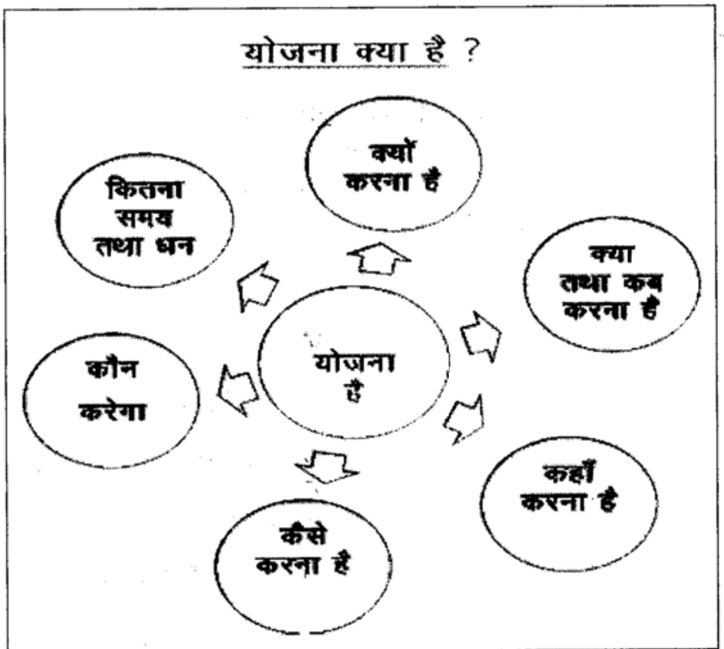
–कैसे करना है?

–कौन करेगा?

–कब होगा? तथा

–इस पर कितना खर्च होगा?

यह प्रक्रिया योजना कहलाती है।



चित्र **3.63 योजना के बिन्दु**

हर व्यक्ति अपना विकास चाहता है। हर परिवार अपना विकास चाहता है। हर गाँव अपना विकास चाहता है। हर प्रान्त व देश भी अपना विकास चाहता है। किन्तु प्रश्न उठता है कि विकास कैसे हो सकता है? किसी भी बेहतर बदलाव के लिए एक अच्छी योजना की आवश्यकता पड़ती है।

आम तौर पर यह माना जाता है, कि नियोजन या योजना बनाना, बजट बनाना, बड़े–बड़े अधिकारियों का काम है, गाँव के लोग यह काम नहीं कर सकते हैं। यह कठिन काम है। किन्तु ऐसा नहीं है। थोड़ी सी जानकारी प्राप्त करके कोई भी व्यक्ति या समूह योजना और बजट बना सकते हैं। यहाँ हम योजना बनाने के लिए उससे संबंधित आवश्यक बातों को समझेंगे।

NOTES

नियोजन योजना बनाने की प्रक्रिया है। किसी भी योजना की सफलता के लिए बेहतर नीति, कार्य शैली, कौशल एवं पूरे समुदाय का सहयोग आवश्यक होता है।

किसी भी योजना के लागू करते समय आने वाली बाधाओं की पहचान सामूहिक सहभागिता के माध्यम से आसानी से की जा सकती है और उसे दूर भी किया जा सकता है।

अच्छी योजना की कुछ खास बातें निम्नांकित हैं–

- गाँव की प्रमुख समस्यायें कौन–कौन सी हैं, की जानकारी।
- उनमें से कौन–कौन सी समस्याओं को पहले निपटाना है?
- उनके लिए क्या काम करना है?
- काम करने में लगभग कितना खर्च आयेगा?
- कितने संसाधन कहाँ–कहाँ से जुटाये जा सकते हैं? जैसे– सरकार से, पंचायत से, ग्राम सभा से और अपने समुदाय से।
- कितने समय में काम पूरा होगा?
- कौन–कौन क्या–क्या जिम्मेदारियाँ निभायेंगे?
- इस काम का मूल्यांकन कैसे और कब होगा?

योजना के लिए संसाधन की पहचान

केवल समस्याओं की सूची बनाने से ही योजना नहीं बन जाती। योजना बनाने के लिए यह भी जानना होगा कि काम करवाने के लिए साधन कहाँ से आयेंगे?

वास्तव में संसाधन प्रकृति के द्वारा दिये गये उपहार हैं। हर स्थान पर प्रकृति के द्वारा उपहार के रूप में कुछ न कुछ संसाधन अवश्य दिये गये हैं। यदि वह गाँव अपने क्षेत्र में पाये जाने वाले संसाधनों का समुचित उपयोग करता है, तो उसका विकास का रास्ता आसान हो जाता है।

संसाधन में क्या–क्या आता है?

चंदनपुर गाँव की नई सरपंच तुलसी बाई को गाँव की योजना बनानी थी। उन्हें योजना कैसे बनाई जाए यह जानकारी नहीं थी। गाँव की योजना बनाने के लिए जब उन्होंने चर्चा की तो बहुत सारी समस्यायें निकल कर आ गईं। उन्होंने गाँव में ही रहने वाले सेवा निवृत्त विकास अधिकारी जवाहर भाई

से चर्चा की कि, "भाई साहब! ग्राम सभा की बैठक में अनेक समस्यायें आ गई हैं। उनको लेकर योजना कैसे बनायें। समस्याओं का समाधान कैसे हो?"

जवाहर भाई ने कहा, "ऐसे ही एक गाँव की कहानी मैं सुना रहा हूँ, जिसे दक्षिण भारत की यात्रा के समय देखा था। तमिलनाडु राज्य में शिवगंगई जिले में एक गाँव है,

NOTES

जिसका नाम है कुन्द्रक्कुडी। आजादी के समय यह बहुत ही पिछड़ा हुआ गाँव था। इस गाँव में भी वे सारी समस्यायें थीं, जो हमारे गाँव में हैं। इस गाँव में करीब 500 वर्ष पुराना एक धार्मिक मठ है। अब तक 47 महन्त हो चुके हैं, जिनका गाँव वाले धर्म गुरू के रूप में सम्मान करते रहे हैं।

1952 में जो 46वें धर्म गुरू बने थे, वे काफी पढ़े–लिखे थे। वे स्वदेशी विज्ञान आन्दोलन नामक संस्था के संस्थापक भी थे। देश–विदेश में घूमे इस ब्रह्मचारी को यह सवाल परेशान करने लगा कि गाँव वालों की दरिद्रता और दुःख को कैसे समाप्त किया जाए? उनके इसी विचार से गाँव की व्यवस्था में एक बड़े बदलाव की शुरूआत हुई। सबसे पहले गाँव के संसाधनों की जानकारी प्राप्त की गई। तुलसी बाई ने पूछा, "संसाधन किसे कहते हैं?" जवाहर भाई ने बताया, "जो भी वस्तुएँ हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक हों, वे संसाधन कहलाती हैं। मनुष्य को अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए कुछ संसाधन प्रकृति ने दिये हैं, उन्हें प्राकृतिक संसाधन कहा जाता है। जैसे– जल, जंगल, जमीन, जानवर और जन"।



चित्र **3.64 कुन्द्रक्कुडी अडिगलार**

विकास के क्रम में कुछ संसाधन मनुष्य ने अपनी बुद्धि और मेहनत से बनाये हैं। वे मानव निर्मित संसाधन कहे जाते हैं। जैसे : बाँध, सड़क, यातायात एवं संचार के साधन, बिजली आदि।

3.3.3.2 गाँव की योजना की प्रारम्भिक प्रक्रियायें जैसे–स्वाट विश्लेषण

तुलसी बाई ने पूछा, "गाँव के संसाधनों की पहचान कुन्द्रक्कुडी गाँव में कैसे की गई?" जवाहर भाई ने बताया, "आम जनता ने मिलकर गाँव में पाये जाने वाले सभी भौगोलिक, प्राकृतिक, मानवी तथा आर्थिक संसाधनों की जानकारी एकत्र की। उदाहरण के तौर पर–

NOTES

- कितने परिवार जानवरों पर आश्रित हैं?
- गाँव में कितना दूध होता है?
- सिर्फ खेती से जुड़े परिवार कितने हैं?
- कितने खेत हैं?
- भूमिहीन परिवार कितने हैं, उनका जीवन कैसे चलता है, कोई पलायन कर रहा है, तो क्यो कर हर है, कहाँ जा कर, क्या कर रहा है ?
- गाँव में मजदूरी करने वाले लोग कितने हैं?
- मजदूर किस–किस तरह के काम करते हैं?
- गाँव के कितने परिवारों के पास घर की आटा–चक्की जैसी सुविधायें मौजूद हैं?
- कितने परिवारों में पढ़े–लिखे लोग हैं? और वे क्या कर सकते हैं?
- गाँव में कोई कारीगरी चलती है क्या ? कौन–कौन सी कारीगरी है और हर एक में कितने परिवार जुड़े हैं।
- गाँव के पास के जंगल में किस तरह के पेड़–पौधे हैं तथा अधिक आय के लिए कौन–कौन से पौधे लगाये जायें?
- गाँव में किस तरह की मशीनें हैं?
- सार्वजनिक सम्पत्ति क्या–क्या है तथा कितनी है?

तुलसी बाई ने पूछा, ''इन सबको पता करने के लिए गाँव वालों ने कोई तरीका भी अपनाया होगा।''

जवाहर भाई ने कहा, ''यद्यपि विद्वान लोग कई तरीके बताते हैं, जैसे– स्वाट (SWOT)। इसमें हम गाँव की सामूहिक शक्ति या ताकत (Strength), कमजोरियाँ (Weakness)] गाँव के सम्मुख उपस्थित अवसर (Opportunity) और गाँव के सम्मुख चुनौतियाँ (Threats) का मिल जुलकर विश्लेषण करते हैं।

पर इस प्रकार की सूचनायें गाँव को कैसे मिले ? आवश्यक जानकारियाँ गाँव से ही जुटाने की पद्धति को विद्वान सहभागी ग्रामीण ऑकलन पद्धति (पी. आर.ए. Participatory Resource Appraisal) कहते हैं, जिसमें गाँव के ही लोग एक कुशल नेतृत्वकर्ता विशेषज्ञ के साथ मिलकर अपने संसाधनों का अंकन करते हैं।'' पी.आर.ए. पद्धति में स्वाट के अलावा और बहुत सारी प्रक्रियायें हैं,

जिसके बारे में हम आगामी वर्ष के माड्यूल : "पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास" में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

सीमित संसाधनों से अपनी जरूरत कैसे पूरी करें?

तुलसी बाई ने कहा, "यह तो जानकारी हम चंदनपुर के लिए भी एकत्रित कर सकते हैं। तुलसीबाई ने अपने गाँव में एक स्वाट अभ्यास संचालित किया (इसका विवरण बॉक्स 3.3.3.2.a में प्रस्तुत है।

NOTES

Box 3.3.3.2.a चंदनपुर में स्वाट (SWOT) आंकलन

ताकत (Strength)	**कमजोरियाँ (Weaknesses)**
▪ 200 से अधिक दुधारू गाय गाँव में हैं। ▪ सबके पास सेलफोन है। ▪ डेरी व्यवसाय का अनुभवी व्यक्ति गाँव में है। ▪ गाँव में मुबंई से व्यापार करने वाला व्यक्ति भी है। ▪ गाँव में काठ के गुड्डे बनाने वाले कारीगर हैं।	▪ बस पकड़ने के लिये तीन किलोमीटर पैदल जाना पड़ता है। ▪ गाँव के अंदर आने के लिए नदी पार करके आना पड़ता है, जो बड़ा कठिन है। इसी कारण स्कूल में कई दिनों तक शिक्षक आते ही नहीं।
अवसर (Opportunity)	**चुनौतियाँ (Challenges)**
▪ प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना अंतर्गत गाँव के लिए सड़क स्वीकृत हुई है। ▪ विधायक हमारे गाँव से ही हैं। ▪ विधायक के पास अपने क्षेत्र के विकास के लिए फंड भी है।	▪ पलायन इतना है कि साहब गाँव ही खाली हो जाएगा। ▪ कम शिक्षित होने के कारण गाँव की लड़कियों की अच्छी जगह शादी नहीं हो पाती।

स्वाट आंकलन के पश्चात् योजना निर्माण :

- गाँव में आसानी से पहुँचने के लिए नदी पर पुल बनेगा विधायक निधि से।
- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना द्वारा पहुँच मार्ग।
- गाँव में एक डेरी स्थापित करना – सहकारी शैली में।
- कारीगरों की Turn-wood-toy इकाई स्थापित करना खादी ग्रामोद्योग की मदद से।

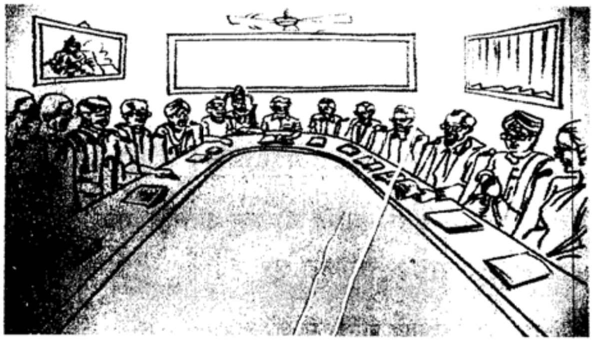
स्वाट अभ्यास सफलतापूर्वक पूर्ण हो चुका था। जब अगली बार उत्सुक होकर वह जवाहर भाई से मिली तो कुन्ट्रक्कुडी से संबंधित अपनी पुरानी चर्चा को आगे बढ़ाया, इस बार उसकी तीव्र इच्छा यह जानने की थी कि कुन्ट्रक्कुडी विलेज प्लानिंग फोरोम क्या है– जिसके बारे मे काफी तारीफ सुन रखी थी।)

NOTES

ग्राम योजना समिति : कुन्ट्रक्कुडि एवं केरल के मॉडल

तुलसी बाई ने पूछा कि कुन्ट्रक्कुडि नियोजन का काम कैसे हुआ ? जवाहर भाई ने बताया कि किसी भी गाँव में उपलब्ध संसाधनों के बेहतर उपयोग से ही उस गाँव का विकास होता है। इस गाँव के लोगों ने भी मिल–जुल कर गाँव के विकास के लिए ग्राम योजना समिति/ग्राम विकास समिति बनाई।

यद्यपि मठ ने सामुदायिक नेतृत्व प्रदान किया, जिससे निम्नांकित महत्वपूर्ण कार्य किये गये :–



चित्र **3.65** कुन्ट्रक्कुडि गाँव की योजना समिति

- गाँव के परम्परागत पेशों में तकनीकी एवं वैज्ञानिक पद्धतियों का समावेश करके उत्पादन बढ़ाने का निर्णय।
- ऐसे नये–नये व आधुनिक उत्पादन इकाईयों को लगाने का निर्णय जिससे लोगों को उचित तकनीकी और ग्रामोद्योग संबंधित मशीनों का परिचय मिले।
- सहकारी समितियों के द्वारा गाँव से ही उत्पादन इकाईयों के लिए पूंजी इकट्ठा करने की व्यवस्था।
- तकनीक प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा गाँव के बेरोजगार लोगों को अनेक कार्यों का प्रशिक्षण।
- ग्राम विकास समिति के अन्तर्गत विशेषज्ञों, ग्राम सभा के सदस्यों, कर्मचारियों, अधिकारियों, क्षेत्रीय विधायकों, सांसदों एवं मंत्रियों को भी आमंत्रित किया गया।

NOTES

वहाँ पंचायत को सहयोग देने वाली कई अन्य संस्थाओं ने भी सराहनीय प्रयास किया जिनमें कुछ महत्वपूर्ण कार्य :–

- गाँव योजना निर्माण मोर्चा
- राष्ट्रीय प्रयोगशाला : केन्द्रीय विंद्युत रासायनिक अनुसंधान संस्थान, कारैक्कुडि (Central Electro Chemical Reserch Institute Karaikudi) के विशेषज्ञ
- ग्राम पंचायत के संसाधन एवं नेतृत्व।

जवाहर भाई ने कहा कि इस प्रकार गाँव वालों के मिल–जुलकर किये गये प्रयासों से गाँव के संसाधनों का बेहतर उपयोग होने लगा और यह गाँव जो कि एक पंचायत भी था। तमिलनाडु राज्य की एक आदर्श पंचायत बन गया। कुन्ट्रक्कुड़ी एवं नेमम नामक दो पंचायत में संत खुद ही सरपंच की तरह कार्य करके क्षेत्रों में बहुत सारे उद्योग स्थापित करने लगे। उनमें से कुछ तो ग्रमीण बंजर जमीन को उपजाऊ बनाने का साहसिक कार्य था। दूसरी ओर कई ग्रामीण उद्योगों की इकाईयाँ तैयार की गईं (जैसे– काजू कारखाना एवं प्लास्टिक बैग बनाने की इकाई आदि)। कुछ बड़े कारखाने भी स्थापित हुए (जैसे– पोटेशियम क्लोरेट, कार बैटरी इत्यादि) कुन्ट्रक्कुड़ी एवं नेमम पंचायत क्षेत्र एक औद्योगिक क्षेत्र लगने लगा। इन सबकी योजना ग्राम योजना समिति (village planning forum) द्वारा बनाई गई। इसमें सेक्री (CECRI) नामक सी.एस. आई.आर. प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों की भी भागीदारी और तकनीकी योगदान था। इन सब कार्यों के कारण यह क्षेत्र इतना प्रसिद्ध हो गया की, तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गॉधी ने इसे कुन्ट्रक्कुड़ी मॉडल प्लानिंग नाम से योजना आयोग और उसकी प्रक्रियाओं में जोड़ दिया।

जवाहर भाई की बातें सुनकर तुलसी बाई एकदम प्रभावित हो गई। पूछने लगी : ''क्या यह सब सच है? क्या आज भी सब उद्योग चल रहे हैं? जवाहर भाई ने कहा ''एक ओर तो 1995 में संत गुजर गये, जिससे दो दशकों के प्रयत्न कुछ धीमे हो गये। दूसरी ओर बड़े कारखाने चलाना भी धीरे–धीरे असंभव होता गया। यह हाथी पालने जैसा काम हो गया। इससे यह साबित हुआ कि गाँव में सूक्ष्म एवं छोटे स्तर के उद्योग ही चल सकते हैं।

''मैंने भी यही सोचा। दूसरा : एक सवाल मेरे मन में उठ रहा है कि क्या वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों का तकनीकी ज्ञान एवं योजना ग्रामीणों पर थोपा जाना सही है?''

NOTES

श्रीलंकाः सामुदायिक कियान्वयन योजना पद्धति

(Community Implementation Planning Methodology)

''श्रीलंका के एक मिलियन भवन निर्माण नामक कार्यक्रम ने इसका सही उत्तर एवं मॉडल (वर्ष 1984–1989) दुनिया को दिखाया। इसके अंतर्गत 15 लाख घर बनाये गये (वर्ष 1989–1994)।''

''इस कार्यक्रम में वैज्ञानिकों ने ग्रामीण योजना बनाने में किस प्रकार मदद की।''

''इस कार्यक्रम को सामुदायिक कियान्वयन योजना पद्धति (Community Action Planning Methodology) का नाम दिया गया। इसमें जनप्रतिनिधियों की समिति और वैज्ञानिक दल अलग–अलग थे। वैज्ञानिक एवं तकनीकी दल हर क्षेत्र का विज्ञान के आधार पर विश्लेषण कर क्षेत्रीय संसाधनों के आधार पर उनके लिये संभावित योजनायें एवं प्रकल्प आदि तैयार करते और जनप्रतिनिधियों की समिति को समझाते। उनमें से किस विकल्प का चयन करना है यह लोगों की समिति पर निर्भर था।''

''यह तो बहुत ही प्रभावी और अच्छी पद्धति है। क्या इस प्रकार का प्रयत्न भारत में नहीं हुआ?''

''भारत में केरल में 'लोकाधारित योजना' (People's Planning) के नाम पर महत्वपूर्ण पहल हुई है। उसको जानना बहुत आवश्यक है।''

केरल की लोक आधारित योजना :

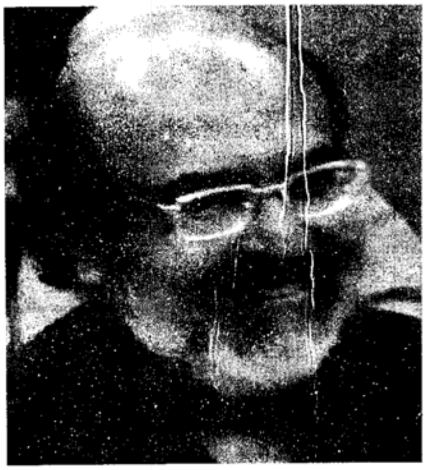
केरल की सरकार ने नवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान दो महत्वपूर्ण निर्णय लिये :

1. राज्य के बजट की 35 प्रतिशत धनराशि को पंचायतों के हाथ सौंपने का– ताकि हर गाँव अपनी–अपनी स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिये उसको इस्तेमाल कर सके। इसे बंधन मुक्त बजट पद्धति कहा जाता है।
2. एक आदर्श पद्धति खड़ी की जायेगी जिसके द्वारा जनभागीदारी सुनिश्चित की जायेगी।

आपमें से जिसके मन में Fig.3.3.3.b में चित्रित 'श्मशान रोड' की कहानी ने एक धक्का मारा होगा तो आप खुश होंगे कि : अच्छा हुआ कम से कम किसी राज्य में लोगों के ऊपर योजना न थोपे जाकर आवश्यकतानुसार निर्णय लेने का अधिकार दिया गया।

NOTES

लेकिन इसको कैसे करना है? क्योंकि हर गाँव के पास काफी राशि होगी और उसका सार्थक रूप से उपयोग करना आसान नहीं है।



चित्र **3.66 डॉ. इस्साक थॉमस**

- स्थानीय माँगों को सर्व सहमति से कैसे चिन्हित करना?
- उन समस्याओं का समाधान कौन देंगे? प्राक्कलन (एस्टीमेट) कौन तैयार करेंगे ?
- सूचीबद्ध की गई परियोजनाओं को विकासखंड एवं जिले स्तर तक जोड़नेवाले कौन लोग होंगे? सीमाओं के अंदर योजना रहे– ये मार्गदर्शन कैसे और कौन करेगा ?

केरल में इसके लिये पड़ोसी समूह द्वारा समस्याओं को चिन्हित करने का काम किया गया। संभावित माँगों (जैसे– शौचालय, भवन, कुँआ, पुल इत्यादि) की तकनीकों से संबंधित मार्गदर्शिकायें छापी गईं। इस तरीके से विशेषज्ञों की माँग को कम किया गया। यह संभव था– क्योंकि केरल एक शिक्षित राज्य है।

पूरे केरल में 12,000 टॉस्क फोर्स निर्मित हुईं, जिसके 1,20,000 सदस्यों की मदद से योजनाओं का निर्माण किया गया।

उक्त टॉस्क फोर्स पंचायत के वार्ड स्तर पर काम करता है और उसमें 10 लोग सदस्य के रूप में रहते हैं।

आज की स्थिति में केरल में 4 पंचवर्षीय योजनायें (1996–2001, 2001–2006, 2006–2011, 2011–2015), लगातार लोगों की भागीदारी से संचालित हो रही हैं। मोहल्ले/वार्ड स्तर से मुद्दे निकालने से लेकर अंत में वार्ड स्तर में योजना को अनुमोदित करने तक का कार्य सफल ढंग से केरल में हो रहा है। इस पद्धति में आधुनिक कम्प्यूटर सॉफ्टवेर का इस्तेमाल होने के

कारण लोक समिति को कदम–कदम पर अच्छा मार्गदर्शन मिलने के अलावा गणना करने का काम भी जल्दी हो जाता है।

वार्ड या मोहल्ले स्तर पर माँगों को चिन्हित करना

⇩

वार्ड / पंचायत स्तर से अनुमोदन

⇩

विकासखंड एवं जिला स्तर पर समन्वयन एवं समग्रीकरण

यह कार्य 1200 वार्डों में चलता है– ग्रामीण, नगरीय या आदिवासी क्षेत्र जिन्हें स्थानीय प्रशासनिक इकाई (Local Self Governance Unit) माना जाता है।

अंत में हर पंचायत या नगरीय इकाई के लिए अपनी–अपनी वार्षिक योजना, पंचवर्षीय योजना या दीर्घकालीन योजना (10 वर्ष / 20 वर्ष) बनाना केरल में आसान और संभव हो गया है। पूरे भारत के लिये यह एक आदर्श के रूप में है। हर पंचायत के लिए वार्षिक राशि 2 से 3 करोड़ रू. तक हो सकती है।

टीप : केरल में 978 पंचायत, 152 जनपद पंचायत, 14 जिले हैं जबकि मध्यप्रदेश में 23006 पंचायत, 313 जनपद पंचायत और 51 जिला पंचायत हैं।

3.3.4 सामुदायिक सहभागिता से निर्णय लेना (Decision Making through community Participation)

सामुदायिक सहभागिता से निर्णय लेना विकास कार्यों की सफलता के लिए आवश्यक है। आइये सामाजिक सहभागिता से निर्णय लेने के कुछ बुनियादी सिद्धांतों से आपका परिचय करायें।

3.3.4.1 भागीदारी एवं निर्णय लेने के सिद्धांत

एक सामुदायिक नेता को समुदाय के विकास के कार्य को आगे बढाते समय कदम–कदम पर अनेक निर्णय लेने पड़ते हैं, जैसे–

- समस्याओं की पहचान करना
- प्राथमिकता का निर्धारण करना
- उचित विकल्प की तलाश करना

NOTES

NOTES

- कार्ययोजना का निर्माण करना
- लागू करने के लिए निर्णय लेना
- परिणाम का मूल्यांकन करना
- संसाधनों की उपलब्धता के लिए निर्णय लेना इत्यादि।

इस मॉड्यूल की इकाई 1 में आपने देखा कि नेतृत्व की कई शैलियाँ हैं :

- निरंकुश शैली
- अहस्तक्षेप शैली
- जनतांत्रिक या सामूहिक निर्णय शैली

उपरोक्त तीनों शैलियों में जनतांत्रिक या सामूहिक निर्णय शैली सबसे अच्छी शैली है। यदि समुदाय को ऐसा लगता है कि सारे निर्णय नेता ही लेता है तो उसका विरोध होने लगता है। इसका सबसे आसान तरीका है व्यक्तिगत रूप से पीछे रहते हुए सामूहिक निर्णय लेकर सब की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके।

सामूहिक निर्णय लेने की तीन विधियों को यहाँ दर्शाया जा रहा है–

- **बहुमत–** बहुमत से निर्णय का मतलब है ऐसा निर्णय जिसका सर्वाधिक लोग समर्थन करे। बहुमत से निर्णय लेना एक नेता के लिए प्रायः अच्छी स्थिति नहीं मानी जाती है। यदि बहुत आवश्यक न हो तो बहुमत आने पर भी स्थगित करके पुनः आम सहमति या सर्वसहमति से निर्णय लेने का प्रयास करना चाहिए।

- **सर्व सहमति–** किसी नेता के लिए आदर्श स्थिति वह है, जिसमें वह सबकी सहमति से कोई निर्णय कराने में सफल होता है। ऐसी स्थिति में किसी विरोध के न होने से कार्यक्रम को लागू कराना आसान होता है।

  सर्वसहमति की स्थिति बहुत ही कठिन होती है। किसी न किसी का विरोध उभर के आ ही जाता है। ऐसी स्थिति में नेता का यह दायित्व है कि विरोधी को भी समझा बुझाकर उसकी भी सहमति प्राप्त कर लें। इसके लिए वह ऐसा कह सकता है कि कोई भी व्यक्ति विरोध तो कर सकता है। किन्तु विरोध तभी करे जब इससे बेहतर एक समाधान प्रस्तुत करे। प्रायः यह देखा जाता है कि विरोध तो आसानी से किया जा सकता है किन्तु समाधान देना कठिन होता है।

सर्व सहमति के बहाने कई संस्थानों में निर्णय लिये जाते हैं, जब उस संस्थान का नेतृत्व बहुत प्रभावशाली व्यक्ति द्वारा होता है। संभव है कि वह व्यक्ति

NOTES

सबके हित में ही निर्णय लेता हो। लोगों को विश्वास भी है, अतः किसी को उसके खिलाफ बोलने की आवश्यकता नहीं होती। यदि नेता तानाशाह (निरंकुश) होता है और विरोध को सहन नहीं करता– ऐसी परिस्थिति में भी कोई बोलता नहीं और लगता तो ऐसा है कि सर्वसहमति से निर्णय लिये जा रहे है।

इसका समाधान दो तरह से हो सकता है :

➢ **सर्वसहमति के प्रयत्न या प्रस्ताव को रद्द करना :**

मान लीजिये कि किसी मुद्दे पर कुछ लोगों की सहमति नहीं है। तब उनसे अपेक्षा है कि :

– वे अपनी ओर से ऐसे समाधान दें जिसको सब मान सकते हैं (या)

– वे दूसरी बैठक की तैयारी की जिम्मेदारी लें और उससे संबंधित प्रक्रियाओं में पहल करें -- जैसे सबके लिये मान्य विकल्प तैयार करना और उनके पास पहुँचाना, चर्चा में आगे रहकर लोगों को समझाने–बुझाने के लिये उचित जानकारी लाना इत्यादि।



चित्र **3.67 Photo of California Davis N-Street co-housing community**

यदि दूसरी बैठक में भी सहमति नहीं बनती तो और भी बैठक करवाना, यदि संभव हो सके, नहीं तो प्रस्ताव को ही वापस ले लेना।

यह अवसर भिन्न मत वाले उन्हीं सदस्यों को दिया जायेगा जो बैठकों में सामान्यतया भागीदारी करते हैं और सहकारी ढंग से काम करते हैं– जैसे ऊपर बताया गया।

➢**सर्व अनुमति का सिद्धान्त** : साधारणतया उन्हीं सदस्यों की असहमति को ध्यान में लेना उचित है जो निर्धारित अनुपात में बैठकों में भाग लेते हैं– उदाहरण के लिये 75 प्रतिशत बैठकों में, जिनमें विवाद से संबंधित बैठकों में तो पूर्ण रूप से भागीदार रहे हों। नहीं तो ऐसे लोग, जो खुद मुद्दों को समझने के अवसरों का भी इस्तेमाल नहीं करते, एक अवरोधक बन सकते हैं अन्यथा जनतांत्रिक ढंग से समाज कभी कोई निर्णय नहीं ले पायेगा।

दूसरी व्यावहारिक सोच यह है : ''सभी लोग एक ही समाधान को मानें। लेकिन यह संभव नहीं है, क्योंकि समाज में कई धर्म, कई विचारधारा और कई प्रकार की समस्याओं से लदे हुए लोग रहते हैं।

अतः यहाँ व्यावहारिक यह होगा कि पूर्व सहमति से किसी व्यवहारिक प्रतिशत को मान लिया जाय– उदाहरण : जिस स्तर पर 90 प्रतिशत लोगों की मंजूरी हो उसे सर्व सहमति मानकर क्रियान्वयन की ओर आगे बढ़ें। यह भी उचित होगा कि इन 10 प्रतिशत सदस्यों को भी अपने सुझावों को सबके सामने रखने का अवसर दिया जाय। कभी–कभी ये सुझाव इतने महत्वपूर्ण होंगे (शायद अद्यतन सूचनाओं के आधार पर) कि सभी लोग मान लेंगे। ऐसी परिस्थिति में प्रस्ताव उचित परिवर्तनों के साथ सर्वसहमति से पारित होने की भी संभावना है। नहीं तो 90 की मंजूरी के आधार पर आगे बढ़ना उचित है– यह मानकर की शेष 10 भी आगे बढ़ने के लिए अपनी मंजूरी दे रहे हैं। यद्यपि निर्णय से वे सहमत नहीं हैं। इस प्रकार की निर्णय पद्धति को

सर्व अनुमति कहा जाता है।

NOTES

3.3.4.2 भागीदारी के आधुनिक व्यावहारिक तरीके :

मिल–जुलकर योजना बनाना और मिल–जुलकर निर्णय लेना गणतंत्र की सफलता का मूल–मंत्र है। हर समूह में भी यही लागू है। परंतु जब तक जाति–प्रथा एवं सामंतवाद से समाज मुक्त नहीं होता तब तक आधा समूह (जो आर्थिक या सामाजिक स्तर पर पिछड़ा माना जाता है) अपने को खुले ढंग से अभिव्यक्त नहीं कर पाएगा। अतः जरूरी है कि कुछ तकनीक या युक्ति का उपयोग हो जिससे अपनी राय को स्वतंत्र रूप से प्रकट करना संभव हो जाय।



चित्र **3.68 आज कल विचार विमर्श कैसे चलते है? (विधानसभा आदि में।)**

सब मिलकर सोचने की, विचार–विमर्श करने की और निर्णय लेने की आजकल कई विधायें हैं, जिसमें कम्प्यूटर जैसे आधुनिक तंत्र भी इस्तेमाल होते हैं। गाँव के संदर्भ में संभावित सीधे–सादे तरीकों की जानकारी हम देना चाहेंगे:

(क) विचार संचालन :

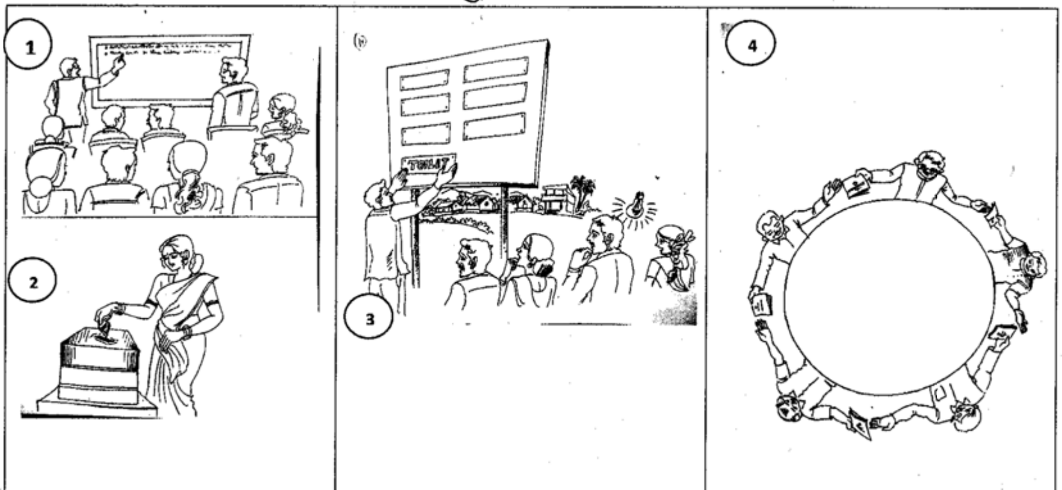
मान लीजिये पूरा गाँव इकट्ठा है और गाँव की किसी समस्या के लिये समाधान ढूँढना है, तो साधारणतया निम्न बातें हो सकती हैं :

NOTES

- कुछ लोग सरपंच या किसी के ऊपर पूरी जिम्मेदारी डालते हुए लंबे भाषण देंगे। कोई सुझाव नहीं। उनके भाषण की प्रतिक्रियाओं के रूप में मार–पीट भी हो सकती है। मूल उद्देश्य की ओर कोई प्रगति नहीं।
- कुछ लोग अपना वर्चस्व दिखाते हुए पूरा मैदान अपना समझकर दूसरों के लिए कोई समय नहीं छोड़ेंगे इससे जिनके मन में कोई महत्वपूर्ण राय है वह प्रकट/प्रस्तुत ही नहीं हो पाएगी।

ऐसी परिस्थिति में निम्न तकनीक फायदेमंद होगी।

- अपने सुझाव को एक पेटी में लिखकर डालना जैसे मतदान पेटी में डालते हैं।
- अपने सुझाव को एक कागज की पट्टी में मोटे अक्षर में लिखकर एक बोर्ड में (cork board) लगा देना चित्र.... जब सब लोगों की सोच मालूम हो जाती है तो उससे नये सुझाव भी पैदा हो जाते हैं।
- यदि पट्टी वगैरह के लिये सुविधा नहीं है तो एक बोर्ड में या दीवार में



चित्र **3.69** लोगों के बीच से विचारों को इकठ्ठे करके सूची बद्ध करने की आधुनिक पद्धतियां

I. खुले विचार मंच और बोर्ड में सुझावों को सूची बद्ध करना।

II. पट्टी मे सुझाव मोटे अक्षर से लिखे जाएं जो पिन द्वारा बोर्ड में लगाये जाते हैं।

III. ब्रेन राईटिंग (Brain Writting BW 5-4-3) का अभ्यास प्रचलन में है। जिसमें पाँच–पाँच व्यक्तियो की टोलियाँ बनायी जाती हैं। शीर्षक निर्धारित कर बोर्ड में स्पष्ट लिख दिया जाता है। हर व्यक्ति द्वारा अपने कागज में अधिकतम तीन सुझाव चन्द शब्दों में दिए जाते हैं–करीब चार मिनिट के समय में जब घंटी बजती है, कागज हस्तांतरित होते हैं– जैसे चित्र में दर्शित है।

बिन्दुवार प्रदर्शित कर सकते हैं चित्र ......बस यहाँ कुछ लोग उठकर बोलने से हिचकते हैं (क्योंकि वर्चस्व वाले लोग सुन रहे हैं, देख रहे हैं)।

NOTES

- एक आधुनिक तरीका है जिसको उपयोग करके सैकड़ों लोग मिलकर निर्धारित समय में (उदाहरणः एक घंटा) सैकडों सुझावों को सूचीबद्ध कर सकते हैं। इस प्रक्रिया/गतिविधि को दिमागी मंथन (Brain-Starming) कहते हैं।

a) इससे पहले लोग पांच–पांच की टोली में अलग–अलग गोल घेरे में बैठ जाते हैं।

b) सबके सामने एक प्रश्न या शीर्षक स्पष्ट रूप से दिया जाता है।

जैसे– "अपने गाँव को स्वच्छ और स्वास्थ्य बनाने के लिये कदम"

c) हर एक के हाथ में एक पूरा पृष्ठ कागज दिया जाता है जिसपर उससे कहा जाता है कि तीन सुझाव लिखें। करीब चार मिनट दिये जाते हैं (अतः इस प्रकरण को BW5-4-3 कहा जाता है– मतलब पाँच लोगों को चार मिनट में तीन–तीन सुझाव लिखने की प्रक्रिया)

d) उक्त गतिविधि के अंतः में हर टोली का हर सदस्य अपने लिखे कागज को अपने दाहिने बैठे व्यक्ति को हस्तांतरित करता है; उसी समय अपने बाएं बैठे व्यक्ति से कागज ले लेता है और पढ़ता है।

जब हर व्यक्ति दूसरों का विचार जानता है तो उसके मन में कुछ न कुछ नये विचार आते हैं। ऐसे आने वाले एक दो या तीन विचार को उसी कागज में लिखता है जो अभी उसके हाथ मे है।

e) अब दूसरी बार (चार मिनट के बाद) घंटी बजती है ओर कागज एक हाथ से दूसरे हाथ से पहुँचता है। ऐसे ही न्यूनतम 5 बार हो गया तो हर व्यक्ति अपने पुराने कागज को पुनः पा जाता है। उस सबको देखकर वह अपने पुराने विचारों में एकाध को काट सकता और दो तीन को जोड़ भी सकता है।

अब कागज और एक राउंड भी घुमाया जा सकता है या रोका जा सकता है।

NOTES

f) **टोली स्तर पर एकत्रित सुझावों की सूची (महत्वहीन छोड़कर) बनाना**

अब टोली के 5 में से एक व्यक्ति को समन्वयक के रूप में काम करने के लिये चयन किया जाता है। समन्वयक एक ताजा कागज लेकर सबकी मदद से एक नयी सूची बनाता है जिसमें न केवल सब सिफारिशें आ जाती हैं बल्कि कुछ कम महत्वपूर्ण सुझाव छोड़े भी जा सकते हैं, यदि सबको मंजूर है तो कभी कभी दो–तीन सुझावों को मिलाकर एक नया शब्द भी बन सकता है (जैसे बायोगैस, सोलर, पवन चक्की आदि को मिलाकर गैर पारंपरिक उर्जा लिखा जा सकता है)। कभी कभी यह भी मांगा जा सकता है कि हर एक टोली अपने सुझावों से सबसे महत्वपूर्ण 3 या 5 इस प्रकार के कम गिनती वाले सुझाव ही आगे बढ़ाये।

g) हर टोली से आये हुए सुझावों को शीट या बोर्ड पर प्रदर्शित किया जाता है (बेहतर होगा यदि पट्टी द्वारा किया जाये)। यदि 10 टोलीयां थी तो 50 से सौ सुझाव आवेंगे। इनमें देखा जायेगा कि कुछ सुझाव कई टोलियों में से आये हैं। असल में गिनती की जा सकती है कि कितनी टोली ने बताया। इसके आधार पर सुझावों की लोकप्रियता की भी जाँच कर सकते हैं। यह बाद में सबसे महत्वपूर्ण सुझावों को चिन्हित करने में काम आता है।

टीप: यह भी सत्य है कि कुछ क्रांतिकारी एवं अनोखे विचार किसी एक के मन में ही उभरते हैं। यदि हम लोकप्रियता को ही हमेशा आधार माने तो इस प्रकार के सृजनात्मक विचारों की सुनवायी नहीं होगी। अतः इस प्रकार के विचार मंथन में सबको अवसर मिलना चाहिये ताकि संबंधित व्यक्ति अपने विचार को सबके सामने रख सके।

किस विधा को अपनायें?

ऊपर लिखित विवरणों से यह स्पष्ट है कि सभी विधायें गाँव के लिये उपयुक्त नहीं हो सकतीं। इनमें दो विधायें आम तौर पर अनुकरणीय हैं:

जब गोपनीयता की आवश्यकता हो तो लिखित पर्चियों को पेटियों में डालना (Fig 3.3.4.c) के क्रं. 2 में दिखाया गया है।)

जब विषय ऐसा है कि गोपनीयता उतनी मायने नहीं रखती, तब खुले विचार मंच –जिसमें बिन्दुओं को तालिका में लिखवा सकते हैं। (जैसे Fig 3.3.4.c :के क्रं. 1 में दिखाया गया है।)

NOTES

सूचीबद्ध बिन्दुओं को महत्व के आधार पर श्रेणी–बद्ध करना
(Ranking of Listed Points on the Basis of Their Importance)

मान लीजिए कि समस्या है मंदिर में लगी सोने की मूर्ती की सुरक्षा। इसके लिए चार सुझाव आये और एक 5–सदस्यी दल को एक निर्णय करने जिम्मेदारी दी गई है।

हर सदस्य ने हर एक सुझाव को (अपने मन में हुए प्रभाव के आधार पर) 1 और 5 के बीच में अंक दिये :

5 प्वाइन्ट स्केल मेथड (5 point scale method)		
यदि अति श्रेष्ठ तो	(Excellent)	5
यदि बहुत अच्छा तो	(Very Good)	4
यदि अच्छा तो	(Good)	3
बुरा नहीं	(Not bad)	2
अतिसामान्य	(Ordinary)	1

निम्न प्रकार की सारणी निकल कर आई :

क्र.	सुझाव	सदस्य 1	सदस्य 2	सदस्य 3	सदस्य 4	सदस्य5	कुल	श्रेणी
1	CCTV लगाना	3	4	3	5	4	19	II
2	गाँव वालों द्वारा क्रम से पहरीदारी करना	5	5	4	4	5	23	I
3	पास में एक पुलिस आऊट पोस्ट	4	3	5	2	3	17	III
4	कुछ नहीं करना भगवान देख लेगा	1	2	1	3	2	9	

आपको लगता होगा कि जब हाथ उठाकर बहुमत को आसानी से पहचान सकते हैं तो इतनी गड़बड़ी वाली पद्धति को क्यों अपनाये। ये सोच तो सही है, परन्तु हाथ उठाते समय कोई प्रभावी व्यक्ति अपने वर्चस्व को अपने हाव

NOTES

भाव से प्रकट करके अपनी इच्छानुसार सभी का समर्थन पाने में सफल हो सकता है। इसलिए कुछ गोपनीय अंक देने वाले तकनीक का इस्तेमाल करके अनचाहे प्रभावों से महत्वपूर्ण निर्णयों की दिशा बदले जाने से बचा जा सकता है।

वैसे तो बहुत सारी आधुनिक तकनीक उभरी हैं। कुछ कम्प्यूटर की सहायता से भी करवाई जाती हैं, परन्तु हम इन सब का वर्णन अभी नहीं करेगें। उनकी जानकरी तब दी जायेगी जब आप कम्प्यूटर से अच्छी तरह परिचित हो जायेंगे और वैज्ञानिक ढंग से निर्णय लेने वाली पद्धितियों को आसानी से सीख पायेंगे।

हमने जाना

- भाषा, परम्परा, कौशल, विचार या व्यवसाय के आधार पर पारस्परिक लाभ एवं हितों की रक्षा के लिए सामान्यतः समुदाय का निर्माण होता है।
- किसी कार्य में सबका सहयोग प्राप्त करना ही सहभागिता है।
- सहभागिता तीन प्रकार है–शारीरिक सहभागिता, आर्थिक सहभागिता एवं मानसिक या बौद्धिक सहभागिता ।
- जब योजना निर्माण एवं उसके क्रियान्वयन में आम जनता भाग लेती है, तभी योजना में यथार्थ धरातल पर लागू करने की क्षमता होती है।
- किसी भी कार्यक्रम के पूर्व विचार कर यह तय करना, कि क्या करना है? कैसे करना है? कौन करेगा? कब होगा? तथा इस पर कितना खर्च होगा? यह प्रक्रिया योजना कहलाती है।
- केवल समस्याओं की सूची बनाने से ही योजना नहीं बन जाती। योजना बनाने के लिए यह भी जानना होगा कि काम करवाने के लिए साधन कहाँ से आयेंगे?
- आवश्यक जानकारियाँ गाँव के लोगों से ही जुटाने की पद्धति को विद्वान सहभागी ग्रामीण ऑकलन पद्धति (पी.आर.ए.:Participatory Rural Appraisal) कहते हैं।
- भारत में केरल में 'लोकाधारित योजना' (Community based Planning) के नाम पर महत्वपूर्ण पहल हुई है। इसमें राज्य के बजट की 35 प्रतिशत

धनराशि को पंचायतों को दे दिया गया ताकि हर गाँव अपनी–अपनी स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिये उसको इस्तेमान कर सके।

- सामुदायिक स्तर पर निर्णय लेने के लिए जनतांत्रिक या सामूहिक निर्णय शैली सबसे अच्छी शैली है। इसमें नेता पीछे रहते हुए सामूहिक निर्णय लेकर सब की भागीदारी ले सकता है
- सामूहिक निर्णय की तीन प्रमुख विधियां हैं– बहुमत, सर्व सहमति और सर्व अनुमति।
- भागीदारी के आधुनिक व्यवहारिक तरीकों में से एक है– विचार संचालन।

NOTES

कठिन शब्दों के अर्थ

सहभागी ग्रामीण ऑकलन पद्धति (पी.आर.ए. : Participatory rural Appraisal) – यह अनेक पद्धतियों का समूह है जो गाँव के लोगो के सहयोग से योजना बनाने, उसे लागू करने, उसकी मानिटरिंग एवं मूल्यांकन करने के काम आती है।

स्वाट (SWOT) – पी.आर.ए की एक विधि जिसमें गाँव के लोगो के सहयोग से गाँव की ताकत, कमजोरियाँ, अवसर, तथा चुनौतियाँ ज्ञात की जाती हैं।

निर्णय – समस्या के समाधान के लिए उपस्थित अनेक विकल्पों में से सर्वश्रेष्ठ विकल्प का चयन करना।

विचार संचालन – सबकी राय जानने की एक विधि।

अभ्यास के लिए प्रश्न

संक्षिप्त में उत्तर दें

1. समुदाय किसे कहते हैं ?
2. सहभागिता कितने प्रकार की होती है ?
3. सक्रिय सहभागिता क्या है ?
4. सामूहिक नेतृत्व की सफलता में सामूहिक सहभागिता क्यों आवश्यक है ?
5. करट्टलगन पट्टी नामक गाँव में बना भवन क्यों उद्घाटन से पहले ही गिर गया ?

NOTES

6. केन्द्र सरकार, राज्य सरकार द्वारा बनी कुछ योजनायें असफल क्यों हो जाती हैं ?
7. कुन्ट्रक्कुड़ी मॉडल प्लानिंग क्या है ?
8. केरल की लोक आधारित योजना पूरे भारत के लिये एक आदर्श के रूप क्यों मानी जाती है ?
9. सामूहिक निर्णय लेने की सबसे अच्छी विधि कौन सी है ?

अधिक जानकारी के लिए संदर्भ सूत्र

1. अण्णा हजारे की आत्मकथा ' मेरा गाँव, मेरा पुण्य तीर्थ' पढना। इसमें नेतृत्व एवं जन भागीदारी का सुन्दर उदाहरण मिलता है।
2. इंटरनेट द्वारा केरल के लोक आधारित योजना के संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त करें।

■■■

3.4 : सामुदायिक नेतृत्व एवं सामाजिक उद्यमिता
(Community Leadership and Social Entrepreneurship)

NOTES

उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़कर आप जान सकेंगे कि –

- समुदाय क्या है?
- किसी समुदाय में नेतृत्व कैसे उभरता है,?
- सामुदायिक नेतृत्व क्या होता है?
- सामुदायिक नेतृत्व की प्रमुख विशेषताएँ क्या है?
- सामुदायिक नेता वित्तीय समस्याओं के हल के लिए एक सामाजिक उद्यमी के रूप में कैसे कार्य करता है?
- सामाजिक उद्यमिता के क्षेत्र में किए गए प्रमुख प्रयोग क्या हैं ?

हमने पिछली इकाईयों में यह जाना कि नेता क्या होता है? नेतृत्व क्या होता है? नेतृत्व के विभिन्न प्रकार क्या हैं ? खास तौर पर हम स्वयं प्रेरित सामाजिक नेतृत्व सबंधित कई सिद्धांतो को ढूँढ़ने में सफल हो पाये हैं। कई उदाहरणों द्वारा सामाजिक नेतृत्व की शैली को भी गहराई से समझने की कोशिश की है।

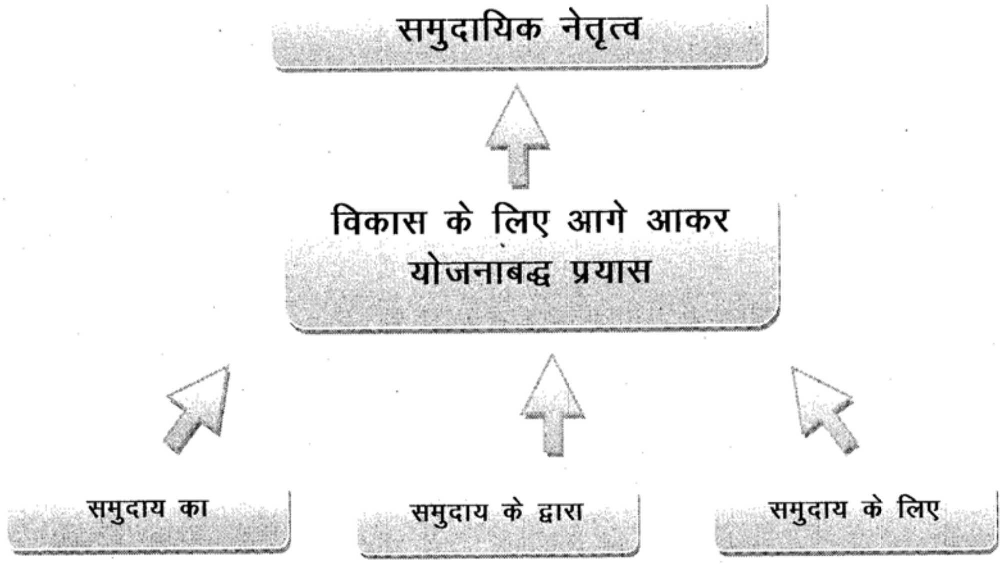
इस इकाई में हम जानेंगे कि समाज सेवा एवं विकास के कार्य को उद्यमिता की शैली में करके कैसे समाजिक कार्य में एक स्वावलम्बी कार्यशैली ला सकते हैं।

3.4.1 : सामुदायिक नेतृत्व –एक पुनदर्शन

प्रत्येक समुदाय से कुछ व्यक्ति आगे आकर समुदाय के विकास के मार्ग में आने वाली बाधाओं के समाधान के लिए प्रयास करते हैं। ऐसी पहल करने वालों को ही हम सामुदायिक नेतृत्वकर्ता कहते है।

किसी विशिष्ट समुदाय के किसी सदस्य का स्वप्रेरणा या किसी बाह्य प्रेरणा से आगे आकर समुदाय का समुदाय के द्वारा तथा समुदाय के लिये विकास का योजनाबद्ध प्रयास करना सामुदायिक नेतृत्व है।

NOTES



चित्र **3.70 समुदायिक नेतृत्व की परिभाषा**

पिछली इकाई में हमने बांग्लादेश के मो. युनूस के उदाहरण से यह जाना कि –

समाज के किसी एक क्षेत्र की समस्याओं के समाधान के लिए किसी व्यक्ति के मन में कोई विचार या चिन्तन उभरता है तो उस क्षेत्र की पीड़ा से व्यथित होकर वह विकास में आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए एक नया मार्ग, एक नई तकनीक एवं एक नई रणनीति का सृजन करता है। उसका सबसे पहले वह खुद पालन करता है और खुद पर अमल करता है। इस कारण लोग उससे प्रभावित होकर उसके साथ जुड़ते जाते हैं। इस प्रकार एक सामुदायिक नेतृत्व का जन्म होता है। यह सामुदायिक नेतृत्व अण्णा हजारे, चण्डी प्रसाद भट्ट, मो. युनूस, इलंगो या नाना जी देशमुख के रूप में उभरता है।

इस तरह के व्यक्ति उक्त कार्य में **खुद को एक माँ के स्थान में रख कर** सामाज कार्य शुरू करते हैं और एक–एक कदम आगे बढ़ते हैं :

- समाज में जागरूकता का सृजन
- परिवर्तन करके दिखाना
- लोगों को परिवर्तन के लिए प्रेरित करना
- समुदाय को संगठित करके गतिशील बनाना
- वंचित वर्गों को न्याय दिलाना........इत्यादि।

इस प्रकार सामाजिक नेता परिस्थितियों को बदल सकता है।

NOTES

अब पुनः हम कुमारप्पा के सिद्धांत पर विचार करें तो हमें महसूस होगा कि शुरूआत में, जब गरीब लोग अपनी स्थिति, लक्ष्य एवं रास्ता जानने की शक्ति नहीं रखते तब सामाजिक नेता, एक माँ की तरह, उनकी मदद करता है। परन्तु वह चाहता है कि यथा शीघ्र समाज अपने पैरों पर खड़ा हो जाये।



चित्र **3.71** शुरूआत मे मां की शैली परन्तु शास्वत रखने के लिए सामाजिक उद्यमिता शैली

दूसरी ओर से सामाजिक नेतृत्वकर्ता का दायित्व बनता है कि वो अपने भी विकास पर ध्यान दे। इसमें आर्थिक पक्ष में अपने माँगो की आपूर्ति अनिवार्य हो जाती है।

आप देखेंगे कि इन संदर्भो में मधुमक्खी का मॉडल (Fig 3.4.1.b) उपयोगी सिद्ध होगा। आइये इससे संबंधित सिद्धांत यानि सामाजिक उद्यमिता को समझने की कोशिश करें।

3.4.2 : सामाजिक उद्यमिता (Social Entrepreneurship)

उद्यमिता क्या है ?

जब कोई व्यक्ति जोखिम उठाकर किसी उद्यम या कार्य पर पहल करके आगे बढ़ाता है तो उसे उद्यमी कहते हैं। यह प्रक्रिया उद्यमिता कहलाती है।

उद्यमी कौन होता है ?

संबंधित अंग्रेजी शब्द ''entrepreneur'' इसका उत्तर देता है।

entre, prenez इन दोनों शब्दों से मिलकर ''entrepreneur' (इसे उद्यमी या जोखिम उठाने वाला भी कहते हैं) शब्द बना है। entre का मतलब ''प्रवेश करना'' और prenez का मतलब ''हाथों में उठाना''।

अर्थात उद्यमी ऐसे लोग होते हैं, जो किसी व्यावसायिक चुनौती को चिन्हित करके अपने हाथों में लेते हैं तथा उसकी सफलता के लिए अथक प्रयत्न करते हैं और उसे सफलता की ओर ले जाते हैं।

NOTES

उद्यमी का लक्ष्य सिर्फ ''धनार्जन'' या अधिकतम लाभ की प्राप्ति है, और कुछ नहीं।

अपने मंजिल पर पहुंचने के लिए वे :

- जोखिम उठाते हैं
- नवाचार के माध्यम को अपनाते हैं, एवं
- अथक परिश्रम करके अपने व्यवसाय को सफल बनाते है।

यदि आप अण्णा हजारे, इलंगो या राजेन्द्र सिंह की कहानी पर पुनः नजर डालें तो आपको लगेगा कि इन लोगों ने भी अपने प्रयत्न में–

- जोखिम उठायें,
- नवाचारों को अपनाया और
- अथक प्रयत्न द्वारा कामयाबी हासिल की।

बस फर्क सिर्फ यह था कि–

साधारण उद्यमी जहाँ खुद के आर्थिक लाभ के लक्ष्य से प्रेरित होते हैं वहीं पर अण्णा हजारे जैसे लोगों की नजर समाज के लाभ के ऊपर रही है।

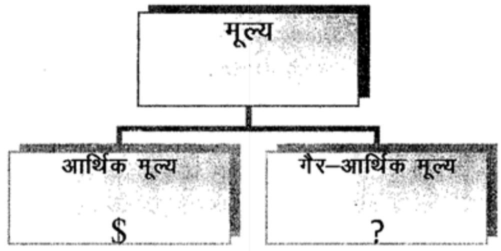
आज समस्त विश्व में यह समझ बन गई है (भले ही देर से) कि इस दूसरे किस्म के (अण्णा हजारे जैसे) लोगों को भी ''उद्यमी'' माना जाये। इनकी विशेषता को व्यक्त करने के लिए ''सामाजिक उद्यमी'' (social entrepreneur) शब्द का इस्तेमाल कर सकते हैं। इनके द्वारा किए जा रहे कार्य को सामाजिक उद्यम कह सकते हैं।

सामाजिक उद्यम में आर्थिक लाभ हो या न हो परन्तु कुछ न कुछ सामाजिक लाभ (लोकहित) समाहित होता है।

उद्यमी और सामाजिक उद्यमी में अंतर
(Difference between Entrepreneur and Social Entrepreneur)

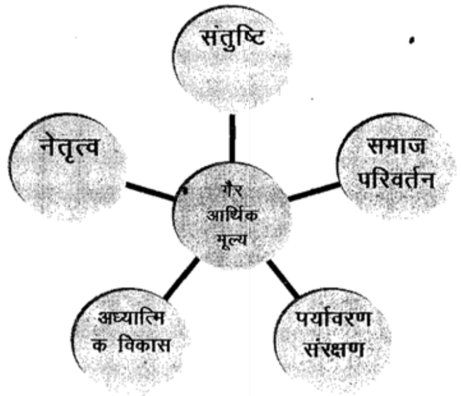
NOTES

उद्यमी और सामाजिक उद्यमी दोनों ही मूल्य की खोज में लगे रहते है। जहाँ एक उद्यमी ''आर्थिक मूल्य'' या ''डॉलर'' के पीछे पड़ा रहता है वहीं दूसरे किस्म के लोग या सामाजिक उद्यमी भी एक तरह के मूल्य के पीछे लगे रहते है, जिसको ''गैर–आर्थिक मूल्य'' मान सकते हैं।



चित्र **3.72 आर्थिक मूल्य एवं गैर आर्थिक मूल्य**

जैसे– समाज सेवा द्वारा संतुष्टि, समाज परिवर्तन, पर्यावरण संरक्षण, नेतृत्व हासिल करना या अध्यात्मिक विकास इत्यादि।



चित्र **3.73 गैर आर्थिक मूल्य क्या हैं**

अब आप सोचेंगे कि विकास के संदर्भ में सामाजिक उद्यमियों की क्या भूमिका है? क्या मात्र उद्योगपतियों द्वारा उत्पादन एवं सेवा को बढ़ाने से देश का उन्नयन नहीं होगा?

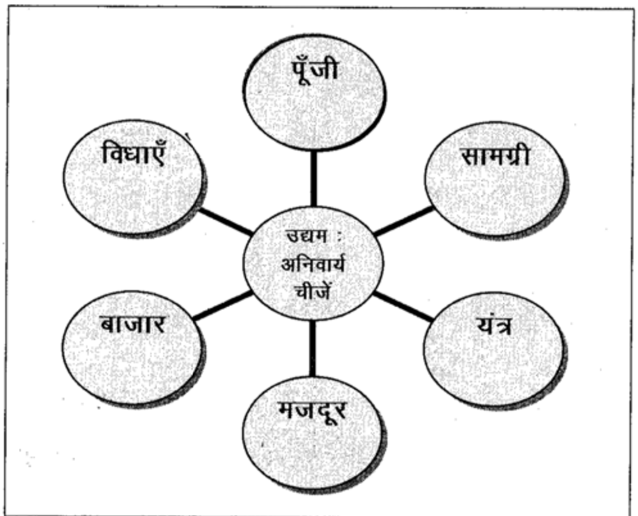
हाँ, देश के जी.डी.पी. का उन्नयन तो जरूर होगा। आज भी भारत के उद्योगपति इंग्लैण्ड के बड़े–बड़े उद्योगों के खुद मालिक बन रहे हैं और आदर्श ढंग से चला रहे हैं। दुनिया के अरबपतियों में भारतीय उद्यमियों की संख्या कम नहीं है। परन्तु भारत आज भी साक्षरता, गरीबी, एवं स्वास्थ्य के पैमाने पर दुनिया के सबसे निचले स्थान पर खड़ा है।

क्या एक उद्यमी सुदूर क्षेत्र में बसे, पिछड़े वर्ग के समूहों को अपने प्रयत्न सें अपनी भागीदारी द्वारा आगे बढ़ने के लिए पहल कर सकता है? आइए इसे समझने की कोशिश करें।

NOTES

एक उद्यम स्थापित करने के संदर्भ में निम्न चीजें अनिवार्य है–

- पूँजी (Money)
- सामग्री (Materials)
- यंत्र (Machines)
- मानव (Manpower)
- बाजार (Market)
- विधाएँ (Methods/ processes)



चित्र **3.74** उद्यम के संदर्भ मे अनिवार्य तथ्यं

यह कल्पना करना आसान है कि–

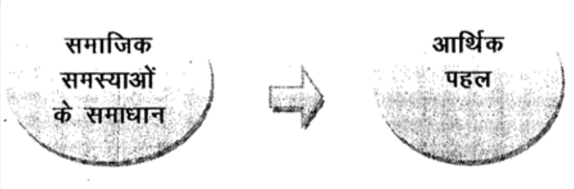
- साधारणतया उद्यमी खूब पैसे वाले ग्राहक को ही अपना मार्केट समझकर जोखिम उठायेगा न कि सुदूर में स्थित गरीबों को जिनके पास खरीदने की शक्ति ही नहीं है।
- उद्यमी सबसे शक्तिशाली मशीन का इस्तेमाल करेगा न कि मजदूरों का।
- उद्यमी सबसे ज्यादा कुशल मानव संसाधनों को ही जोड़ेगा न कि गरीब अनपढ़ लोगों को जिनमें हुनर की कमी है।
- उद्यमी सबसे आधुनिक और बेहतर तकनीक को अपनायेगा न कि साधारण मनुष्यों से चलाए जाने लायक तकनीकों को।
- उद्यमी सिर्फ वही प्रक्रिया अपनायेगा जो बढ़िया है और उसी बाजार का लक्ष्य रखेगा जिससे उसे सबसे ज्यादा मुनाफा मिलेगा न कि गरीब क्षेत्र के ग्राहक जिनके पास क्रय करने की शक्ति नहीं है।

ऐसे संदर्भ में सुदूर गरीब क्षेत्र के आर्थिक विकास और उसके द्वारा सामुदायिक विकास को पाने के लिए ऐसे प्रेरित उद्यमियों की जरूरत है जो

बहुत सी बाधाओं के बाद भी कुछ सफलता प्राप्त कर सकता है और जिनका लक्ष्य लाभ कमाना नहीं बल्कि कुछ नैतिक जिम्मेंदारी निभाना भी है।

NOTES

कई जगहों में सामाजिक समस्याओं की प्राथमिकता इतनी ज्यादा है कि उनके समाधान ढूंढे बिना आर्थिक विकास पर पहल नहीं कर सकते।



चित्र **3.75** समाजिक प्रश्न पहले या आर्थिक प्रश्न पहले ?

ऐसे संदर्भ में पहला काम तो सामाजिक उद्यमियों का ही होता है। हमने पहले ही उल्लेख किया है कि कार्यशैली में सामाजिक उद्यमी भी आर्थिक उद्यमी की भाँति सृजनात्मकता, निरन्तर प्रयत्न, और जोखिम उठाने की क्षमता रखते हैं और वांछित मूल्यों (–प्रतिष्ठा, आत्मसंतुष्टि, नेतृत्व का अवसर,सेवा और त्याग का अवसर इत्यादि) को प्राप्त करते हैं।

अब हम वर्तमान वैश्विक परिस्थिति में सामाजिक उद्यमिता की क्या भूमिका है, के बारे में समझेंगे। इस प्रश्न को समझने के लिए हमें विश्व के दो प्रकार के विकास माडलों को समझना पड़ेगा।

समाजवादी एवं पूँजीवादी विकास के बीच का रास्ता : सामाजिक उद्यमिता

समाजवादी विचारधारा के अनुसार राज्य स्वयं नेतृत्व देकर आर्थिक और सामाजिक विकास का कार्य खुद ही करेगा, निजी नागरिक या उद्यमी की रचनात्मकता पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाएगा।

इसके विपरीत पूँजीवादी व्यवस्था में राज्य की आर्थिक गतिविधियाँ लगभग पूरी तरह निजी हाथों में होती हैं, जिन्हे पूँजीपति कहते हैं। पूँजीपति समस्त आर्थिक व्यवस्था पूरी तरह निजी हाथों में ले लेते हैं। पूरा वातावरण पूँजीपतियों को ही ज्यादा लाभ पहुँचाने का होने के कारण निचले तबके के लोगों को विकास का लाभ पहुँच ही नहीं पाता।

पिछले कुछ दशकों की घटनाओं से यह बात उभर कर सामने आती है कि अनेक समस्याओं के समाधान समाजवाद और पूंजीवाद के बीच के रास्ते में निहित है। वास्तव में ऐसे संदर्भ के लिए सामाजिक उद्यमिता एक जाँचा परखा विकल्प है। इसके माध्यम से निजी नागरिक की पहल, नवाचार, गतिशीलता आदि का पूरा–पूरा उपयोग सामाजिक समस्याओं के निराकरण के लिए हो सकता है। इस प्रकार यह आज के युग की आवश्यकता भी है। आश्चर्य नहीं है कि पिछले कुछ दशकों में यह विश्वविद्यालयों में भी पठन–पाठन का महत्वपूर्ण बिन्दु बन गया है।

NOTES

वास्तव में सामाजिक उद्यमिता गांधी जी के "धर्मकर्ता"(trusteeship) सिद्धांत का ही एक आधुनिक रूप है। यहां का 'धर्म' शब्द भी 'धारण' शंब्द का पर्यायवाची है।

सामाजिक उद्यमी क्या जन्म से होते हैं या परिस्थितियाँ उन्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित करती हैं ?

ऐसा लगता है कि हमारे देश में पर्याप्त संख्या में सामुदायिक नेता सामाजिक उद्यमी बनने हेतु उपलब्ध हो सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि सही प्रशिक्षण के द्वारा उनकी क्षमता को बढ़ाकर उन्हे अधिक से अधिक ऐसे सामाजिक कार्यों से जोड़ा जाये ताकि जनहित एवं समाज विकास संभव हो सके। मुख्यमंत्री सामाजिक नेतृत्व कौशल विकास ऐसा ही एक प्रयत्न है।

3.4.3 : सामाजिक उद्यमिता – उदाहरण (Social Entrepreneurship : Examples)

ऊपर बताई गई बातों से आपको महसूस होगा कि अण्णा हजारे, राजेन्द्र सिंह, इलंगो, कुन्ट्रक्कुडि अडिगलार आदि महान सामाजिक नेता क्यों सामाजिक उद्यमी के श्रेणी में आते हैं। हाँ, वे डॉलर के पीछे कभी नहीं दौड़े। उन्होने सुख सम्पत्ति के लिए सारे काम किये। अपनी सुख समपत्ति के लिए नहीं । वरन् सदियों से शोषित वर्गो की मुक्ति के लिए; लगातार चली आ रही समस्याओं के समाधान के लिए प्रयास किया।

उन्होंने सृजनात्मक तरीकों को ढूंढा, निरंतर प्रयत्न किया और काम्याबी हासिल की। ऐसे ही महान व्यक्तियों की कुछ कहानियां हम इकांई 2.5 में प्रस्तुत करेंगे। अब आइये हम श्री बिन्देश्वर पाठक के काम के बारे में बतायेंगे जिससे आपको लगेगा पुरानी प्रथाओं से मुक्ति पाने के लिए कितने बड़े अभियान को कितने लम्बे अरसे तक चलाना पड़ता है।

बिन्देश्वर पाठक (सुलभ इंटरनेशनल)

नगरों में मल विसर्जन इत्यादि से होने वाली गंदगी एवं पर्यावरणीय समस्या को देखकर बिन्देश्वर पाठक ने सुलभ इंटरनेशनल की स्थापना की। जिसके माध्यम से आज देश के समस्त रेलवे स्टेशनों, बस स्टेशनों एवं अन्य सार्वजनिक स्थलों पर सुलभ कॉम्प्लेक्स की स्थापना करके स्वच्छता एवं प्रदूषण मुक्त पर्यावरण के निर्माण में सफलता हासिल की जा रही है।

बिन्देश्वर, जो जन्म से ब्राम्हण थे, महसूस करने लगे कि मानव को मानव के मल को ढोने की स्थिति में रखना एक बड़ा पाप है। उन्होंने उपलब्ध तकनीक के आधार पर सुलभ शौचालय नामक मॉडल बना दिया और सफलता

के साथ लागू करके दिखाया। परन्तु समस्या उतनी आसान नहीं थी। जिस जन को एक शर्मनाक स्थिति से मुक्त करने के लिए उन्होंने यह विकल्प खड़ा किया वही लोग अब हजारों हजारों की संख्या में बेरोजगार हो गए और उनके लिए आजीविका का विकल्प ढूंढ़ने की जिम्मेदारी भी उन्हीं के

NOTES



चित्र **3.76** बिन्देश्वर पाठ्क, शुलभ शौचालय माडल और संस्थान का प्रतीक

कंधे पर आ गई, किन्तु बिन्देश्वर पाठ्क के लिए इन गरीबों को प्रशिक्षित कर वैकल्पिक आजीविका दिलाना उतना आसान नहीं था। नीचे दी गई सांख्यिकि से इसकी वृहदता के बारे में अंदाजा लगाया जा सकता है, आपको इस वृहद काम के बारे में पता चलेगा :

- ☞ सुलभ शौचालय द्वारा मल ढोने के अभिशाप से मुक्त हुए शहर/कस्बे : 240
- ☞ सुलभ से मिलकर काम करने वाले स्वयंसेवी : 50.000
- ☞ सुलभ शौचालय को उपयोग करने वाले : 100 लाख
- ☞ सुलभ द्वारा रोजगार पाने वाले लोग : 35,000
- ☞ सुलभ द्वारा बनाये सार्वजनिक शौचालय :
- ☞ सुलभ द्वारा बनाये गये व्यक्तिगत शौचालय :
- ☞ सुलभ द्वारा संबंधित मल ढ़ोने वाले बच्चो के लिए उच्चस्तरीय शालाये

3.4.4 मोहम्मद यूनुस का सामाजिक व्यवसाय (social business) सिद्धांत :

अनुभाग 3.4.1 में हमने दो तरह के उद्यमियों का मॉडल आपके सामने प्रस्तुत किया :

NOTES

- मुनाफे के लक्ष्य लेकर काम करने वाले आर्थिक उद्यमी (economic entrepreneur)
- समाज की जटिल समस्याओं के समाधान के लिए काम करने वाले सामाजिक उद्यमी (social entrepreneur)।

वहाँ की प्रस्तुती से ऐसा लगा होगा कि दोनों अलग प्रकार के सिद्धांत हैं। बस दोनों को बाँधने वाला शब्द सिर्फ मूल्य है (एक को हमने डॉलर वेल्यू या आर्थिक मूल्य बताया; दूसरे को हमने गैर–आर्थिक मूल्य बताया और काफी उदाहरण भी दिये (Fig 3.4.2 .b)

डॉ. मोहमम्द यूनुस ने एक ऐसा व्याख्यान दिया है जिसके द्वारा उक्त दोनो सिद्धांत एक ही कतार पर खडे किये जा सकते है। उन्होने कहा है कि :

- आर्थिक उद्यमिता के अस्तित्व के लिए तो मुनाफा अत्यंत जरूरी है क्योंकि कोई भी ऐसा व्यवसाय नहीं करना चाहेगा जिसमें पूरी तरह से नुकसान निश्चित हो।

- सामाजिक व्यवसाय (social business) , यूनुस के अनुसार, ऐसा व्यवसाय है जिसके लक्ष्य के अन्तर्गत सामाजिक विकास से संबधित कुछ मुद्दे– (जैसे : गरीबो के लिए स्वास्थ्य, आवास, पोषण, साक्षरता.....) जुड़े हों और कम्पनी का उद्देश्य सिर्फ अपनी पूंजी वापस पाना होना चाहिए न कि मुनाफा पाना। (no profit, no loss)



चित्र **3.77** Dr. Md Yunus & the social business 'Grameen Danone' ;सूक्ष्म पोषको से युक्त दही)

उदाहरण के रूप में : सस्ता मिनरल वॉटर जिससे बीमारी को रोक सकें। सस्ते दूध का पैकेट ताकि गरीब बच्चों को सही खुराख मिल जाए– इस प्रकार की कम्पनियाँ बांगलादेश एवं दक्षिण अमेरिका जैसे कुछ देशों में विकसित हुई हैं।

NOTES

Table 3.78 मो. यूनुस की "ग्रामीण" संस्थान के साथ मिलकर दुनिया के कुछ बडे उद्योग ने गरीबों के लिए उत्पाद बनाये (उदाहरण)			
क्र	उद्योग का नाम	उत्पादन	टीप
1.	ग्रामीण इंटेल Grameen Intel	सूचना प्रौद्योगिकी समाधान Information Technology Soloution जैसे मृतिका (Mrittika) – मृदा परीक्षण अंकुर (Ankur)–बीज का चयन शुमाता (Shumata)– जच्चा की देखभाल के लिए डोलना (Dolna)– टीकाकरण प्रबंधन साफ्टवेयर (Tracking through SMS)	Intel कम्पनी द्वारा सोशल बिजेनस के रूप में
2.	Grameen Danone	सूक्ष्म पोषकों से युक्त दही	2006 Plan for 50 plants
3.	Grameen Veolia Water Limted	जल का शुद्धीकरण एवं वितरण	50-50 Joint venture to help 1 lac Population
4.	Grameen BASF	मच्छर जाल बनाना	
5.	Grameen GC Eye Care Hospital	10,000 मोतियां बिन्द चिकित्सा एवं 50,000 आँखें के परीक्षण के लिए	By GB in 2001 another starting

3.4.5 सामाजिक नेता किस प्रकार आर्थिक स्वावलंबन स्थापित करें :

'आर्थिक रूप से स्वावलम्बी सामुदायिक नेता'

कई युवक/युवतियों में सामाजिक विकास कार्य करने की इच्छा होने के बावजूद उनमें कई आर्थिक अभाव के कारण आगे नहीं बढ पाते हैं। सबसे पहले तो उनके खुद के परिवार के निर्वहन के लिए धन की आवश्यकता होती है लेकिन बेरोजगारी के चलते ऐसे कई युवक अपने सपनों को सकार नहीं कर पाते हैं। अब कौन से उपाय हैं जिसके द्वारा वे अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को भी पूरा कर सकते हैं; उसी समय सामाजिक सेवा के अपने लक्ष्यों को भी प्राप्त कर सकते हैं।

- स्वैच्छिक संस्थान चलाना एक उपाय हो सकता है – जिसके द्वारा सरकारी योजना को लोगों तक पहुंचाने का एक माध्यम बनकर काम शुरू कर सकते हैं। धीरे– धीरे जब नवाचार द्वारा क्षेत्रीय समस्याओं के निदान ढूंढने में सफल होते जायेंगे तब संस्थान को अपनी इच्छानुसार

NOTES

योजना चलाने के लिए सरकारी या निजी संस्थानों द्वारा अनुदान मिलने की सम्भावना बढती जायेगी।

- जो स्वैच्छिक संस्थान कार्य कर रहे हैं उनके साथ काम करना ताकि परिवार का निर्वहन भी होता रहे और समाज को सही दिशा में ले जाने का एक रास्ता और एक प्लेटफार्म भी मिल सके।
- स्वयंसेवी संस्था के संदर्भ में नकारात्मक पक्ष तो यह रहा है कि उसको एक सेवा संस्थान के रूप में काम करना पडता है (as a society -under the society registration act 1913) अतः मुनाफा वाले संस्थान के अंदर होना मुश्किल था (क्योकि सरकार को अन्य उद्योगों की भांति कर लगाना पडता है)। परन्तु आजकल Section-25 Act निकला है जिसके तहत अब सेवा संस्थान का कार्य करने के साथ–साथ उसमें मुनाफा वाले उद्योगों को भी जोडने की सम्भावना बढ गई है। आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछडे समाजों को ग्रामीण उद्योगों के जरिये आजीविका उपलब्ध कराने का अवसर सामाजिक नेताओं के लिए अब सम्भव है। बस सत्य तो यह है कि उद्यम के लिए दिन रात मेहनत करना पडता है– वह भी दुर्गम वातावरण में। इसी प्रकार समाज परिवर्तन काम के लिए भी दिन रात संघर्ष करना पडता है। यह दोनो एक साथ सम्भव न होने के कारण समाज सेवियों के लिए हमेशा दूसरों की सहायता के लिए हाथ फैलाना पडता है। इस समस्या का समाधान ढूंढना सामाजिक नेताओं को क्रियाशील बनाने में काफी मददगार होगा।
- 'उद्योगों की सामाजिक जिम्मेदारी' (Corporate Social Responsibility) के अन्तर्गत भारत में अभी हर उद्योग की जिम्मेदारी है कि वह अपनें मुनाफा में 2 प्रतिशत समाज विकास के लिए खर्च करे। कई संजाल (Network) विकसित करने की जरूरत है जिसके द्वारा सरकार, उद्योग, स्वैच्छिक संस्थान, नवाचार केन्द्र, तकनीकी केन्द्र, सामाजिक उद्यमी सब सामंजस्य से काम कर पायेंगे और उक्त फंड का सही उपयोग कर पायेंगे।
- सामाजिक व्यवसाय (Social Business),जिसको हमनें सेल्को जैसे भारतीय कम्पनियों के माध्यम से विस्तार से समझाने की कोशिश की, असल में लाखों संख्या में इस देश में फैल सकते हैं। इनके लिए एम. एस.एम.ई. मंत्रालय द्वारा संसाधन सहायता (Resource support) करके उपलब्ध करायी जाती है। इसमें उत्पादन से ज्यादा महत्वपूर्ण है सेवायें – क्योकि कई ग्रामीण इलाकों में काफी सेवाओं की माँग है

(शिक्षा,स्वास्थ, ऐग्रो इनपुट, मार्केट लिंक, वयस्कों की देखभाल......) परन्तु उचित वितरण व्यवस्था नहीं है।

- कुल मिलाकर जो भी गतिविधि जिसके द्वारा 'आर्थिक रूप से स्वावलम्बी सामुदायिक नेता' (SECA: Self Employed Change Agent) खडा किया जा सकेगा उसी से हमारा मतलब है।

NOTES

भारत के सामाजिक उद्यमों के कुछ उदाहरण

भारत के कुछ उद्योगों द्वारा (जैसे–टाटा, विप्रो..........) समाज के लिए उपयोगी शैक्षिक संस्थान, अनुसंधान केन्द्र आदि विकसित किये गए हैं। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि भारत के सर्वश्रेष्ठ शिक्षा एवं शोध केंन्द्र इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बैंगलूरू स्वामी विवेकानन्द की प्रेरणा से, जे.आर.डी टाटा द्वारा की गई। विप्रो ने पिछडे इलाकों के शैक्षणिक गुणवत्ता सुधारने के उद्देश्य से 'अज़ीम प्रेमजी' विश्वविद्यालय का निर्माण किया है। उद्योग एवं सेवा की दिशा में भारत में कई सुन्दर उदाहरणों में विश्वस्तर पर अपना आदर्श खडा किया है। आइये आपके लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत करें :

डॉ. जी. वेकटस्वामी द्वारा निर्मित अरविन्द नेत्र चिकित्सालय

महर्षि अरबिन्दो से प्रेरणा लेकर डॉ जी वेंकटस्वामी ने दुनिया के एक सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक उद्यम को 1976 में मदुराई में स्थापित किया। इसका नाम था अरविन्द आई हॉस्पीटल (Arvind Eye Hospital)। उद्देश्य तो यह था कि नेत्र चिकित्सा संबंधित अद्यतन तकनीकों की सुविधा सब को मिलना चाहिए भले ही वह निर्धन हो। उन्होंने इस लक्ष्य को पाने के लिए विभिन्न प्रबंधकीय सोच को अपनाया। शुरू में जब वह 11 बिस्तर का अस्पताल चलाना चाह रहे थे कोई बैंक उनकी मदद के लिए आगे नहीं आया। डॉ वेंकटस्वामी ने तब भी 6 बिस्तरों को निर्धन रोगियों के लिए रखा और चिकित्सा में आनेवाले खर्च को दो युक्तियों से संभाला। यद्यपि उनका लक्ष्य सबसे सस्ता उपचार मुहैया कराना था फिर भी धनी लोगो से ज़रा ज्यादा वसूल करना भी गलत नहीं था क्योंकि उसके द्वारा गरीबों के लिए मुफ्त उपचार सम्भव हो जायेगा। दूसरी ओर से उनका खर्च कम होने के दो कारण थे। एक तो उनके अस्पताल में उत्पादकता (productivity) को ज्यादा करने के तरीके अपनाये गए। दूसरी ओर से चिकित्सक लोग लालची नहीं थे और सेवा भाव से भरे हुये थे।

अरविन्द नेत्र चिकित्सालय द्वारा कुछ उद्योग लगाये गए जिससे उपचार से संबंधित लेंस इत्यादि उच्चतम गुणवत्ता में और कम लागत में उपलब्ध होने लगे।

NOTES

अरविन्द नेत्र चिकित्सालय की शाखाएं अनेक शहरों में फैलने लगा। और आज की स्थिति में इस अस्पताल में 3000 से ज्यादा बिस्तर हैं। कलकत्ता जैसे शहरो में बनी शाखाओं में जो बिस्तर हैं उनको इसमें समाहित नहीं किया गया है।

अरविन्द नेत्र चिकित्सालय द्वारा पिछले 38 साल में 320 लाख रोगियों का उपचार हुआ है और 40 लाख नेत्रों कीं सर्जरी हो चुकी है। सामाजिक उद्यमियो के लिए अरविन्द अस्पताल को व्यावसायिक ढंग से चलाने वाला GOVEL Trust एक प्रेरणा बन चुका है।

		
चित्र **3.79** जी वेंकटस्वामी	Arvind Eye Care Hospital, Madurai	Arvind Eye Care-lens Factory

सेल्को (SELCO) : सौर उर्जा को गरीबों के विकास से जोड़ने वाला एक उद्यम

		
चित्र **3.80** हरीश हंडे	नये सोलर लाइट से दोनो हाथ काम में	रेशम कीड़े पालन में सोलर लाईट

बैंगलूरु के हरीश हंडे ने सौर उर्जा के द्वारा गरीबों के आजीविका के लिये संघर्ष में राहत लाना चाहा। निम्न दो उदाहरण उनकी चिन्ता एवं निदान को समझने के लिए पर्याप्त हैं।

NOTES

1. फूल तोडने के लिए सुबह तीन बजे काम शुरू करने वाली महिलाओं को एक हाथ में लालटेन पकडना पडता है अतः एक ही हाथ से काम कर सकते हैं। हंडे ने सिर में बांधने वाली ऐसे एलईडी (LED) बल्ब वाले लाईट बना दी– जिसके कारण दोनो हाथों को काम में लगा सकते हैं।

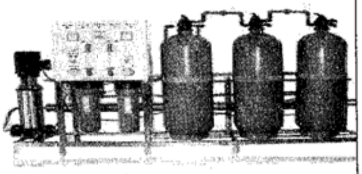
2. कर्नाटक में रेशमी कीटों की देखभाल करने वाली महिलाओं को केरोसीन की लालटेन लेकर जाना पडता था। एक भी बूंद कैरोसीन गिरने से काफी कीट मर जाते । हंडे द्वारा कम दाम में दी गई सोलर लाईट से यह समस्या दूर हो गई।

परन्तु इस प्रकार के कम दाम में सोलर वस्तुओं को बाजार में लाना एक चुनौती भरा संघर्ष था जिसमें शुरू में इनको 75 लाख रू के नुकसान का भी सामना करना पडा। अब उनके नवाचार एवं अथक परिश्रमों के कारण चित्र बदल चुका है और 'सेलको' सामाजिक उद्यमों/व्यवसायों के बीच एक आदर्श बन गया है।

सामाजिक व्यवसाय में भारत के कुछ अन्य उदाहरण

निम्न उदाहरणों से आपको हिन्दुस्तान में समाजिक व्यवसाय के क्षेत्र में उभरती परिस्थिति की एक झलक मिलेगी। ज्यादा विवरण के लिए पाठक को वेब साइट पर जाना पडेगा।

चित्र 3.81 सामाजिक व्यवसायों का कुछ भारतीय उदाहरण

क्र.	कम्पनी/उत्पाद	चित्र	अन्य विवरण
1.	TATA / swach		कम दाम में शुद्ध जल देने वाला यंत्र (search tata swach in google)
2.	ION EXCHANGE/water purifier		आजकल IRCTC द्वारा रेल्वेस्टेशन पर लगाये गये। प्रति लिटर पानी रू 3 (search ionexchange in google)
3.	JAYAASHREE INDUSTRIES/ sanitary napkin		कम दाम में उच्च स्तर के सेनिटरी नैपकिन (search jayaashree in google)

NOTES

4.	RIDE App/ (Jayaman Pandya)		रिक्शा, टैक्सी एवं कार पूलिंग करने के लिए मोबाइल ऐप
5.	GREEN BUG (Vasundhra Vedula & Deepika Rao)		शहरी युवक चीजों को बेकार फेंक कर बरबाद न करें इसके लिए सेल्स साइट
6	Threads of Freedom (Pritam Raja)		सेक्स कर्मचारियों को रिटेल मार्केटिंग में अवसर दिला के उनको व्यभिचार से बचाना।
4,5,6 से संबंधित और जानने के लिए — http://www.unltdindia.org/investees			

हमने जाना

- समुदाय के किसी सदस्य द्वारा स्वप्रेरणा या किसी बाह्य प्रेरणा से आगे आकर 'समुदाय का समुदाय के द्वारा तथा समुदाय के विकास के लिए' योजनाबद्ध प्रयास करना सामुदायिक नेतृत्व है।
- उद्यमी ऐसे लोग होते हैं, जो किसी व्यावसायिक चुनौती को चिन्हित करके अपने हाथों में उठाते हैं तथा उसकी सफलता के लिए अथक प्रयत्न करते हैं और उसे सफलता की ओर ले जाते हैं।
- साधारण उद्यमी जहाँ खुद के आर्थिक लाभ के लक्ष्य से प्रेरित होते हैं वहीं पर सामाजिक उद्यमी की नजर समाज के लाभ के ऊपर रहती है।
- कार्यशैली मे सामाजिक उद्यमी भी आर्थिक उद्यमी की भांति सृजनात्मकता, निरन्तर प्रयत्न, और जोखिम उठाने की प्रथा रखते हैं और वांछित मूल्यों (–प्रतिष्ठा, आत्मसंतुष्ठि, नेतृत्व का अवसर,सेवा और त्याग का अवसर इत्यादि) को प्राप्त करते हैं।

- सामाजिक व्यवसाय (Social Business) में आर्थिक लाभ हो या न हो परन्तु कुछ न कुछ सामाजिक लाभ (लोकहित) समाहित होता है। यह सिद्धांत मोहम्मद यूनुस की प्रेरणा से काफी हद तक आगे बढ चुका है। भारत में भी यह धारणा सही दिशा में उभर रही है।

NOTES

- सामाजिक उद्यमी एवं सामाजिक व्यवसाय वालों को हमारे देश में पर्याप्त संख्या में सही प्रशिक्षण के द्वारा उनकी क्षमता को बढ़ाकर तैयार किए जाने से सामुदायिक नेता सामाजिक उद्यमी बनने हेतु उपलब्ध हो सकते हैं।

- उद्योगों की सामाजिक जिम्मेदारी' (Corporate Social Responsibility) के अन्तर्गत भारत में अभी हर उद्योग की जिम्मेदारी है कि वह अपनें मुनाफा में 2 प्रतिशत समाज विकास के लिए खर्च करे।

कठिन शब्दो के अर्थ :

- **उद्यमी** : किसी व्यवसाय को खडा करने वाला व्यक्ति जिसके पास तीन गुण होते हैं: अथक परिश्रम; नवाचार (नये युक्तियों को उपयोग करके समस्याओं का समाधान ढूंढना) एवं जोखिम उठाने की शक्ति (याने प्रयत्न विफल होने की सम्भावना भी हो तब भी प्रयत्न को जारी रखना)।

- **सामाजिक उद्यमी** : उद्यमी जिसका लक्ष्य मात्र मुनाफा कमाना न होकर समाज विकास एवं उसके द्वारा अपने को मिलने वाली संतुष्टि, कीर्ति आदि का ख्याल करने वाले ; समाज के अलावा पर्यावरण इत्यादि क्षेत्रों में भी इनकी रूचि होती है। कुल मिलाकर सामाजिक उद्यमी एक मूल्य की खोज में है– परन्तु वह मात्र डॉलर मूल्य न होकर सामाजिक विकास से संबंधित कई गैर–डॉलर मूल्यों को भी अपने अंदर समाहित करता है।

- **सामाजिक व्यवसाय** : 'सामाजिक उद्यमी' सिद्धांत का यह एक विशेष अंग माना जाता है। सामाजिक व्यवसाय बाजारी उद्यम के रूप में काम तो करता है लेकिन उस उद्यम से संबंधित उत्पाद या उस उद्यम से मिलनेवाली सेवा से कठिन सामाजिक समस्याओं को भी हल करता है। व्यवसाय की स्थिरता के लिए कठिन परिश्रम और नवाचार की जरूरत होती है। इसमें लाभ पर जोर न होकर "न लाभ न धनी" पर जोर होता है।

NOTES

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. उद्यमी और सामाजिक उद्यमी के बीच में क्या अंतर है ?
2. सामाजिक उद्यम एवं सामाजिक व्यवसाय के बीच में क्या अंतर है ?
3. इस अनुभाग में आये हुए सामाजिक उद्यमियों को प्रेरित करने वाले मूल्य क्या थे ?

   उन्होने क्या–क्या नवाचार किये ? किस तरह के जोखिम उठाये ?
4. सामाजिक कार्यकर्ता किन उपायों से अपनी आर्थिक समस्या का हल ढूंढ सकतें हैं ?
5. Fig 3.4.5.2.a, Fig 3.4.5.2.b & Box 3.4.5.2.c इनमें आने वाले उद्यम
   - किस प्रकार से समाजिक हैं ?
   - इनको लागू करने में क्या–क्या जोखिम उठाना पड सकता है, किन नवाचारों को अपना कर समस्याओं को हल कर सकते हैं।
6. हर उदाहरण के बारे में
   - अधिक सूचना वेब साइट द्वारा हासिल करें और अपने नोट बुक में लिखें।
   - इस प्रकार के और भी कुछ उदाहरण ढूंढे और सूचीबद्ध करें।
   - अपने प्रदेश के कुछ ऐसे नेताओं के उदाहरण को भी अपनी कापी में लिखें।
7. क्या आपके क्षेत्र में कोई समस्या है जिसको लेकर आप कुछ प्रयत्न कर सकते हैं ?

अधिक जानकारी के लिए संदर्भ सूत्र

1. उक्त विषयों के बारे में किताबों से सुचना पाना ज्यादा मुश्किल है अतः वेब साइट में ढूंढ के सूचनायें इक्ट्ठा करें। हर उपभाग में वेब से संबंधित सूचनायें दी गई हैं।

2. सामाजिक उद्यमियों के बारे में ज्यादा जानने के लिए : कुछ पुरूस्कारों के विजेताओं को सूचिबद्ध करने से आपका काम शुरू हो सकता है जैसे :– Right livelihood award

- Magasasay award

- Jamnalal award etc.

इसी प्रकार Ashoka Foundation Fellows की भी सूची बनायें और विचार करें कि कौन से लोग सामाजिक उद्यमी हैं और क्यों ?

3. निम्नंलिखित किताबों को पढें।

(a) Prophets of New India - 20 stories of extraordinary people Penguin Books-2004

(b) Bapu Kuti - Life Journies in re-discovery of Gandhi by Rajni Bakshi, Penguin Books, 2000

(c) Wardha ki Gandhi Ganga - Kanakmal Gandhi by- Sarvseva Sangh Publications, (2013) Wardha

■■■

NOTES

NOTES

3.5 : सामुदायिक नेतृत्व एवं परिवर्तन : अनुकरणीय उदाहरण (Community Leadership and Change : Examples)

सामुदायिक नेतृत्व से तथा जनसहभागिता से अनेक असम्भव कार्यों को सम्भव किया गया है। इस इकाई में इस प्रकार के कुछ अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं, जिन्होंने सामाजिक समस्याओं एवं समाज की आवश्यकतानुरूप विकास को गति प्रदान करने के लिए नेतृत्व देकर लक्ष्य की प्राप्ति की है।

3.5.1 *सामाजिक भेदभाव के प्रति समता की आवाज –महात्मा अय्यंकाली*



चित्र **3.82** **महात्मा अय्यंकाली**

(जिनका संदेश है – कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी नवाचार के प्रयास से सामाजिक परिवर्तन संभव है)

यह कहानी दक्षिणी त्रावणकोर राज्य, जो आज केरल का दक्षिण भाग है, से संबंधित है। आज से करीब सवा सौ साल पहले की बात है। उस समय यह राज्य अस्पृश्यता जैसी अनेक कुप्रथाओं से इतना पीड़ित था कि स्वामी विवेकानन्द को इस भू–भाग को एक पागलखाना की संज्ञा देनी पड़ी।

महात्मा अय्यंकाली ''पुलया'' जाति में 1863 में जन्मे थे। केरल के उस राज्य की मान्यता के अनुसार इस जाति के लोगों का उच्च जाति के सामने दिखना भी वर्जित था। इस जाति को चार वर्णों– ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र से भी परे अन्त्यज जाति में रखा गया था। इस जाति के लोग यदि सार्वजनिक मार्ग पर चलते हुए दिख जायें तो उन्हें जान से मारा जा सकता था तथा मारने वाले के खिलाफ कोई भी कार्यवाही राज्य के द्वारा नहीं किए जाने का भी प्रावधान था।

सबसे दुखद एवं शर्मनाक नियम यह था कि ''पुलया'' जाति की स्त्रियाँ कमर के ऊपर कोई भी वस्त्र धारण नहीं कर सकती थीं। इसके अलावा उन्हें इस निम्न जाति के होने के संकेत देने के लिए अपने गले में एक पत्थरों की

माला भी पहननी पड़ती थी। इस जाति के बच्चे न तो किसी विद्यालय में शिक्षा के लिए जा सकते थे और न ही उनके सवर्णो के जैसे अच्छे–अच्छे नाम हो सकते थे।

NOTES

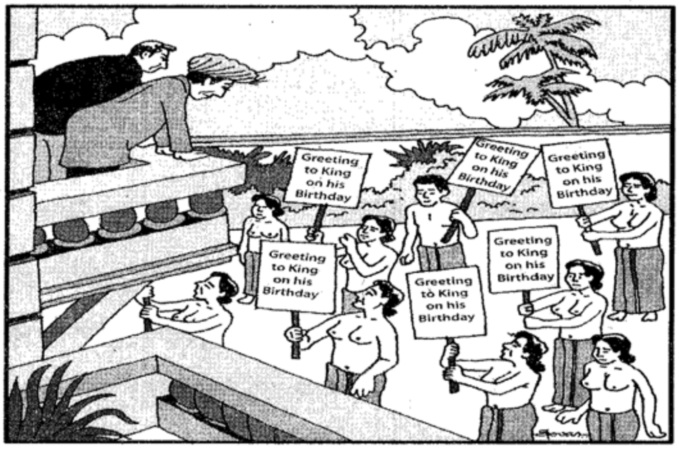
इस जाति के पुरूष एवं महिलाओं को बहुत कम मजदूरी पर दिन भर बिना किसी साप्ताहिक अवकाश के काम करना पड़ता था।

इस जाति की दुर्दशा से दुःखी होकर युवक अय्यंकाली ने इस जाति को उस अभिशाप से मुक्त कराने का प्रण लिया। इसके लिए उन्होंने सबसे पहले आनी जाति के सैकड़ो युवकों को कुश्ती एवं मल्लयुद्ध इत्यादि का कठोर प्रशिक्षण दिया। इस प्रकार कुशल लड़ाके तैयार हो चुके थे।

सामाजिक कुप्रथा निवारण की दिशा में उन्होंने जो पहला कदम उठाया वह अत्यन्त रोचक है। वे एक सुसज्जित बैलगाड़ी जिस पर सिर्फ उच्च जातियाँ बैठ सकती थीं, जान की बाजी लगाकर खड़े होकर राज्य के सार्वजनिक मार्ग पर चल पड़े। उन्हें यह अंदाज पहले से ही था कि इस कदम के विरोध में उच्च जाति के लोग उन्हें जान से मारने के लिए आएंगे। अतः अय्यंकाली ने पहले से चिन्हित ऐसे स्थानों पर अपने प्रशिक्षित लड़ाकों को छिपा कर बिठा दिया था। जैसा अनुमान था वही हुआ। जब उस स्थान से वह बैलगाड़ी गुजरी तो उन पर जानलेवा हमला किया गया किन्तु पहले से ही छिपे उनके प्रशिक्षित साथियों ने विरोधियों को बुरी तरह से पीटकर भगा दिया। इससे इनके समूह के सदस्यों के साथ ही इनके उत्साह की वृद्धि हुई।

अय्यंकाली ने अपने समुदाय के स्वाभिमान की रक्षा के लिए गांधीजी से पूर्व ही एक अहिंसात्मक सत्याग्रह का उदाहरण पेश किया। इस जाति के लोगों को बिना अवकाश दिए दिनभर कठिन कार्य लिया जाता था। इन्होंने उचित मजदूरी, सप्ताह में एक दिन का अवकाश तथा कार्य के दौरान बीच में कुछ समय के आराम की माँग रखी। माँगें न माने जाने के कारण खेतों पर कार्य करना बंद कर दिया गया। पहले तो जमींदारो ने स्वयं कार्य करना चाहा किंतु वे कर नहीं पाये अंततः उन्हें झुकना पड़ा तथा तीनों माँगें मान ली गयीं।

NOTES



चित्र **3.83** महाराज ! दीर्घ आयु हों बैनर वाले पुलैया जाति के लोगों को श्रीमूलम् राजा पहली बार देखते हैं।

उस समय त्रावणकोर में 'श्रीमूलम' नाम के राजा का शासन था। एक बार राजा का जन्मदिन बड़े धूमधाम से पूरे राज्य में मनाया जा रहा था। अय्यंकाली ने अपने समुदाय के हजारों लोगों को राजमार्ग की पुलियाओं के नीचे रात में ही छिपा दिया। उनके द्वारा पहले से ही एक बैनर तैयार कराया गया था, जिस पर लिखा था कि ''महाराज दीर्घायु हों, महाराज को जन्मदिन की बधाइयाँ।'' सूर्योदय होते ही समस्त छिपे हुए लोग बैनर लेकर पुलिया से बाहर निकले तथा राजमार्ग की तरफ चलने लगे। वैनर पर लिखे नारे के कारण अब उनपर कोई आक्रमण नहीं कर सकता था। इतनी बड़ी भीड़ पर सामंतो द्वारा नियंत्रण करना भी कठिन था। राजा की उनपर नजर पड़ी। उन्होने मंत्री से पूछा–ये काले–कलूटे लोग कौन हैं ? इन्हें मैने इसके पहले कभी नहीं देखा। मंत्री ने इनके बारे में विस्तार से बताया तथा कहा कि सार्वजनिक मार्गों पर चलने के प्रतिबंध के चलते इन पर आपकी दृष्टि कभी नहीं पड़ी। उन्होंने पूरी घटना को जानकर ''श्रीमूलम विधानसभा'' का गठन किया तथा अय्यंकाली को इसका एक सदस्य बनाया।



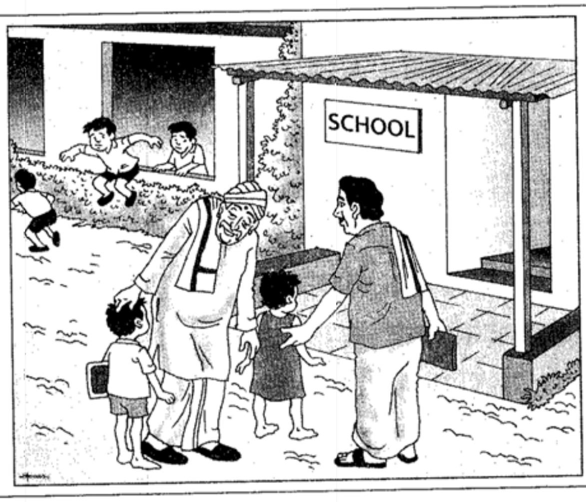
चित्र **3.84** पत्थर की माला आगे से नहीं पहलेंगे।

इसी प्रकार अय्यंकाली का सविनय अवज्ञा का उदाहरण भी प्रसिद्ध है। जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि इस जाति की महिलाओं को गले में पत्थरों की माला

NOTES

पहनने का नियम था। अय्यंकाली ने इस नियम को तोड़ने की योजना बनाई। एक दिन जब मंच पर राज्य के वरिष्ठ सचिव बैठे हुए थे, उसी समय हजारों पुलया महिलायें प्रविष्ट हुई। उनमें से सबसे पहले दो महिलायें आगे आईं और अपने पत्थरों की माला को तोड़कर मंच पर फेंक दिया तथा भविष्य में इसे न पहनने की कसम खाई। इसके बाद एक–एक करके सारी महिलाओं ने भी ऐसा ही किया। मंच के सामने पत्थरों की पहाड़ी बन गई । इस प्रकार पत्थर की माला पहनने का नियम समाप्त हो गया।

पुलया बच्चे भी शालाओं में पढ़ सकते हैं– इस प्रकार का आदेश अय्यंकाली ने सरकार द्वारा निकलवाया। इसे शुरू करने के लिये एक शाला एवं शिक्षक को भी चिन्हित किया गया। परंतु जब नये छात्रों ने शिक्षक के साथ विद्यालय के भवन में प्रवेश किया तो देखा कि पुराने छात्र खिड़कियों से कूद कर बाहर जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में विरोध को देखते हुए अय्यंकाली खुद एक अलग शाला का निर्माण किया तो उच्च जातिवालों ने उसको जला दिया। बार–बार जब शालाओं पर आग लगी तो अय्यंकाली ने अपने लोगों को कला सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा शिक्षा देना शुरू किया। जबकि 1900 में ही सार्वजनिक रास्ते में चलने के अधिकार को पुलया लोगों ने प्राप्त किया– शिक्षा और महिलाओं के मामले में 1914 तक लड़ना पड़ा। इसके लिये 1907 में अय्यंकाली ने "Sadhujana Paripalana Sangam" को स्थापित किया। ''साधु'' का मतलब स्थानीय भाषा में ''गरीब'' होता है। 1937 में जब गांधी जी केरल गये तो इनकी भरपूर तारीफ की। 1980 में श्रीमती इंदिरा गांधी ने अय्यंकाली की गंभीर मूर्ति को तिरूवंतपुरम कैरियर चौक में उद्घाटन किया, जहाँ पुलया को अस्पृश्य मानने वाले लोग मात्र रहते थे। ''महात्मा अय्यंकाली'' समाज सुधारकों के प्रेरणा के स्रोत बन चुके हैं।



चित्र **3.85** पुलया बच्चों का शाला प्रवेश, अन्य उच्च जाति बच्चे खिडकी द्वारा बाहर भाग रहें है।

NOTES



चित्र **3.86** तमिलनाडू के तंजाउर में एक पूरे गाँव के दलित जलाये गये। जब कुछ माताओं ने अपने बच्चों को बचाने के लिए बाहर फेंका तो उच्च जात वालों ने उन बच्चों को काट कर आग में ही डाल दिया।

3.5.2 *समता और सम्मान की मिसाल : कृष्णम्मा*

वैकल्पिक नोबल पुरस्कार विजेता कृष्णम्मा जगनाथन की कहानी अत्यंत प्रेरणा देने वाली है। मदुरै के पास वाले एक दलित परिवार की बालिका एक दिन खेत में मजदूरी करने वाली पिताजी के लिए कलेवा में माड़ (चावल से निकला) ले जा रही थी, वह जमीन पर गिर गया। भूखे पिताजी ने बच्ची को इतना मारा कि वह घर से भाग करके गांधीग्राम की संस्थापक श्रीमति सौन्दरम् की शरण में आ गई। बड़े होने पर विनोबाजी के भूदान कार्यकर्ता जगन्नाथन से उनका अंतरजातीय विवाह हो गया।

1971 में तंजाऊर (तमिलनाडु) के कीलवेण्मणि गाँव में एक नरसंहार हुआ। इस नरसंहार में गाँव के दलित लोग इसलिए जला दिये गये, क्योंकि उन्होंने मजदूरी बढ़ाने की माँग की। कृष्णम्मा और उसके पति उस गाँव में "जोतने वालों का होगा खेत" (LAFTI: Land For the Tillers) नामक संस्थान बनाई और निरंतर संघर्ष करते रहे तथा सामंतवाद के अत्याचारों को सहते हुये लाखों दलितों के मसीहा बन गये। उनका सपना "हर दलित परिवार को जमीन दिलाना और सम्मानजनक बसाहट (आवास) की व्यवस्था करना" था।

NOTES



चित्र **3.87**

उनके प्रयासों से आज तक दस हजार से ज्यादा दलित परिवार अपने ही खेत में काम करने लगे हैं तथा दो हजार से ज्यादा परिवार कृष्णम्मा के नेतृत्व में निर्मित सुविधाजनक घरों में रह रहे हैं। उनका सपना है कि अपने जीते–जी 5000 से 10000 परिवारों को घर दिलाना।

परंतु जमीन कैसे दें? वह तो जमीनदारों के कब्जे में है और कुछ मंदिर मठों के अधीन है। पहले उन्होनें मंदिरों के विरूद्ध आंदोलन शुरू करके जमीन हासिल की। असल में इस कला को उन्होने बिहार में विनोबाजी के साथ भूदान आंदोलन करते समय एक मंदिर के पुजारियों द्वारा महिला–विरूद्ध अत्याचारों का अंत करने के लिये किये गये अपने आंदोलन से ही सीखा। वहाँ करीब दस हजार एकड़ जमीन को दलितों के लिए दिलवाया।

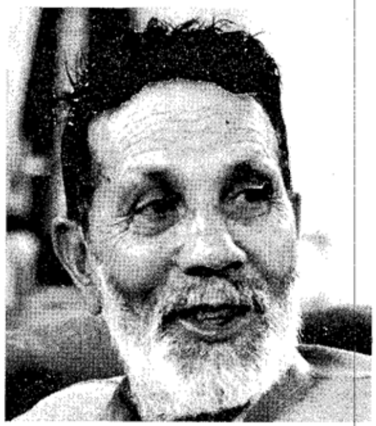
कृष्णम्मा और जगन्नाथन के संघर्ष के आधार पर 1990 के करीब उच्च न्यायालय ने Prawn Ponds पर रोक लगाने के आदेश निकाला। जगन्नाथन 100 साल के उम्र में 1913 में स्वर्ग सिधारे। संघर्ष को कृष्णम्मा आज भी आगे बढ़ा रही हैं।

3.5.3 *पर्यावरण के पहरुए : चंडी प्रसाद भट्‌ट और सुन्दरलाल बहुगुणा*

23 जून 1934 में जन्मे चंडी प्रसाद भट्‌ट मूलरूप से गांधीवादी और पर्यावरणवादी चिंतक हैं, जिन्होंने अपने प्रयासों से पर्यावरण संरक्षण की मिसाल कायम की। उनके साथ उनके सहयोगी सुन्दरलाल बहुगुणा ने मिलकर सरकार को पूरे देश में पर्यावरण के प्रति चेतना विकसित करने के लिए प्रेरित और अपनी नीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए बाध्य किया।

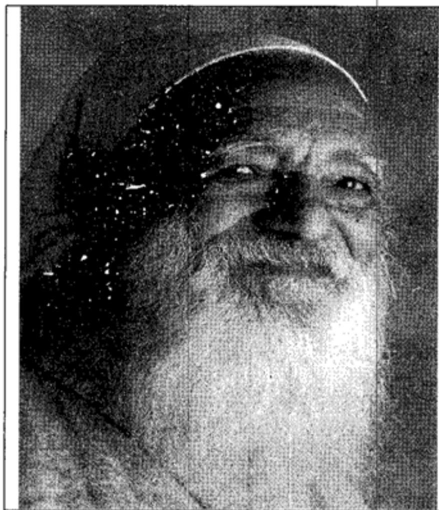
NOTES

स्वतंत्रता के बाद भारत ने विकास का जो मॉडल अपनाया था, वह पश्चिमी देशों से लिया गया था। देश में इस बात की बहस चलती रही कि विकास का मॉडल हमारी जरूरतों के मुताबिक स्वदेशी हो या बने–बनाये हल के रूप में विदेशी। सरकारें इस वैचारिक संघर्ष के बीच में काम करती रहीं। विकास के नाम पर और बड़े बांध और उद्योगों को स्थापित करने के नाम पर बड़े पैमाने पर जैव–विविधता को हानि पहुँची। बाद में सतत् विकास की अवधारणा के रूप में सभी ने इस बात को स्वीकार किया कि विकास के लिए संसाधनों का उपयोग तो हो किन्तु इस रूप में कि, आने वाली पीढ़ियों को प्राकृतिक संसाधनों के विनाश के मूल में बैठकर अपनी जीवन–यात्रा प्रारम्भ न करनी पड़े। चंडी प्रसाद भट्ट एक सम्भ्रान्त परिवार से थे। बाद में उन्होंने अपने गाँव में रोजगार सृजन के लिए लोगों को वन उत्पादों पर आश्रित रहने के लिए वनोपज बढ़ाने का संदेश दिया। वन उत्पाद (फोरेस्ट प्रोडयूज) देने वाले वृक्षों को लगाने का



चित्र **3.88** चंडी प्रसाद भट्ट

उनका यह प्रयास बहुत सफल हुआ और लोगों की आय भी बढ़ी, लेकिन बड़े उद्योगों और बांधों के कारण वन–सम्पदा पर असर पड़ने लगा। भट्ट और बहुगुणा ने लोगों को संगठित किया और वृक्षों को बचाने के लिए उनसे चिपककर उनकी रक्षा करने का मूलमंत्र दिया। भारत का यह चिपको आंदोलन बहुत सफल हुआ। जिसने पूरे देश में विद्वानों, प्रशासकों, नीति निर्माताओं और मीडिया का ध्यान हमारे वनों के संरक्षण और जैव–विविधता के पोषण पर केन्द्रित किया। सरकार हरकत में आयी और पर्यावरण को होनेवाली क्षति को कम करने के लिए योजनाओं में संशोधन किया गया। समाज और सरकार को सामाजिक सहभागिता से चंडी प्रसाद भट्ट और सुन्दरलाल बहुगुणा ने पर्यावरण संरक्षण



चित्र **3.89** सुन्दरलाल बहुगुणा

की जो शिक्षा दी वह बहुत सी किताबें पढ़कर लाना मुश्किल है। अपने अभूतपूर्व योगदान के लिए चंडी प्रसाद भट्ट को सामुदायिक नेतृत्व (कम्यूनिटी लीडरशिप) के लिए रेमन मैगसेसे पुरस्कार तथा पद्मश्री, पद्मभूषण और गांधी पीस प्राइस से सम्मानित किया गया। बड़ी बांध परियोजनाओं का विरोध कर उन्होंने पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को सबके सामने रखा और समाज और सरकार को इस दिशा में और अधिक संवेदनशीलता और व्यापकता से विचार और कार्य करने का संदेश दिया।

NOTES

3.5.4 सूचना का अधिकार, हक का हथियार –अरुणा राय एवं बंकर राय

हमें जानने का हक है

अरुणा राय का जन्म 26 जून 1946 को हुआ है। उन्हें भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में हम सब जानते हैं। उन्होंने अपने पति संजीत बंकर राय के साथ मिलकर भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए सूचना के अधिकार को अपना हथियार बनाया। लोगों को संगठित किया। संघर्ष किया और देश में 2 अक्टूबर 2005 से सूचना के अधिकार अधिनियम को प्रभावी रूप से लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।


चित्र **3.90** अरुणा राय

भारत एक लोकतांत्रित गणतंत्र है। यहाँ अप्रत्यक्ष प्रजातंत्र है अर्थात लोग सीधे नहीं, बल्कि लोगों के प्रतिनिधि विभिन्न स्तरों पर सत्ता का संचालन करते हैं। केन्द्रीय स्तर पर सरकार के तीन अंग हैं– कार्यपालिका, न्यायपालिक एवं व्यवस्थापिका। न्यायपालिका यानि की कोर्ट कचेहरी अपना सारा काम लिख–पढ़कर करती है, जिसे कोई भी कभी भी देख सकता है। व्यवस्थापिका यानि हमारी संसद के सदन भी अपनी पूरी कार्यवाही लिखकर जनता के सामने प्रस्तुत करते हैं। किन्तु हमारा तीसरा अंग कार्यपालिका


चित्र **3.91** बंकर राय

NOTES

यानि सरकारी अफसर एवं बाबू अंग्रेजों के जमाने के एक अधिनियम (शासकीय गुप्त बात अधिनियम) का सहारा लेकर लोगों को जानकारी देने से मना करते थे। इसकी आड़ में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार पनपता और फलता–फूलता था।

अरुणा राय और बंकर राय ने इस समस्या को समझा। उन्होंने विचार किया कि जबतक भारत के हर नागरिक को जानने का अधिकार नहीं होगा, तबतक हमारी प्रजातांत्रित स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं होगा। उनके विचार का बहुत विरोध हुआ, किन्तु उन्होंने मजदूर किसान शक्ति संगठन नाम के अपने संगठन के बल पर लोगों की सहभागिता प्राप्त की और सरकार पर सूचना का अधिकार अधिनियम बनाने का दबाव डाला। अरुणा और बंकर राय के प्रयासों तथा बड़े पैमाने पर जनता और स्वयं सेवी संगठनों के सहयोग से यह सपना साकार हुआ। आज सूचना का अधिकार हर भारतीय के पास भ्रष्टाचार के विरूद्ध लड़ने का एक सशक्त हथियार है।

3.5.5 प्रेम की प्रतिमूर्ति : संत मदर टेरेसा

पीड़ित मानवता की सेवा ही ईश्वर सेवा है

करुणा और सेवा की साकार मूर्ति मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त 1910 को यूगोस्लाविया में हुआ। वे 1929 में यूगोस्लाविया से भारत आईं और कोलकता को केन्द्र मानकर अपनी गतिविधियाँ शुरू की। जिस आत्मीयता से उन्होंने भारत के दीन–दुखियों की सेवा की उसके लिए देश सदैव उनका ऋणी रहेगा। दीन–दुखियों की सेवा में लिए मदर टेरेसा ने मिशनरीज ऑफ चेरिटी नाम की संस्था की स्थापना की। मानवता की सेवा के लिए उन्हें विश्व के अनेक सम्मान एवं पुरस्कारों से नवाजा गया, जिसमें 1962 में पद्मश्री, 1969 में नोबेल पुरस्कार, 1980 में भारत का सर्वोच्च पुरस्कार भारत रत्न, और 1985 में मेडल ऑफ फ्रीडम प्रमुख हैं।



चित्र **3.92 संत मदर टेरेसा**

NOTES

मदर टेरेसा जब भारत आईं तो उन्होंने यहाँ बेसहारा और विकलांग बच्चों तथा सड़क के किनारे पड़े असहाय रोगियों की दयनीय स्थिति को अपनी आँखों से देखा और फिर वे भारत से मुँह मोड़ने का साहस नहीं कर सकीं। वे यहीं रूक गईं और आजीवन जनसेवा का व्रत लिया, जिसे 5 सितम्बर 1987 को अपनी मृत्युपर्यन्त पूरी निष्ठा से निभाती रहीं। मदर टेरेसा ने भ्रूण हत्या के विरोध में भी सारे विश्व में रोष प्रकट किया तथा समाज में अनाथ, अवैध माने जानी वाली सन्तानों को अपना कर मातृत्व सुख प्रदान किया। उन्होंने फुटपाथों पर पड़े हुए रोते सिसकते रोगी अथवा मरणासन्न असहाय व्यक्तियों को उठाया और अपने सेवा केन्द्रों में उनका उपचार कर स्वस्थ्य बनाया। दुखी मानवता की सेवा ही उनके जीवन का व्रत था।

दीन–दुखियों की गरीबी, उपेक्षितों के प्रति समाज का व्यवहार और रोगियों, अपाहिजों की सेवा किसी भी सभ्य समाज के सामने महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं। हम सब कभी न कभी इसके सम्पर्क में आये हैं और द्रवित भी हुए हैं किन्तु मदर टेरेसा ने एक सच्चे नेतृत्वकर्ता के रूप में इस समस्या को समझा। पीड़ितों की सेवा का संकल्प लेकर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ समाज को भी संवेदनशील बनाया। अपने अभियान में लोगों को साथ जोड़ा। अपने संगठन मिशनरीज ऑफ चेरिटीज के माध्यम से पीड़ितों की सेवा को एक संगठनात्मक स्वरूप प्रदान कर और उसे समाज से अर्थपूर्ण रूप में जोड़कर नवाचार किया। इस नवाचार का व्यवहार में प्रयोग कर पूरे समाज के सामने अपने योगदान से अभियान को सफल बनाया और इस भावना को जन–जन तक पहुँचाया। मदर

टेरेसा का जन्म भारत में भले ही न हुआ हो, लेकिन अपने व्यक्तित्व और कार्यों के कारण वे एक सफल नेतृत्व कर्ता के रूप में करोड़ों भारतवासियों की आदर्श बनकर एक ममतामयी माँ के रूप में सदा हमारे दिलों में रहेंगी।

NOTES

3.5.6 आजीविका के आधार : इला भट्ट


चित्र **3.93** **इला भट्ट**

पूरा देश इला भट्ट को रोजगार सृजन, विशेषकर महिलाओं के रोजगार को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से नेतृत्वकर्ता के रूप में देखता है। उन्होंने 1972 में स्वयंसेवी संस्था 'सेवा' (Self Employed Women Association) की स्थापना कर महिलाओं को संगठित कर स्वरोजगार प्रारम्भ करने और उसकी उचित मार्केटिंग द्वारा अच्छा मूल्य कमाने के विकल्प को प्रस्तुत किया। इला भट्ट भारत की गरीबी विशेषकर महिलाओं की दरिद्रता से पीड़ित और आहत थीं। उन्होंने विचार किया कि महिलाओं को इस दीन–हीन दशा से उबारने का केवल एक ही रास्ता है और वह है रोजगार। भारत जैसे पारंपरिक समाज में महिला रोजगार की चर्चा करना सरल नहीं था। किन्तु उन्होंने दृढ़तापूर्वक गुजरात के गाँवों में ग्रामीण महिलाओं के सामने अपने विचार को रखा और प्रभावी ढंग से रोजगार के नवीन क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूह बनाकर महिलाओं को रोजगार दिलाया। महिलाओं को पूंजी उपलब्ध कराने की दृष्टि से वूमेन्स बैंक की स्थापना की। महिलाओं को समूहों में संगठित किया और मिलकर रोजगार करने की दिशा दी। अपने प्रयासों की व्यापक सफलता से प्रभावित होकर उन्हें कम्युनिटी लीडरशिप के लिए रेमन मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री और पद्मभूषण से नवाजा।

हमने जाना :

NOTES

- इस भाग में दी गई कहानियों में समस्या का स्वरूप, नवाचार और समुदाय को लेकर उसके समाधान के सकल प्रयोगों को बताया गया है।
- नेतृत्व विकास के सैद्धान्तिक ढाचे में हम इस पाठ की वास्तविक कहानियों को वर्गीकृत कर प्रस्तुत कर सकते हैं।

कम	नाम	समस्या	नवाचार	संगठन	पहचान
1.	महात्मा अयंकाली	दलित उत्पीड़न	संगठित विरोध	साधु समाज	महात्मा
2.	कृष्णम्मा	दलित को भूमि और आवास	भूमि पक्के आवास	लाफ्टी	
3.	चंडी प्रसाद भट्ट और सुन्दरलाल बहुगुणा	वन –विनाश	चिपको		
4.	अरूणा राय और बंकर राय	भ्रष्टाचार	सूचना का अधिकार		
5.	मदर टेरेसा	निर्धनता	निर्धन सेवा		
6.	इला भट्ट	बेरोजगारी	महिला रोजगार		

NOTES

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. सही जोड़ी मिलाइये–

कम	सामुदायिक नेतृत्वकर्ताओं के नाम	महत्वपूर्ण योगदान का क्षेत्र
1.	मदर टेरेसा	महिला रोजगार
2.	इला भट्ट	दलित उत्पीड़न से मुक्ति
3.	महात्मा अयंकाली	पर्यावरण संरक्षण
4.	चंडी प्रसाद भट्ट और सुन्दरलाल बहुगुणा	सूचना का अधिकार
5.	अरूणा राय और बंकर राय	निर्धन सेवा

2. इस इकाई में पढ़ी गयी कहानियों के अध्ययन के आधार पर नई जानकारी जुटाकर किन्ही पॉच सामुदायिक नेताओं के नाम लिखकर उनके महत्वपूर्ण योगदान को लिखिए।

3. आपकी दृष्टि में इन समस्याओं के समाधान के उपाय लिखिये।

कम	समस्या का स्वरूप	संभवित समाधान
1.	निरक्षरता	
2.	बेरोजगारी	
3.	भ्रष्टाचार	
4.	जनसंख्या वृद्धि	
5.	पर्यावरण विनाश	

अधिक जानकारी के लिए संदर्भ सूत्र :

NOTES

1. सर्वे सन्तु सुखिनः (भाग–I एवं II) वीडियो में विकास की कहानियाँ इन्टरनेट पर देखें– प्रस्तुति के.एन. गोविन्दाचार्य।

2. इन्टरनेट पर सर्च कर देश–विदेश के सामुदायिक नेतृत्वकर्ताओं की सफल गाथाओं को पढ़िये और उनका संकलन कीजिये।

3. सोशल नेटवर्किंग साइट जैसे– फेसबुक, ट्विटर, ऑर्कुट पर महत्वपूर्ण सामुदायिक नेतृत्वकर्ताओं के कोटेशन संग्रह कीजिये।

■■■

NOTES



मध्य प्रदेश-गान

सुख का दाता सब का साथी शुभ का यह संदेश है,
माँ की गोद, पिता का आश्रय मेरा मध्यप्रदेश है।

विंध्याचल सा भाल नर्मदा का जल जिसके पास है,
यहां ज्ञान विज्ञान कला का लिखा गया इतिहास है।
उर्वर भूमि, सघन वन, रत्न, सम्पदा जहां अशेष है,
स्वर-सौरभ-सुषमा से मंडित मेरा मध्यप्रदेश है।

चंबल की कल-कल से गुंजित कथा तान, बलिदान की,
खजुराहो में कथा कला की, चित्रकूट में राम की।
भीमबैठका आदिकला का पत्थर पर अभिषेक है,
अमृत कुंड अमरकंटक में, ऐसा मध्यप्रदेश है।

क्षिप्रा में अमृत घट छलका मिला कृष्ण को ज्ञान यहां,
महाकाल को तिलक लगाने मिला हमें वरदान यहां,
कविता, न्याय, वीरता, गायन, सब कुछ यहां विशेष है,
हृदय देश का है यह, मै इसका, मेरा मध्यप्रदेश है।

सुख का दाता सब का साथी शुभ का यह संदेश है,
माँ की गोद, पिता का आश्रय मेरा मध्यप्रदेश है।

वन्दे मातरम्

सुजलां, सुफलां, मलयज-शीतलाम्॥
शस्य-श्यामलां, मातरम्। वन्दे मातरम्॥

शुभ्र ज्योत्स्नां पुलकित-यामिनीम्,
फुल्लकुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्,
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदां, वरदां, मातरम्॥ वन्दे मातरम्॥

कोटि-कोटिकंठ कलकल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृतखरकरवाले।
अबला केनो मा एतो बले।
बहुबलधारिणीं, नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणीं मातरम्॥ वन्दे मातरम्॥

तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म
त्वं हि प्राणाः शरीरे।
बाहु ते तुमि मां शक्ति, हृदये तुमि मां भक्ति
तोमारई प्रतिमा गड़ि, मन्दिरे-मन्दिरे मातरम्॥ वन्दे मातरम्॥

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणीं
कमलां कमलदलविहारिणीं
वाणी विद्यादायिनीं, नमामि त्वां, नमामि कमलाम् अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम् .... श्यामलां, सरसां, सुस्मितां, भूषिताम्
धरणीं भरणीं मातरम्॥ वन्दे मातरम्॥

Centre for Community Leadership Development Studies
MAHATMA GANDHI CHITRAKOOT GRAMODAYA VISHWAVIDYALAYA
Chitrakoot, Satna (M.P.) - 485 334
Phone : 07670 - 265622, E-mail : cmcldpcourse@gmail.com
www.cmcldp.org